Title: Further discussion on the Budget (General) for 2007-08; Demands for Grants Nos. 1 to 33, 35, 36, 38 to 61, 63 to 72, 74, 75 and 77 to 104 in respect of Budget (General) for 2007-08 and supplementary Demands for Grants Nos. 1 to 3, 5, 7 to 11, 13 to 16, 18, 19, 21, 23, 24, 26 28 to 33, 35, 38, 39, 41, 42, 45 to 48, 50 to 60, 63, 66, 70, 72, 75, 78, 80 to 87, 89 to 101 and 104 in respect of Budget (General) for 2006-07 (Not concluded).

MR. SPEAKER: Motion moved:

"That the respective sums not exceeding the amounts on Revenue Account and Capital Account shown in the third column of the Order Paper be granted to the President of India, out of the Consolidated Fund of India, on account, for or towards defraying the charges during the year ending the 31st day of March, 2008, in respect of the heads of Demands entered in the second column thereof against Demand Nos. 1 to 33, 35, 36, 38 to 61, 63 to 72, 74, 75 and 77 to 104."

*Moved with the recommendation of the President MR. SPEAKER: Motion moved:

"That the respective supplementary sums not exceeding the amounts on Revenue Account and Capital Account shown in the third column of the Order Paper be granted to the President of India, out of the Consolidated Fund of India, to defray the charges that will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 2007, in respect of the heads of Demands entered in the second column thereof against Demand Nos. 1 to 3, 5, 7 to 11, 13 to 16, 18, 19, 21, 23, 24, 26, 28 to 33, 35, 38, 39, 41, 42, 45 to 48, 50 to 60, 63, 66, 70, 72, 75, 78, 80 to 87, 89 to 101 and 104, "

...(Interruptions)

SHRI SURAVARAM SUDHAKAR REDDY (NALGONDA): Sir, we asked for the 'Zero Hour' yesterday and today also.

MR. SPEAKER: After Six of the Clock, we will allow this.

্কা ক্রিকার ক্রিকার ক্রিকারণ ক্রেকারণ ক্রিকারণ ক্রিকারণ ক্রিকারণ ক্রিকারণ ক্রিকারণ ক্রিকারণ ক্রেকারণ ক্রিকারণ ক্রেকারণ ক্রেকারণ

15.04 hrs.

(Shri Varakala Radhakrishnan in the Chair)

्वस्थान्य पुरस्क कार्य कार कार्य क

ंख्रक्रहंष्ट दंबक्रकः क्षरं क्ष्रक्राक्षकः दंबक्षः १ क्ष्रक्षकः । क्षर्क्षकः व्यक्षकः व्यवक्षक

्यास्त्रक्ष (याज एक्स व्यवस्थायाज एक्सप्रावस्थ्य व्यवः .क्स .क्ष्म .क्षम .क्ष्म .क्ष्म .क्ष्म .क्षम .क्ष्म .क्षम .कष्म .क्षम .कष्म .कष्म

्काग्बर . क प्रमान क्रिका क्रिका प्रमान क्रिका प्रमान क्रिका प्रमान क्रिका प्रमान क्रिका क्र न्त्राहरूक स्वरुक्त के स्वरुक्त हो। विकास स्वरूप स् ः स्वरहानस्वरूगः सः स्वरहः स्वरं स्वरहः स्वरं स्वरहः स ख्यार[ु] पुरुष्कः, राह्यस्थाः क्यार् पुरुष्कः, पुरुष्कः, पुरुष्कः स्थार्थः स्थार्यः स्थार्थः स्थार्यः स्थार्यः स्थार्थः स्थार्थः स्थार्थः स्थार्यः स्थार्यः स्थार्यः स्थार्यः स्थार्यः स्थार्यः स्थार्थः स्थार्यः स्थार्यः स्थार्यः स्थार्यः स्थार्यः स्थार्यः स्थार्यः स्यार्यः स्थार्यः स्थार्यः स्थार्यः स्थार्यः स्थार्यः स्थार्यः स स्वयन्त्रकार प्रस्तिकार प्रस्तिकार प्रस्ति । प्रस् कल्का बाह्यक प्रकार कर 🗆 किया कर बाह्यक प्रकार कर बाह्यक कर बाह्यक प्रकार कर कर बाह्यक प्रकार कर बाह्यक प्र स्त्र स्वस्तिक छन्नः पहन्नः स्वस्त्रः स्वस्त्रः स्वस्त्रः । स्वस्तिकारः स्वस्त्रः । स्वरं स्वस्तिकारः स्वरं ्का क्राकार क्राप्ताकाक क्राप्ताक क्राप्ता क्र ्ब्बक्षराकः , का प्रकारका का प्रकार , का प्रकार , का प्रकार , प्रकारका है , का प्रकार का प्रकार का प्रकार का का प्रकार का का का प्रकार का का प्रकार का प्रक का प्रकार का प्रक का प्रकार का प्रकार का प्रकार का प्रकार का प्रकार का प्रकार का वकः, तन तकः कल्पाकः, कार्काः, कारकः, कारकः, कल्कः क्राक्रः, कारकः क्राक्रः कः, कारकः क्राक्रकः क्राक्रः करः करावकः, वक्षः कारकः, करावकः कार बसकासका स्वारण स्वारण स्वारण स्वारण स्वारण स्वारण स्वरण क्कान्तरा स्वास्त्रका स्वास्त्रका प्रकार का स्वास्त्रक दब्बक त्रक्क न्वयस्थ्यत्व व्यादः । स्वयस्थ्य त्याद्व व्याद्व व्याद क्रमासकी स्वरूप, स्वरू स्त्र व्यवस्थाय व्यवस्थायतः वर्षात्र स्ववस्थायतः वर्षात्र वर वर्षात्र वर्षात कः हः ए रहे विकास स्वाप्त हैं स्वर्ध हे स्वर्ध है स्वर्य है स्वर्य है स्वर्ध है स्वर्ध है स्वर्ध है स्वर्य ्रेस्कः क्रम्बाकात्राक्षकः प्रकार्यायकार्यकार्यकार्यकार्यकार्यकार्यः स्वापनात्रः स्वापनात्रः स्वापनात्रः स्वापना

्कारका सक्यापक्षः सक्कार स्वाप्तः सन् सन्धः सक्यापकः सक्याप्तः सक्यापकः सक्यापकः सक्यापकः सक्यापकः सक्यापकः सक्यापकः सक्यापकः सम्भावः सम्भावः सक्यापकः सक्यापकः सम्भावः सम ्वकारकाकः क्रबह्दव्यकः हम, ज्राकः व्यक्तकः व्यकः र्वव्यकः व्यक्तकः इस्क प्रकारक क्राक्क क्राक्क हमा प्रकार प्रकारक प् क्षकः, क्षाकः क्षाकः का । + इत्यक्ताक्रकः, व्यवकान व्यवकान करान्त्रकः व्यवकान क्षा कार कार्यका कर कार्यका कार कार्यका कर कार्यका कर है। जो पान कार्यका कार्य खार[्] क्रिकार क्रिक प्रकार क्रिक क्रिक क्रिक कर्म क्रिक कर क्रिक कर क्रिक क्रिक क्रिक क्रिक प्रकार क्रिक क्र न्या सामाने हा सामाने सामाने सामाने सामाने सामाने सामानिक सामानिक सामाने सामानिक सामाने सामानिक सामाने सामानिक श्वकः, जन्मकाः क्राप्तमः अवस्रकाकः जनकः काकः विक्रानकाकः व्यवकानकः वर्षकः प्रकारकः नक्षकः काकः । अवस्य वर्षकः वर्षकः वर्षकः वर्षकः वर्षकः । क्षा का सामान के कार है। से कार का सामान का सामान के कार का सामान का सामान के सामान क . क्रिक्स कर . अक्र १९३६ क्रिक क्रिक के एक्स क्रिक के देखा है। के एक्स क्रिक - प्रिक्रकः स्वरः, प्रस्कः करः त्रह्मकाकः स्वरः स्वर कर्मायाः काकावाराः काकावाराः काकावाराः काकावाराः काकावाराः काकावाराः वारावाराः सक्सानिक संकार सक्स जनकार सक्सानिक सक्सान रहे सक्स सक्सानिक प्रकार सक्सानिक र नेस्कर्कः से स्य. काराव्यास्त्रा काराव्यास्य करा कराव्या क्षाक्रार , क्षाक्रमुरक्ष , क्षाक्रक, त्क्षक्र तंक्षक्रतंक्षक्ष हे । इरह , त्काक्ष्य , क्षक्षक ने क्षक्ष क्षिक क्षित्रका क्षाक्षक ने क्षक क्षाक्षक क्षाक क्षाक्षक ने क्षक क्षाक्षक क्षाक्षक क्षाक क्षाक्षक क्षाक क्षाक्षक क्षाक क्षाक क्षाक्षक क्षाक क्षाक्षक क्षाक क्षाक्षक क्षाक क्षाक क्षाक्षक क्षाक क्ष नकः व स्वयन्तः सक्यानानान्त्रा सक्यानानान्त्रा सक्यानान्त्रा सक्यानान्त्र सक्यानान्त्य सक्यानान्त्र सक्यानान्त्र सक्यानान्त्र सक्यानान्त्र सक्यानान क्रिकासकः १३ व्यक्त स्वक्त व्यक्त स्वक्त स्व ख्या हार के कि स्थान के स्थान क पञ्चार के सामान के साम उन्हरमा विकार प्रकार प

. इ.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.
स्कानकार्यक क्षक स्कानकार का उनका का क
. ब्यहरूक १. व्यहरूकक है। व्यक्किक प्रकृत का का का का का का का का प्रकृत का
. इक्कारहा हुक हुन
हथकार्यः अक्षानकार्यः त्रकानकारका एकः नक्षान त्रित्याकार्यः त्रकानकारका एकः नक्षान व्यवस्थानकार्यः त्रकानकार व
. का स्वास्त्रका स्वास्त्र हेका स्वास्त्र अकार अकार स्वास्त्र स्वा
. क्रांक्रप् दर् <i>फाक्रक्का</i> क हक ्रहक हम। इसक्काका . क्रांक क्रांक्रकाका हम, क्रांक्र . क्रांक्रका . क्रांक्रका . क्रांक्रका . क्रांक्रका . क्रांक्रका . क्रांक्रका . क्रांक्र . क्रा
क्कान्सक प्रकार काक प्रमूख दलक . का एक एक प्रकार क्राका प्रकार प्रकार होते प्रकार का प
कारकाकार स्वास्त हर कार्यकार कारकार कारकार कारकार प्रसायकार प्रसाय
\$\$\$\$\$\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\

प्रकारकर दक्क प्रकारका प्रकार प्रकारका कार्य प्रकारका कार्य प्रकार प यस्कः स्काः स्कारकावा गृन्यकः कप्तकः स्कारः स्कारः स्कारः स्वारं स्वारं स्वारं प्रकारकावा 📭 😅 स्वारं स्वरं स्वारं स् ध्वक्रकार हरू एकक एक १+, व्यक्तक्रकार अवश्वक्रकार ध्वन्त एक व्यक्तक प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार है। व्यक्तक वि ्रक्करुक्करुक्करुकक्क ्करक्क ्करक्करुक . क्र टब्क्ररक्करुक व्कर्क .क्रि.(<u>टब्क्यक्करु</u>क व्करक्क व्करक्कर व्करक्कर व्करक्कर व्करक्कर व्करक्कर व्करक्कर व्करक्कर व्करक्कर व्करक्कर विश्व विश इर्क्कक्राका .. क्कान्कक्कर्त .. क्कान्कक एकक नक एकक काम्बर कामकर का है ।, इकार कामक क्षान का का विश्वकर का कर देशका का का देशका का है। .. कामका का नासकार स्वाप्ति स्वरं कालका है । स्वरं कालका कालका कालका कालका कालका कालका कालका है । स्वरं कालका है । स्वरं कालका कालक ्कहब्र- व्कहब्र- व्कल्प् ,स्काकाक व्कव्य क्रक्क क्रिक्सक क्रक्कि प्रकारक प्रकारक प्रकारक प्रकारक व्यक्त व्यक्त प्रकारक व्यक्त व ्कान्त्रका अध्यक्षक । अध्यक्षक व्यवस्था विकास (अध्यक्षक व्यवस्था विकास व्यवस्था विकास विका क्का स्वाप्त के स्वाप् वक्त स्वयन्त्र स्वयन्त्र स्वयन्त्रकार स्वयन्ति स ड. इंडेंडिंक क्रेक्काट के, 'एकक्ट्रक्किक्केक्ट के हिन, 'एएक' . क्रेक्किकेक के क्रिएक क्रेक्ट क्रिक्क क्रेक्कि के क्रिक्केट क्रिक्केट के क्रिकेट के क्रिक्केट के क्रिकेट के क्रिक्केट के क्रिकेट के क्रिक्केट के क्रिक्केट के क्रिक्केट के क्रिक्केट के क्रिक्ट के क्रिक्केट के क्रिक्केट के क्रिक्केट के क्रिक्केट के क्रिक्ट के क्रिक्केट के क्रिक दलक स्वरुक्त करनायात्रका हाल नेकालायात्र स्वर्ध कराव्यक्तात्र स्वर्ध स ्कान्कर व्यक्तका व्यक्तका व्यक्तका व्यक्त प्रकार है । प्रवक्त व्यक्त व्यक्त व्यक्त व्यक्त व्यक्त व्यक्त प्रवक्त

इन्हब्र ्विक्षात्रकः व्यव् एक्षात्रकः कः अवस्थानायः एक्षात्रकः अवस्य व्यव्यक्षात्रकः स्वर्

्कर्मक्क , क्रम्प्रक्क , क्रम्प्रक , क्र

. वेहरकप्रा . वह क्याका २००७-०८ का व्यक्ता . वह व्यक्ता .

 'स्क्रीका 'स्क्रीकाक्ष्म'त्र 'त्रकेत्वक 'क्र-'त्रकेत्वक 'त्रकेत्वक 'त्रकेत्वक 'त्रकेत्वक 'त्रकेत्वक 'त्रकेत्वक 'स्क्रीका 'स्क्रीकाक्ष्म'त्र 'त्रकेत्वक 'त्र

* The speech was laid on the Table.

्क एकट्॰ अक्कम्र. इन्नक्षक क्वाक्रम्स्क्रक्क व्यन् इन्नक्वाकर १०० प्रकारक्षक्षक स्वन्नव्यक्षक व्यन् क्वाक्रक्षक व्यन् क्वाक्रक्षक व्यन् क्वाक्रक्षक व्यन् क्वाक्रक्षक व्यन् क्वाक्रक्षक व्यन्ति । ०० प्रकारक्षक प्रकारक व्यक्तक व

्कार प्रस्ति । विक्र स्थान स्

्रक्षण्डाकाः अवस्तिकार्यः प्रकाणकाः जवस्त्रप्रकार्यः कार्यकार्यः कार्यकार्यः कार्यकार्यः कार्यकार्यः कार्यकार्यः अवस्ति अवस्ति

. अहा स्वरुप्त , कारकर . का कारक स्वरुप्त अक्षा अक्षा अक्षा अक्षा के स्वरुप्त अक्षा अक्ष

. का कार्याका कार्याका का कार्याका कार्याका का कार्य

ंक्षक्ष अक्रम्र व्हिन्नक्ष्मक ज्यक अक्रम्र अक्षक्षक्य प्रकारक्क ज्यक अक्षक्षक्य प्रकारक्क ज्यक अक्षक्षक प्रकारक्क ज्यक अक्षक्षक्य ज्यक्षक्य अक्षक्षक्य प्रकारक्क ज्यक अक्षक्षक्य प्रकारक्क ज्यक अक्षक्य ज्यक्षक्य ज्यक्षक्य

्रव्हास्त्रकार्यः जारास्त्रकार कार अवस्त्रप्रस्कारमान कार स्वारक्ष्यः कार स्वारक्ष्यः स्वारक्षः स्वरक्षः स्वारक्षः स्वरक्षः स्वर

्करकर्षक ज्ञान्त्रकार एक क्षिक्यक, क्ष इन्त क्ष्मक्षक ज्ञान्द्रकार एक क्ष्मक्षक ज्ञान क्ष्मक्षक ज्ञान क्ष्मक् ज्ञान्त्रकार ज्ञान्त्रकार ज्ञान्त्रकार ज्ञान्त्रकार ज्ञान्त्रकार ज्ञान क्ष्मक्षक ज्ञान क्ष्मक क्ष्मक ज्ञान क्ष्मक क्ष्मक

ंस्करः दंदश्च खेळा क्षांक्षकाक्ष्य त्यांक त्यांक्षकाक्ष्य खेल क्षांक्षका ज्यात्वात्व त्यात्वात्व त्यात्व त

्करकर्ष जाराज्यकार का नक्षात्रका का कार्यका का का कार्यका का का कार्यका का का का कार्यका का का कार्यका का का कार्यका का का का का कार्यका का कार्यका का कार्यका का कार्यका का कार्यका का का

स्वास्त्रकालः, सामान्यस्त्रः रास्त्राः सामान्यस्यः सामान्यस्य सामान्यस काक विकासकार केंग्राम कर प्रकास प्रकास प्रकास कर केंग्राम कर कर केंग्राम कर केंग्राम ्रकार-कार्यक क्र रक्षा 🗕 कार्यक्र कार्यक व्यवक्र व्यवक्र व्यवक्र कार्यक व्यवक्र विकास व्यवक्र है। व्यवक्र ्रक्षा प्रमाण विकास के अपने का अपने का अपने का विकास के सम्बाध के अपने का समाण के अपने का स [ु]क्काक्षाक्षाक्ष प्रभावकारक कार्य प्रकारकारक कार्याक्षात्रक प्रकारक प्रकारक प्रकारक प्रकारक के प्रकारकार कार्याक प्रकारक . प्रकारक क्षास्त्रक प्रकारक प्रका বেশক্ষ আৰু প্ৰক্ৰাৰ ক্ষেত্ৰৰ প্ৰক্ৰাৰ আৰু আৰুপত্ৰ প্ৰক্ৰাৰ আৰু আৰুপত্ৰ কৰাৰ আৰু ক্ষেত্ৰৰ ভাৰত আৰু ক্ষিত্ৰৰ আৰু कार अकारा दान हो। अवारा हो। अवारा हो। अवारा हो अवारा हो। अवारा हो अवारा हो। ब्सर्भकारक्क जन्मकारक व्याप्त क्रिक्त क एक्रभ्यक व्यक्त अका र विकास का विकास विकास विकास का विकास दथक एक्क उत्तरक्षक्रक रक्षण्य व्यार प्रकार क्षाव्यक्षक्षक एक्क प्रकार क्षाव्यक्षक व्याप्त व्यापत , ब्रह्मका, ज्वान्त्रक्र ज्वान्त्रक्षक्षक्षक्षक्षक्षक्षक्षक्ष

... अहरकन्पत्रः अवस्त्रः ... क्र एकः , वक्षरः । वक्षरः अवस्त्रक्षकः । वक्षरः वक्षरः इदरः ... वक्षरः वक्षरः । वक्षरः वक्षरः वक्षरः वक्षरः वक्षरः । वक्षरः वक्षरः वक्षरः वक्षरः । वक्षरः वक्षरः वक्षरः वक्षरः वक्षरः वक्षरः वक्षरः । वक्षरः वक्षरः वक्षरः वक्षरः वक्षरः वक्षरः । वक्षरः व

SHRI J.M. AARON RASHID (PERIYAKULAM): Sir, I feel happy to participate in this discussion on Budget for the year 2007-08 which was presented in this august House by our Union Finance Minister, Shri P. Chidambaram. This Budget in my opinion is a historic one for it seeks to add to the skills of our farmers thereby increasing the agricultural productivity giving a new direction to agricultural sector as a whole. This would greatly benefit the poor farmers and the agricultural labours too. I welcome and support this Bill. For the prosperity of the country and for the economic progress, the farmer who toil and moil in the soil contributes to the economy of this country through his sweat and tears. This Budget seeks to address to agriculture sector. There is a considerable allocation of funds to refurbish water bodies. There is a saying in Tamil that only when the height of the bund in the field is raised, the water level will also increase thereby increasing the yield of the crops. It says without saying that the lot of the poor can be increased by way of concentrating on to the ways and means to increase agricultural production. That is one reason why the Chief Minister of Tamil Nadu Dr. Kalaignar Karunanidhi on his assuming office last year announced that the poor living below poverty line would be provided with rice two rupees a kilogram. This must be extended to the people of all the States.

Tamil Nadu has shown the way. I mention this because the Budget prepared by our Finance Minister has spelt out several schemes and fund allocations that would greatly benefit the farming community. At a cost of Rs.1800 crores with the help of NABARD, water bodies would be renovated, desilted and strengthened thereby enabling conservation and storage of more water. Developing water resources is a right action to give a boost to agricultural production. We are also going in for better and efficient water management so that water is utilized in a simple thrifty

way with a proper training in this regard, so that it benefits our countrymen in a big way.

Farm credit quantum has been enhanced upto Rs.2,25,000 crores. And it is the target for the financial year 2007-08. This year's Budget lays stress on education. This will enable us to take our country to great heights in the comity of nation.

^{*}Translation of the speech originally laid on the Table in Tamil

Our UPA Chairperson, Annai Sonia Gandhi, who has earned the goodwill of crores of poor and the poorest of the poor of this country, is showing us right path and guides this Government to fulfill the aspirations of the people. The Government and the stewardship of our Prime Minister, Dr. Manmohan Singh, is trying to meet the expectations of the people. Dr. Kalaignar Karunanidhi who assumed office as Chief Minister of Tamil Nadu in the company of UPA has waived agricultural loan to the tune of Rs.7,500 crores. He has introduced a direct marketing method to take the agricultural produce directly from the fields to the market directly by the farmers themselves directly. This cash and carry method has helped the farmers to get remunerative price saving from the clutches of the middlemen. There is no incidence of farmers' suicidal death in Tamil Nadu because the farming community is getting a better deal under the dynamic leadership of Dr. Kalaignar Karunanidhi. Tamil Nadu is a pioneering State in alleviating the problems of the peasants.

In this year's Union Budget, Rs.381 crores of rupees has been set apart for the welfare of the minorities. Under the guidance of Annai Sonia Gandhi, Dr. Manmohan Singh's Government has introduced a Fifteen Point Programme to improve the conditions of the minorities. Implementing fully the Sacchar Committee's recommendation would result in improving the living standard of the minorities by way of providing education, job opportunities and help for entrepreneurial ventures.

Equipment for drip irrigation is now exempted from customs duty. This is a welcome move. Similarly, under 'Aam Aadmi Beema Yojna' rural agricultural labour will be provided with social security by way of extending insurance cover. This would greatly benefit the farmers, who are left fend for themselves when they are swayed by the vagaries of weather round the year. These are measures in the right direction aimed at the farming community thereby providing social security.

Mid-day Meal Scheme was introduced for the first time in the country by our late Chief Minister Kamaraj in Tamil Nadu. He wanted to extend the benefit of education to the poorest sections of the society and he introduced Noon Meal Scheme in the schools to overcome the problem of increasing dropout rate. He strongly believed that a revolution in providing education would lead us to the path of self-sufficiency. Emulating the spirit our Union Finance Minister has increased by 35 per cent the allocation of funds for this scheme, which has touched a sum of Rs.23,142 crores.

In 2007-08, the allocation for higher education has been increased from Rs.1,837 crores to Rs.3,794 crores. This has become a shot in the arm of the Government led by the United Progressive Alliance (UPA). People are welcoming the spirit behind the move. Our Finance Minister has also announced one lakh scholarships to the tune of Rs.6000/- per student in the rural areas to lure the meritorious students to continue their education. We find lakhs of students in Uttar Pradesh alone dropping out of the school every year. Extending of this Central Scholarship will be a boon to our future generation.

Import of medical equipment will now attract reduced customs duty as it has been brought down from 12.5 per cent 7.5 per cent. With social concern and to help overcome the deadly menace of HIV AIDS, the Union Government has set apart Rs.969 crores. This is a welcome move. National Rural Employment Guarantee Scheme (NREGS) carried out in 200 districts in the country by UPA Government under the guidance of Annai Sonia Gandhi has now been extended to 320 districts. This is a happy announcement.

The move of the Union Government to increase from Rs.6200 to Rs.15,000 the limit on micro credit extended to the poor people through nationalized banks shows the human touch with the Government led by Dr. Manmohan Singh under the able guidance of Annai Sonia Gandhi.

The Finance Minister has also spelt out his action plan to enhance the quality and standard of about 300 Industrial Training Institutes (ITI) in the country by way of extending an interest free loan to the tune of Rs.2.5 crores. Income tax rebate on the interest paid against educational loan is a welcome move. Similarly, the tax limit ceiling of rupees one crore pertaining to small industrial units has been enhanced to rupees 1.5 crores. This shows the concern of the Government to improve the lot of the entrepreneurs in the small scale industries sector. In the case of salaried employees, the standard deduction has been enhanced to rupees 1.10 lakhs. Under S.G.S.Y. schemes carried out through NGOs shall henceforth have an allocation of Rs.1,800 crores after its being increased from Rs.1,200 crores. Under S.J.S.R.Y., the urban poor will get an additional allocation which now touches Rs.344 crores.

This Government has also come forward to express its concern for the welfare of the depressed sections of the society by way of increasing the scholarship for M.Phil and PhD courses. The students hailing from the Scheduled Castes and the Scheduled Tribes communities will now get this lucrative scholarship.

This Government has also unfailingly shown its concern for the disabled people of the society. In order to guarantee one lakh jobs for the disabled people, the Government has come forward to extend E.S.I and E.P.F. facilities for the first three years to the organizations that provide jobs to them. This relieves some pain in the hearts of our disabled brethren. Extending my support to this year's Union Budget, let me add a few points.

*This segment of clearing agent has all along been exempted from the imposition of excise duty. To be more precise it was considered by the succeeding Union Governments to be a industry under the threat of extinction, whose growth had gone negative during the last four decades. More so after the advent of synthetic detergents industry is fighting a losing battle and is almost on the verge of closure.

In view of following enumerations the decision of imposition of 16% excise duty in the last Union Budget should be reviewed:-

- 1. Natural Oil based hand made Laundry soap is eco-friendly, friendly to both clothes and skin.
- The oil based soaps are made of indigenous oils which leads to savings of huge amount of foreign exchange because import of foreign exchange because import of petro based product by synthetic detergent industry entails wasteful expenditure of precious foreign exchange.
- 3. The industry is labour oriented as it does not involve power and the manufacturing process is completely manual. The industry provides employment to lacs of labourers directly. It also generates employment at the grass root level because the villagers are engagedin great numbers to collect the seeds grown on trees from which is extracted, an important ingredient of indigenous soap.
- 4. It solves the problem of disposal of residual waste of hydrogenated vegetables oils as the waste is used as inputs by oil based laundry soaps, which otherwise, would be diverted to manufacturing of edible oil units which may prove disastrous because it is not edible.

Imposition of 16% excise duty on Hand Made Laundry Soap has brought this segment of industry at par with the multinationals and large scale giants. The irony being that these very multinationals have found ways to avoid this tax by

---- This part of the speech was laid on the Table

shifting or setting up their units in tax haven states like. Uttaranchal, Himachal Pradesh, Assam etc. So from a position of advantage the SSI laundry soap have been pushed to an unenviable position wherein their wherein their certain death or close down has been guaranteed by the government.

5. The tax that will accrue to the government will be so miniscule that it may not even cover the cost of collection.

The end users of this soap are always the poorest of the poor people of the society and any imposition of the tax will ultimately be borne by these very people. The tax will put an end to the centuries old traditional hand made washing soap units and will provide an open market to the big players who will crush the tiny labour oriented units to death.

We request your good self to kindly withdraw the tax and give this form of industry a fresh breath of life.**

श्विक स्कारक स्वापक के क्रिका के स्वापक विश्वक के स्वापक के स्वापक स्व

७क्का-्र जाकारह ज्वाकार्काकार नक्षा निर्मा कार्याकार जाकार जाकार जाका जाकार जाका जाकार जाका जाका
, 'कराकाक मकराका हर 'काकावका'क इन्हर हक्ष्यक मकरक निर्मा करकान्यक है . के अवसाकाका के ब्लावकाका मकरायक के कावका कि विकास महावका महाविका कर कि कावका महाविका कर कि कावका कि कावका कर कि कावका कर कि कावका कर कि कावका कि कावका कर कि कावका
. इक्सहिक अक्कर एक्स के
हाः जन्मकाकः ,ब्बकाकः वम्रातकः ,स्ट। इसकाकः इसकः दसकः वसकः जक्षकः वसकः वसकः । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।
. इक्क ख्राक क्षा काल काल काल काल काल काल काल काल काल का
विकेश्व के के कि

्यास्त्र स्थान स्थान

े अहाका क्षित्र के इत्ताव के इत्ताव

.. क्रह्मचर्य , व्हाक 2007-08 व्हा , क्रांक्स , क्रांक्स , व्हाक 6,80,500 व्हार्यक इस्टाव्हक इस्त व्हार्यक इस। एक , क्रांक्स व्हार्यक इस। एक , क्रांक्स व्हार्यक इस। एक , क्रांक्स व्हार्यक इस। व्हार्यक व

..क्सकर्ज ..क्सकर पंकर कर प्रकार कर प्रकार कर प्रकार कर कर प्रकार कर है। प्रकार कर प्रकार कर पर 32 प्रिएकट प्रकार कर प्रकार

क्षा करानेकः कार्याक्षारः कार्याकारः कार्याकारः कार्याकारः विकास कार्याकारः कार्याकारः विकास कार्याकारः विकास कार्याकारः विकास कार्याकारः विकास कार्याकार विकास कार्याकार कार्या खाहका, जिस्सा कार्या का कर के सम्बद्ध हैं के जिल्ला है के सम्बद्ध कर के सम्बद्ध के स ारुक्त्व अक्सा क्रक प्रकार प्राचार प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप् क्रिक्र हम्, क्रिक्क क्रिक्क क्रिक्क क्रिक्क क्रिक क्रिक्क क्रिक क्रिक्क क्रिक हम् हिन हम् हिन क्रिक्क क्रिक क्रिक्क क्रिक्क क्रिक्क क्रिक्क क्रिक क्रिक्क क्रिक्क क्रिक क्रिक्क क्रिक क्रिक्क क्रिक क्र अकारकारक : अकारकारक : अकारकारक : अकारकार : अवारक : . क्रिक्ट, क्रिक्ट हैं है। अक्रिक्ट देशक क्रिक्ट कर हैं क्रिक्ट कर है क्रिक्ट कर है क्रिक्ट कर है क्रिक्ट कर है क्रिक्ट है। क्रिक्ट कर है क्रिक्ट है। क्रिक्ट कर है क्रिक्ट है। क्रिक्ट कर है। क्रिक्ट क . जिस्के . जिस्के हे स्वरूपक हे स्वरूपक हे स्वरूपक है स्वरूपक जिस्के जिस्के जिस्के जिस्के हैं स्वरूपक जिस्के जिसके ,स्काः प्रकार प अक्टाहरू के का अक्टाहरू के कि कि

अक्रमं, अक्रिसकः स्थकः स्थापकः स्थापक स्थापकः प्रकापकः स्थापकः स्थापक अध्यकः स्थापकः स्थापकः

. क्राक्षम्य प्रमुख्य कार्या क्राव्य क्राव्य क्राव्य हो। व्याप्त क्राव्य क्राव क्राव्य क्राव्य क्राव्य क्राव्य क्राव्य क्राव्य क्राव्य क्राव क्राव्य क्राव्य क्राव्य क्राव्य क्राव्य क्राव क्राव्य क

एका विकास हर्गका कर्मा क्रिक्स कार्क विकास कार्क विकास कर से अवसास कर है । अवसास कर है । अवसास हर्मा विकास है अवसास कर कर कर विकास है । अवसास कर कर कर विकास कर वित

इन्हर्ज्ञ , एक्क्ट्रकः , व्कार्क् , एक्क्क्रकः , वक्क्क्रकः , एक्क्रकः , वक्क्क्रकः , वक्क्क्रकः , वक्क्रकः ,

प्रश्निक व्यक्ति के व्यक्तिक व्यक्ति के व्

स्क्राहरू निर्मात अपक त्रिएक नेक्स्यक्रिक त्रिएक नेक्स्यक्रिक त्रिएक नेक्स्यक्र निर्माण के निर्माण क्रिक्स नि

हैं। 'क है के ख़रूर ज़रू , ज़रू , कर ज़रू , ज़रू , कर ज़रू , ज़

क्षा के कार्या के कार्या

दक्षानिक अवकारक्षानिकारक स्वक्रा के कार्का के कार्का के कार्का के कार्का अवकारक स्वक्र कार्का कार्य कार्का कारका कार्का कार्का कार्का कार्का कार्य कार कार्का कार्का कार्का कार कार्का कार कार्का कार कार्का कार कार कार कार कार कार कार कार क

श्री के स्वार्थ के स्वर्ध के स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार्थ के स्वर्ध के स्वार्थ के स्वर्ध के स्वार्थ के स्वर्ध के स्वार्थ के स्वर्ध के स्वर के स्वर्ध के स्

इन्हर्य प्रमुद्धकः ज्यार प्रकारकः त्रकारकः ज्यारकः व्यापकः प्रमुद्धकः ज्यारकः ज्यायः ज्यायः

Hon 'ble FM has announced before this August House that the country is now poised to achieve the 10th Plan target GDP growth rate of 8 percent during his regime. No doubt, this is a commendable achievement but it is a matter of concern that this growth has been proved to be an urban phenomenon, impacting largely the urban economy where the so-called upper class people get the benefits. Further, it is a matter of investigation whether the provisions made in this Budget 07-08 will lead to the prosperity of the real *Bharat* i.e., the rural India.

All of us know that more than two-thirds of our billion population ate dependent on primary sector. This provides employment to 64 percent of the country's total workforce. All the Hon'ble Members would agree wish me that rural prosperity is a 'must' for a nation like ours. However, ever since the beginning of the UP A rule, while sectors like manufacturing and services are given a special thrust in one way or the other, the primary sector has been severely neglected. The agriculture sector has been witnessing downward trends in the growth of production and productivity in a number of food-grains across the country. Considering a rampant rural-urban migration, one can easily say that it is the lack of development of rural and agro-based infrastructure which is the main culprit in the ongoing socio-economic divide between the rural and urban areas.

Many a time, disguisedly unemployed rural agrarian folk are compelled to shift their occupation to other economic activities and sometimes even migrate since present-day agriculture in India has low capacity to generate additional income. There has been no dramatic technological breakthrough in agriculture in

the country since the 'Green Revolution' of 1960s. The potential of the existing agro-based technologies has not been fully exploited and the growth rate in the productivity for most of the foodÂgrains as remained virtually stagnant during the last two decades. This clearly indicates lack of basic and prioritized research and development initiatives in the field of agriculture and agro-technology.

The Budget 2007-08 has no new or innovative provision for the Indian Agriculture. This is why the agriculture sector, in spite of minimal relief ensured in the 07-08 Union Budget, is not going to witness a dramatic change in the coming future. Hon'ble FM's measures like allocation of funds to multiplicity of farm-based schemes, facilitating access to credit, extending training and provisioning insurance and rural infrastructure are well-intended. However, these provisions are very unlikely to have a positive impact on agriculture since the most critical aspect regarding the intended outcomes and the delivery mechanisms of these policy directions have not been addressed skillfully. Hon'ble FM has himself conceded the fact that an average growth during the lOth Plan period was only 2.3 percent which was quite below the desired level of 4 percent a year. Considering the gestation lag in the investments in the farm sector, accumulated and acute supply-side constraints may not give the requisite thrust to the Indian Agriculture to score the planned growth rate.

Here, I must refer to my State, Orissa, the land of lord Jagannath. The State is endowed with rich natural resources in the form of vast mineral deposits, forest, productive land, bountiful surface and ground water resources, long coast line, and picturesque places and pilgrim shrines with tremendous tourist potential. However, it is a matter of great concern that due to the Centre's continuous apathy and step-motherly approach towards effective, adequate and successful exploitation of these resources, the State has never had a chance to generate satisfactory income opportunities for the millions of its inhabitants. All of us know that this State directly witnesses the problems of poverty and destitution due to its socio-economic backwardness. Half of its population is estimated to be under the poverty trap. Large proportion of people in the state has very poor living conditions.

That is why I couldn't resist myself to question the Government's policy reflected in this Union Budget -

Do the economic policies in the UP A era have suited only the rich and urbanites?
Does it mean that the whole policy framework bypassed the "Aam Admi" who are small, marginal farmers and agricultural
labourers and are reeling under poverty line even after more than 59 years of our Independence?

Proposal to reduce the customs duty on polyester fibre and yam from 10 percent to 7.5 percent is encouraging as our textile industry is suffering from intense competition in this economic boom period. I could have been happier, if the budget would have considered innovative mechanisms to protect the interest of our poorest of the poor country-side weavers. They lack technology and marketing. The traditional skill and knowledge are on the verge of extinction. The lack of proper implementation of Central Schemes

^{*} The speech was laid on the Table.

on development of handlooms and handicrafts has made the weaver's life miserable not only in the State of Orissa but also across the States.

Sir, Orissa feels proud not only of her rich socio-cultural heritage, but also of the skills and knowledge base of her million weavers who are capable of weaving a silk *saree* of an average length which can be stored inside a small bamboo stick. I must bring to the notice of the Hon'ble Members here that the art of the rural artisans and weavers in the State is dying day by day; suicidal incidences are on the rise; distress sales are rampant and access to credit which is essential for the smooth operation of artisan activities is severely constrained. In earlier occasions, I have raised my concern about the problems faced by our rural artisans in this August House. Since the budget failed to outline any comprehensive package for the up-liftment of these poor weavers and artisans, I may not consider it as a Budget for the 'AAM ADMf'.

The Hon'ble FM mentioned that revenues were buoyant for the third year in a row. A review of the balance sheet of the country would paint t~e picture otherwise. With the help of a little arithmetic we can easily conclude that India has a very grim financial situation. While the revenue receipt was, stated as buoyant, both revenue and capital expenditure are stupendously large and considerably higher than the degree of buoyancy in the revenue receipt. Further the interest payments towards our internal debt are more than 60 percent of our total revenue receipt. This indicates that we are not far away from an internal debt trap.

Further in the Budget Estimate for 2007-08, it was stated that the total projected revenue receipt would be Rs. 486,422 crore against the revenue expenditure of Rs 557, 900 crore. Again, the fiscal deficit was pegged at 3.3 percent of GDP amounting to Rs. 150,948 crore. Seeing these mindâboggling figures in the deficit account, the current situation seems grim and is going to pose immense difficulty in our way to achieve the Fiscal Responsibility and Budget Management Act targets, which we have passed in this August House a few years ago.

"Bharat Nirman" which has six vital infrastructure components VIZ., irrigation, roads, water supply, housing, rural electrification and rural telecom connectivity is yet to give the rural economy a new shape as very minimal expanson and strengthening of existing rural infrastructure and creation of additional infrastructural facilities have been achieved in 'a transparent manner in various infrastructurally backward States like Orissa. This programme apart from a media hype could not succeed in generating a synchronized approach to converge the benefits of this infrastructure building initiative with various other development oriented programmes already in operation in rural areas like, programmes for alleviating poverty, generating gainful employment, ensuring social security, enhancing standards of health, hygiene, sanitation and education. This has resulted in under-utilization of resources and corruption. This Budget, instead of hiking allocation under this composite programme could have addressed the problem areas in the implementation and outlined stringent measures towards effective and intended execution.

I am pained to state before the House that the plans and policies meant for the million poor have not yielded desired results even after attaining 59 years of Independence. In the socio-economically backward states like Orissa, assessments of various anti-poverty programmes (by the Planning Commission, Government of India) indicate that several problems like complex administration, high administrative costs, mis-utilisation of resources, ill-defined multipl^p objectives, lack in quality and accountability and inadequate monitoring had been the prime reason for the high incidence of poverty in the rural Orissa. In the State of Orissa, the percentage of rural families living below the poverty line is found to be very high. The State is also witnessing acute shortage of rural infrastructure. Industrialisation in the State is inadequate which has a direct impact on the service and primary sector. In spite of immense interest shown by the MNCs, Lack of connectivity, power shortage have discouraged many prospective global entrepreneurs to come to Orissa and invest here. Hon 'ble CM of Orissa have also urged to your good self and the Hon'ble PM regarding the provision of a special package to Orissa keeping in view the backwardness of the State. These are the reasons for which I have been sincerely requesting for Orissa to be considered as a special category State and entitle it to attain special attention and special package from the Centre.

I extend my heartiest thanks to the FM for his initiatives towards openit1g RRB branches in 80 uncovered districts in the coming financial year. In this context, I am compelled to note here that the Budget with its very few directionless paltry sops may not give the requisite boost to the agriÂbusiness in backward States like Ours. With the shortage of staff in the bank branches and existing fierce competition in the Indian finance market, the FM's dream in easing credit extension mechanism in the rural areas may not come true.

In a democratic country like ours, we would prefer to accept the growth of agriculture sector vis-a-vis other sectors like manufacturing or services since 75 percent of our population lives in rural areas. We must realize that we want a vibrant agricultural scenario in the country by reforming and developing this sector in a way where we would like to increase food-Âprocessing activities, retailing business on farm products and cold-chain capacities in the rural areas. We have to realize the potential of this sector not only in distributing the growth benefits to the common masses but also to contain successfully the evils of inflation.

I would congratulate the Hon'ble FM for enumerating various schemes dedicated towards upliftment of rural areas, insurance covers, better health and educational initiatives. However, a simple calculation will expose one thing - all of these high sounding plans,

programmes and budgetary figures boils down to Rs 1,64,900 crore which is barely 24 percent of the total expenditure proposed.

The Budget announced incentives for small scale industries where exemption limit for excise duties on small scale industries, service taxes were raised to Rs. 1.5 crore and Rs. 8 lakh respectively. These announcements have to be read with the announcements of Ministry of Commerce and Industries, where the latter has decided to de-reserve 125 items from the lists of items reserved for small scale industries. This means now the big companies will be able to manufacture the de-reserved items thereby throwing the country's 24 lakh registered small scale units to the vagaries of open market competition. Lacking in modern technology, financial resources and research and development, the Small Scale Units of the country will have to pass through a difficult phase in the near future. This will have a detrimental effect on the 30 million people recruited in these small scale units across the country.

The present budget, to me, is completely inflationary budget. We have seen that the dual excise taxation policy of the government could not cure the inflationary situation. Th~ FM's anticipation regarding the reduction of price of cement products died down when within a few hours of the announcement of the Budget, the cement industries of the country, instead of reducing their price per unit, actually raised per unit price for which the incidence fell on the common man who paid an average of Rs. 20 more than what he was paying earlier (i.e." in the pre-budget period) for a similar pack of cement. Before prescribing such a dubious and impractical double taxation framework for cement sector, the FM could have gauged the demand and supply situation in this sector and could have taken appropriate steps to increase the cement manufacturing capacity in the country. Increase in the money movement in the country, high interest rate structure, acute shortage in the food-grains supply, faulty policies regarding procurement and buffer stock operation and distribution of food-grains have continued to plague the rural economy and affect the price situation adversely.

The Budget has completely failed to lay any significant measure for the booming corporate sector in the country. With the tax proposals for the corporates like increase in the dividend distribution tax, removal of the taxÂfree status for the soft-ware industries and additional impost on cement manufactures have led to immediate and sharp fall in the stocks of most of these companies.

As regards introduction of a novel product for senior citizens "reverse mortgage", I would like to condemn the policy of the government in this regard. As per the policy a senior citizen who is the owner of a house can avail of a monthly stream of income against the mortgage of his/her hous~, while remaining the owner and occupying the house throughout his/her lifetime, without repayment or servicing of the loan. This policy may not be suitable simply because the banks will be entitled to sell-off the property through auction after the death of the loany senior citizen. Further, if the sell proceed exceeds the amount of the loan taken by the deceased, the remaining amount will be given to the legal heir of the person deceased. The following example wouln highlight the gravity of the situation:

If "A", a senior citizen staying in South Delhi gets Rs. 50 lakh under this scheme dies after leaving a property worth Rs. 1 crores then his legal heirs (who do not hesitate to desert him at the time of his crisis) would be advised to pay back the loan. If this does not materialise, the property will be sold and the remaining amount of Rs. 50 lakh would be given as a bounty to the legal heirs. This, to me, is unethical and impractical. Further, the value of property across the country is not the same. Will our Hon'ble FM think about the senior citizens living in remote and rural areas where one house property costs as less as Rs. 30,000/-?

In the Union Budget, there is hardly any evidence that the government-is going to follow its long cherished commitment of smooth economic reform. Sluggish agriculture growth, lack of irrigation and infrastructure, low level of socio-economic indices and high inflationary situation have not been addressed skilfully and appropriately in this Budget. Increase in allocation is fine, but we should think about the increase in the quality of expenditure on the sectors like education, health and infrastructure. The Union Budget is silent on the implementation part of the high sounding programmes.

The Union Budget 2007-08 has lost the confidence of the people at large, failed in fulfilling the high sounding objectives of poverty alleviation, defeated in reigning inflationary situation in the economy and prescribed no new recipe for agricultural resurrection.

 ्कान्ट विकास का प्रकास के किराविक हैं। इस इस किराविक के किराविक

्रक्षास्त्रकारक . सहस्य स्वार्क्षित स्वार्क्ष स्वार्वित स्वार्वित स्वार्क्ष स्वार्व स्वार्क्ष स्वार्वित स्वार्वित स्वार्वित स्वार्व स्वार्वित स्वार्वित स्वार्वित स्वार्वित स्वार्व स्वार्वित स्वार्वित स्वार्वित स्वार स्वार्वित स्वार्वित स्वार्वित स्वार्वित स्वार्व स्वार्वित स्वार स्वार्व स्वार्व स्वार्वित स्वार्वित स्वार स्वार्व स्वार्व स्वार

The Government must function for those who are waiting for this Government ্তর হৃত্যা क्षकर्शकार्य हक्षत्रका है।, प्रकृत क्षा कार्यकार्यकार्य एक क्षाकार्यकार्यकार्यकार्य (कार्यकार्य कार्य एक एक्षत्र कार्यकार्य एक है। विकास कार्य प्रकृति कार्यकार्य कार्य विकास कार्य कार्य कार्यकार्य कार्य विकास कार्य प्रकाशकारीकार जानका दनका है। प्रकारकाशका जुक एका कार्यकार है। प्रकारकार जा ... कार्यकार के है। कार्यकार कार्यकार जा ... कार्यकार कार्यकार जा ... कार्यकार कार्यकार जा ... कार् अक्रम्पकः, क्रक्ष-प्रकार प्रकार ह. क. प्रकार क्राक्काप्यकः, प्रकारका, एकः हकः, प्रकारका प्रकार प्र न्त्रहरू 🗆 हरनेक्स इस्कर्क व्यक्तिय ह स अक्सिक्सिक्सिक्स क्या एतः हम इस्क्रिक अक्रय इस्क्रिस अक्सिक स्वयह स्वयं एक एक एक अस्या एक एक प्राप्त अस्य प्राप्त प्र प्राप्त प्र increase. But what is the target? ख़ब्बहन्क एक्क्सक व्कर् क़ब्बकर इह्रक्कक्वट्क व्कर्ब ह+, एक्कब्हर्कक व्कर क्वारक व्कर व्कर्क ह+। ह+श्का क ह क़ब्क्स दक र सन्दर्क स्वरूप स्वरू क्किन स्वापन हर , इन्हर -ख्राहरूक क्रा , एक्स , क्राक्स के , क्राक्स कर हे , क्र , क्राक्स के , क्राक्स क्राक्स , क्राक्स क्राक्स क्रा , क्राक्स क्राप्त क्राक्स क्राप्त क्र जसकः प्रसाय स्थान है । स्थान स्यान स्थान गरः कर्पासः ह न करू कर्पाप्रवादाः सक्न करायाः । वाक्षाः वाक्षास्य व १क्र एक्का स्वाधिक प्रकार के कार्य के किर्म हैं के स्वाधिक के किर्म हैं के स्वाधिक ्रतकाकक एन्स्राक्क का कार्यकार का कार्यका कार् ्क्षकः हिन्द्रा होता स्वाहित होता है । इसक्क विकास सकता है । इसका होता होता है । इसका सकता है । इसका सकता है । ्रक्कार्यकः . कः अवकार एकाव्यकः नकावः विकासाराजाः एकारान्त्रका विकास एकाव्यक्ता । कः विकास विकास । कः विकास विकास । विकास विकास विकास । विकास । विकास विकास । विकास । विकास विकास । एक्सक 3.4 प्रकारक एक अक्रक क्रिक अक्रक क्रिक के 3.2 प्रकारक क्रिक अक्रक अक्रिए हैं क्रिक 1.2 प्रकारक क्रिक अक्रक अक्रिए अक्रक हैं। . इक्का प्रकार के के एक कि प्रकार प्रकार प्रकार के प्रकार प्रकार

. इंडि.संसक स्थरपक्ष-क्षरक्ष त्य-नंक हो, तंकक तिरक कर स्थरक हम। 'तंककार्त्य त्या क्षात्र क्षात्र तंकर स्थरपक्ष हम। 'तंकरपक्ष स्थरपक्ष हम। 'तंकरपक्ष स्थरपक्ष स्थरपक्ष तंकरपक्ष हम। 'तंकरपक्ष स्थरपक्ष तंकरपक्ष तंकरपक्ष तंकरपक्ष स्थरपक्ष तंकरपक्ष तंकर

ह .क्क्ष्ण .क्क्ष्यक्रमक खार .क्ष्म्यह .क्षाहिक हम .क्ष्यक ।क्षमक्रक .क्षाहिक .क्ष्मक .क्ष

रक्षान्त्रक <u>र</u>क्का के प्रकार प्रकार के प्रका न्डिस्साईस्, करकए न्डिस्ट्रेस्ट्रिस्ट्रेस्ट्रिस्ट्र ह+, 🛪 ବ୍ୟକ୍ତ ଓଡ଼େବ୍ୟକ୍ତ ଓଡ଼େବ୍ୟକ୍ତ ଓଡ଼େବ୍ୟକ୍ତ ଓଡ଼େବ୍ୟକ୍ତ ଓଡ଼େକ୍ ଓଡ଼େକ୍ ଓଡ଼େକ ଓଡ଼େ प्रकार पुराने प्राप्त के प्रतिस्था के प्रतिस ब्कट्क-व्रक्क ब्रक्क ब्रह्म हम। इस्क्राक्क ब्रह्मक्रक ब्रह्मक्रक ब्रह्मक्र क्रिक्क व्यवस्था । स्वाध्यक्ष ब्राज्य व्यवस्था । स्वाध्यक्ष ब्राज्य व्यवस्था । स्वाध्यक्ष व प्रकारक प्रकार व्यक्त व्यक्त हम। का प्रकार का प्रकारक हम का का प्रकारक का प्रक का प्रकारक का प्रकारक का प्रकारक का प्रकारक का प्रकारक का प्रक्त का प्रकारक का प्रकारक का प्रकारक का प्रकारक का प्रकारक का प total disconnect between the observations made in the Economic Survey of the current year presented by the same Minister and the Budgetary allocations. I may take the example of unemployment situation. ওক্রার কেকে ত্ জাক্তরজ্জ ক্রুব ব্যক্তর ক্রুব ব্যক্তর ক্রুব ব্যক্তর ব্যক্তর ক্রেব , इन्हाक , पुरुष्काक 200, क्रमान्त्रक प्रकार ्ब्ब्ब्र 200 ब्रिक्काक्षक व्यक्त व्यक्तिकार प्रक्र क 130 ब्रिक्काक अक्कार प्रकारक व्यक्तिकार .हए:खुक थ्वन क्वान्सुक ब्वत्व्वकार 12 हण्कम व्याप्कर कार क्वार्यक प्रकार कार क्वार्यक र स्थापन है। विविधान के ब्वत्वव्यक के ब्वत्वव्यक कार्यक विविधान है। . इक्ष्याक्षरक्षक ह+। इस्क्राका क्राक्षरक्षक ह+ क्ष्याका क्षात्रक क क्क , अक्का का अका प्रकार प्रकार के अका प्रकार के अका प्रकार के अपने प्रकार के अपने प्रकार के अपने व्झह रहङ्ग ह+।

"The sinking employment generation in the last two decades has further accelerated the gulf between the haves and havenots."

्रेन्क्स्प्रकाक्षर 2006-07 व्यन् इव्यन्नक्ष+न्यक्ष+कृष्ठा क्षा प्रस्तुव्य ाक्ष व्यन्त रहक ह+।

"With a lower agricultural growth and increasing informalisation of the labour force, the livelihood options in the rural India have shrunk in recent years."

खब्दद एक्स्वाक्स एक्ट व्कट एहक ह+।

"As a proportion of labour force, the unemployment rate has increased from 2.62 per cent in 1993-94 to 2.78 per cent in 1999-2000 and stood 3.06 per cent in 204-05."

इत्क्रक्ष-ख्याब्द्य, क्रक ्रक्ट्य 2006-07 त्क्रह ्रदक्ष ह+ क्ष्युक ्व्यह्म हम क्ष्युक क्ष्य इस्क्रक्ष क्ष्य त्व्यह्म त्क्ष्य त्व्यह्म हस्क्रक त्व्यह्म व्यव्यक त्व्यह्म त्व्यह्म व्यव्यक त्व्यहम्ब्यक व्यव्यक त्व्यहम्ब्यक व्यव्यक त्व्यहम्ब्यक व्यव्यक त्व्यहम्ब्यक व्यव्यक त्व्यहम्ब्यक व्यव्यक व्यवक व्यवक

MR. CHAIRMAN: I may tell you that your time is over. You can continue.

MD. SALIM (CALCUTTA - NORTH EAST): I am speaking only on the Budget.

्रेक्शकाश पंकाकाशका काकार काकार काकार एक है। अकार प्रकार प्रकार

<u>एम्ब्रक्क्ष्ञ्ञ</u>ल्क्ष्क्र् . क्र फ्ब्रह्रक न्क्रह्म । हल्ह्य अ्क्रह्म अ्क्रह्म प्रकारक दब्ब्क्रह्म because this Minister himself has introduced the Outcome Budget. We want performance. Only allocation is not going to satisfy us. ্রন্ধ গুরুম্বরুক্ত কর্মক বন্ধ-বৃদ্ধক বন্ধন বন্ধন কর্মক বন্ধন ক্রমক বন্ধন কর্মক বন্ধন ক্রমক বন্ধন · इक्क्षहरू रूके के क्रिएक्ट्रेक 2002, 2006 रुक क्रिक्किल हेंद्रहा इस्क्रक क्रिक्स 11300 क्रिएक्ट क्रिएक्ट एक्ट्रिक एक्ट्रिक क्रिक्स 2006-07 क्रि. इक्ट्रिक ए:काककार हर के का प्रकार प्राप्त के का प्रकार का प्रक का प्रकार का प्रकार का प्रकार का प्रकार का प्रकार का प्रकार का 6714.98 : ज्ञर्*फ्*ड्र : ब्रष्टाज्ञर, was released up to 31st January, 2007. ह : ज्ञ ए: ज्ञङ्क्ज्र ल्ज्ज्ज्ञ विश्व विश्व विश्व क्रि. ज्ञर्स् ्का हैन हे सक्स के स्वाप्त के सकता क एक सम्बन्धित स्वर सम्बन्धित स्वर सम्बन्धित समित्र समित् अवहरूबाकः क एक्क्राच्याक्रकः एक्क्र एक्क ..कः एकाभ्कान्कान हम। क्राव्या प्रकार प्रकार कामा क्राव्या कामा क्राव्या क्र अकक्षा-र प्रक्रक क्षाक्ष क रक्ष एवं हो। *प्रक्र क क्षाव्या अववाया अववाया स्वाप्त अववाया अववाय* १वहः इक्काक ह . ह . एकहः उक्तर , एकहका तक हर . १ अवस्वकाका नह , तकहा तकहा . तक , तकह , तकह नह नह नह नह नह नह नह नह । तक , तकह ्काक हु के तुक्क अनुकारक एक अरुकार के कार एक हुई एक इसकार कार पहुँ कि एक एक एक एक प्राप्त हुई के प्राप्त कार प ্বেল্ল বাং growth with equity and without that we are not going to satisfy. গুরুজ্বারুজ গুরুজ্বারু ক্রজ্বারুর ব্রুজ্বার বিজ্ঞান বিজ্ঞান কর্মিক ব্রুজ্বার বিজ্ঞান বিজ্ विप्रसम्बद्धाः स्थानः एक हम, एएक्स्क अवस्थानाक विद्यानाक अवस्थानाक प्रकृतिक । इ. क. विद्यानाक । कार्यानाक । विद्यानाक वर्षानाक । विद्यानाक वर्षानाक । ्बक्कद ्ककर व्यर्क हा क्वाइक there will be a trickle down effect. ्रक्क्क ्वाइक ावक विकास हक व्यवसाय के विकास व . इक्का प्रकार है के ज़िल्हा अन्तरका क्रमान क्रमान क्रमान क्रमान क्रमान क्रमान प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार क्रमान एक क्राक्रसम्बर्धिएट एक्स-क्रार्ट क्राक्ष-क्रा-क्राक्रस्क क्राक्रम् कर्म-क्राक्रम क्राक्रम क्र इन्हराक्रकातः ह+। अञ्चनक्रकाकः कान्नक्ष्यः प्रत्य र+क्षाकः प्रत्य एकः प्रत्य क्राह्मकः । क्राह्मकः विद्याकातः ह+? एकाप्रकारः क्राह्मकः प्रवासकः विद्याकः प्रवासकः विद्याकः प्रवासकः विद्याकः । विद्यानकः 'क्रिक्स, क्रिक्स, क्रिक्स, व्हिन्द एक हैं। एक व्हिस्का क्रिक्स क्र .क्षक्रक्कक्किट .ब्क्रक्क ्रहब् हम्।

16.00 hrs.[r31]

. अक्षान्य है के कारका कारका (कारका विकास कारका काए (यह है। कारका कार काए (यह है। कारका कारका कार कार (यह है। कारका कारका कार कार (यह है। कारका कारका कार (यह है। कारका कारका कार (यह है। कारका कारका कारका कारका कार (यह है। कारका कारका कारका कारका कार (यह है। कारका कारक

. इक्कर्पक्रम्भाक्ष प्रक्रम्भाक्ष प्रक्रम्भाव प्रक्रम्भाक्ष प्रक्रम्भाव प्रक्रम्
्वरक्ष्यं अव्यक्षः अव्यक्षः अव्यक्षः अव्यक्षः अव्यक्षः अव्यक्षः व्यवस्थित विश्वास्त । अव्यक्षः विश्वास्त विश्व अव्यक्षः विश्वास्त अव्यक्षः अव्यकः अव्यक्षः अव्यक्ष
. कार्क्यक (कार्यक (क) कार के कार
. अरुक्ट्य अववहर्गक्क एक ज्यक ज्यक ज्यक ज्यक ज्यक ज्यक ज्यक ज्य
. अस्कर्ष अध्याप्ताच्या कर विका कर विका कर विका कर विका कर
. अरुक्ट् (क्ष. क्ष. क्ष. क्ष. क्ष. क्ष. क्ष. क्ष.

MR. CHAIRMAN: Please conclude now because the time allotted to you is over long time back.

MD. SALIM: Sir, I will cut short my speech and make only points. ক্ষেত্ৰজ্জা কা ব ক্ৰান্ত কাৰ্য কাৰ্

. इस्ट्रान्य स्वापन स्वापन स्वापन स्वापन स्वापन स्वापन स्वापन स्वापन स्वपन स्व අනුකුතු දැන අනුකුතු අනුකුතු අනුකුතු අනුකු අනුකුතු අනු අනුකුතු අනු අනුකුතු අනුකුතු අනුකුතු අනුකුතු අනුකුතු අනුක क्षप्रकार व्हार रहत हो? क्षाइक्ष इस्त व्हार पहारसक्ष नहार्ज अक्षप्रकार व्हार व्हार पहारस्य अर्थ का व्हार पहारस्य व्हार व का क्रटक काक क्षत्राप्तकरह अकाक का बका पक्ष पक्ष पक्ष प्रकार का बका प्रकार हर्जिक। प्राचनका का क्षत्र का क्षत्र क्षत्र क्षत्र क्षत्र क्षत्र क्षत्र प्रकार का बका व्यवस्था प्राचनका प्रकार का क्षत्र का व्यवस्था प्राचनका प्रचार का क्षत्र क्षत्र क्षत्र का व्यवस्था प्रचार का व्यवस्था का ्रकाम-कार्यक का व्यवहार का व्यवहार का विकास का विकास का कार्यका का कार्यका का कार्यका का कार्यका का विकास कार्यका कार ्रेकक 12-15 एकक्काल ब्लाह ब्लाम्ब्लाक्कान ब्लाह ब्लाम्बलान ब्लाह इरक प्रकारक एक जानकाम क्राप्त क्र ज्ञ-(ज्ञ-(ज्ञ-एक्ट) प्राप्तक प्राप्तक प्राप्तक प्राप्तक एक्ट हक्का प्राप्तक एक्ट हक्का एक्ट के प्राप्तक प्राप्तक एक्ट के प्राप्तक एकट के प्राप पञ्चक अञ्चन-श्रद्धकारहरण्ड व्या-श्रिक्तरमञ्ज हें , इरकाञ्चक 1500 व्यारकार ब्राप्टकार व्यारकार व ক্ষেক্স বর্জাক্স 1997-98 আরুর 10 বরজ্ঞার আরু ক্ষাব্রজাক্ষ আরুর করা আরুর ক্রাব্রজাক্ষ বর্জাক বর্জাক্ষ বর্ণাক্ষ বর্জাক্ষ বর্জাক্য বর্জাক্ষ বর্ধাক্ষ বর্জাক্য বর্জাক্য বর্জাক্য বর্জাক্ষ বর্জাক্ষ বর্জাক্ষ বর্জাক্ষ বর্জাক্য বর্জাক্য বর্জাক্য বর্জাক্য বর্ণাক্ষ বর্জাক্য বর্জাক্য বর্জাক্য বর্জাক্য বর্জাক্য বর্জাক্য বর্ণাক্ষ বর্জাক্য বর্জাক্য বর্জাক্য বর্জাক্য বর্জাক্য বর্জাক্য বর্ণাক্ষ বর্ণাক্ষ বর্জাক্য বর্জাক্য বর্ণাক্য বর্ণাক্য বর্জাক্য বর্ণাক্য বর্ণাক্ষ বর্ণাক্ষ বর্ণাক্য বর্ণাক্য বর্ণাক্ষ বর্ণাক্ষ বর্ণাক্য বর্ণাক্য বর্ণাক্ষ ব ्क क्रप्टक क्र क्रमुक्तकाह एक ए के इक रक्त क्र क्रमुक्तकाह प्काप्तक दलक क्रमुक्त क्राव्य विकास क्रमुक्त क्राव्य एर्ड स्क्रहरूक, एर्ड ट्रन्पक, अक्रहरूकक, स्क्रहरूक, क्रिक्ट क्रहरूक, क्रिक्ट क्रिक्ट प्रक्र क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्रिक इच्छारङ्खान्द्र□एक क ब्लाब्क क हम, भक्तकाकान ब्लाङ एक ब्लाङ व्यक्त ब्लाङ व्यक्त व्यक् -कहब्र 🗀 -कहब्र 🗀 , ह , क्राक्क एलक्क -कहब्र 🗀 व्काहक थक्का | व्यवक्क एलक्क -कहब्र 🗀 व्काहक थक्का | व्यवक्क एलक्क -कह्व । व्यवक्क एलक्क -कह्व । व्यवक्क हा-, क्राक्क व्यवहार प्रकार व्यवक -क्राक्क व्यवक -क्राक्क -क्राक -क्राक्क -क्राक्क -क्राक -क्राक्क -क्राक -क्र इरक्षका कार्या कार्याका कार्याक अवक्षण्य ह क्षक्षः दलक क्षा प्रक्रक ब्यहन्त्रकार थ्यः प्राथकक्षक प्राथकक्षकक ह्राक्षक ब्यहर वहह हम अवकार इसक ब्याजन क्षा प्राथक ब्याजन व्यवक्ष व्यवकार ब्बाहरू के प्रकार के एक एक एक प्रकार का प्रकारक का प्रक्त का प्रकारक का प्रकारक का प्रकारक का प्रकारक का प्रकारक का प्रक का प्रकारक का प्रकारक का प्रकारक का प्रकारक का प्रकारक का प জাপুন জান্ত you have to ensure social justice. You have to show that you are concerned for all sections and segments of the society, particularly those sections and those segments of the society who are till now, even after sixty years of Independence, not able to come on the path of development. उन्हाकक ह क्राक्रक अक्रक्षक सहस्क्रक क्रक्षक क्राक्रक क्राक् ुरस्कारक है कार्यकर च्यानकार के विद्यालय के विद्यालय के विद्यालय के विद्यालय के विद्यालय के व्यानकार के विद्यालय क अब्दान भेक्क ब्यारक्क व्यवस्था प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार विकार पुरुषकाका पुरुषका व्यवस्था विकास पुरुषका पुरुषका पुरुषका पुरुषका विकास पुरुषका विकास पुरुषका विकास पुरुषका विकास पुरुषका विकास विकास पुरुषका विकास पुरुषका विकास पुरुषका विकास पुरुषका विकास वितास विकास व বঞ্চল্লক্ষ ক্রু ত্রু জন্তুক্র জন্তুক্র জন্তুক্র জন্তুক্র ভ্রু জন্তু ক্রু জন্তু ক্রু জন্তু ক্রু জন্তু ক্রু জন্তু between the have-nots and the have-lots is increasing. The Government is required to do a lot to bring down the gap and bring it to a manageable condition. The gap should be bridged. Thank you.

MR. CHAIRMAN: Those hon. Members who want to lay their speeches can do so.

Now, I request Shri Kharabela Swain to take the floor.

SHRI KHARABELA SWAIN (BALASORE): Mr. Chairman, Sir, can I speak from this seat?

MR. CHAIRMAN: Yes, you can.

SHRI KHARABELA SWAIN: Sir, while dealing with the Budget proposals for 2007-08, let me first deal with the Economic Survey of 2006-07. One of the salient features of that Economic Survey is that India needs East Asian level of taxes since India has moved into East Asian growth trajectory.

16.15 hrs.

(Shri Devendra Prasad Yadav in the Chair)

This sets the tone for the entire gamut of the Economic Survey. It says that it requires high growth rates with low inflation and it wants to rein in inflation without demeaning the growth [R34].

That is the theme on which, time and again, the hon. Prime Minister and the hon. Minister of Finance of this country keep on promising and insisting. The most important factor of this Economic Survey is, it will usher in growth essentially through growth that removes supply constraint in agriculture and through infrastructure and social sectors.

Sir, two points have been specifically identified in the Economic Survey. One is retail. It has got the potential to link the distressed farm sector to booming industry and service. The second one is tourism. The Economic Survey says that tourism can generate a large number of low-skilled jobs. Broadly I can say that there are four or five specific indicators of this Economic Survey. One is an organized retail sector to get a lag up, to boost the farm income and lower the price. India should be promoted as a 365-day tourist destination. Measures to revive the debt market and encourage more individual and FII investments in them, stronger regulation for commodity future, no rushing in into the convertibility of the rupee and food loans to farmers should be provided against the Kisan Credit Cards were also some of the indicators of this Economic Survey. But let me tell you that I am very disappointed, as many of the people are with regard to the Budget of 2007-08. It is the hon. Finance Minister's tight rope walk between inflation and growth. He has danced to the price tune and he has very insistently tried to save his Party, the Congress. The slogan of this Budget is inflation *hatao* growth *badhao and Congress Bachao*. That was the main theme of this Budget. ...(*Interruptions*) I will not pass any comment against him. Anyway, he is a new Member. ...(*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN: There should not be any cross talk in the House.

...(Interruptions)

SHRI KHARABELA SWAIN: Should I tell you that you should learn how to put a correct supplementary question? ...(Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Please take your seat. I am not allowing. This is not fair. Please take your seat. I am not allowing you. Nothing will go on record except the speech of Shri Kharabela Swain.

(Interruptions)* …

SHRI KHARABELA SWAIN: If you try to stop me, I will consume more and more time. You do not know me. I will not sit down. ...(*Interruptions*) I will consume more time. ...(*Interruptions*) You are also a new Member. So please sit down. ...(*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN: Mr. Swain, please address to the Chair. Nothing will go on record except the speech of Shri Kharbela Swain.

(Interruptions)* …

MR. CHAIRMAN: No, please take your seat.

...(Interruptions)

SHRI KHARABELA SWAIN: When you spoke well, I appreciated you. You should also know how to appreciate the good speech. So you please sit down[a35].

* Not recorded

I have appreciated your speech in the past. You may remember it.

Let me tell you that the hon. Finance Minister has dealt - for about 15 minutes - with the issue of uplifting the rural sector. He has mentioned this in his printed speech. But I was surprised that even the Congress people, the hon. Members of the Congress Party were not happy about it. They did not appreciate it. So, I will say that this is not a visionary Budget. It is set by political exigencies. This was the best opportunity for any Government, given the high tax revenues and growth combination, to announce a big bang strategy for sustained high growth. Why I tell this is for this reason. I appreciate what the hon. Finance Minister says. I agree to the point that the GDP ratio is at its peak. The tax revenue has doubled. The fiscal deficit is a record low. The expenditure as a percentage of GDP is the lowest. The growth has been unprecedented. I appreciate this. When I appreciate these things, I think that he had a great opportunity to go for the economic reforms because the hon. Prime Minister and the hon. Finance Minister, time and again, say that they want a 9 per cent or 10 per cent growth in the Eleventh Five year Plan. Mr. Minister, how can you do it? How could you achieve

this 9 per cent or 10 per cent growth if you do not go in for a big bang economic reforms? You do not go for the reforms. You do not go for the reforms with regard to the public sector undertakings, disinvestment in the public sector undertakings. You do not go for the reforms in the labour sector. You do not go for the reforms in several other sectors to which I will come at a later stage.

Sir, I agree that they always talk about inclusive growth. They also mention about inequality. Inequality is a necessary fall-out of growth. I know that. But it has to be corrected by subvention and policy intervention. I want to know where the policy intervention in this Budget is. Where did the Government intervene so that the fate of the economy of this country is changed? Rather, the strategy of the Budget for 2007-08, it seems to me, is governed by incrementalism. You just throw some money at a problem and you wish that the problem will go away. The hon. Finance Minister – what he did is - has put more and more money in every sector like health, education, Sarva Shiksha Abhiyan, Mid-Day Meal Scheme, infrastructure and he thought that all the problems will simply vanish and go away. But they will not go away because of this. What about the delivery mechanism? What about the delivery system?

I can tell you with regard to about 26 Ministries. By the end of last December, only 40 per cent of allocated money of those Ministries has been spent. Can you spend the rest of 60 per cent within the next three months only – by 31st March? Can you do it? So, it is not the allocation which matters. It is the delivery mechanism that matters. What has been the outcome? It is not a question of outgo. It is a question of outcome which this country is interested in I. I am interested in it. The hon. Finance Minister is also interested in it.

Now, I will come to the question of agriculture because agriculture is firmly associated with inflation. The hon. Finance Minister is very much interested in doing way with this inflation. Please see the first several paragraphs. For about the first 10 minutes, he has dealt with it. He tried to deal with the problem of inflation. Inflation, he said, is basically a constraint of supply. [F36]

It is a phenomenon. But you go through the Budget. Here the agricultre is only a theme. There is no clear cut agenda with regard to agriculture. For the last 10 years, the production of pulses, rice, wheat and edible oil has been constant. You can ask me as to what we were doing when our party was in the Government. I agree with this. But now the economy of this country has got a boost. More than 9 per cent GDP growth is there. The Government has got more money now, the Government has got more leeway, and the Government has got more space and more elbow room to deal with the problems of agriculture.

Sir, about 11.5 per cent of our farmers are facing misery. I would like to ask a question to the Finance Minister and to this Government. What has been the provision in this Budget to deal with the supply side constraint on wheat, rice, pulses and oilseeds? Is it sufficient to say that we would irrigate 24 lakh hectares of land and give Rs. 2,25,000 crore as rural credit? Even the hon. Member from the Left Parties Mr. Salim was saying that merely increasing the rural credit will not help.

I know the Finance Minister has succeeded in doubling the rural credit within three years and he has even exceeded that. But why are our farmers still committing suicides? I would like to say that one of the major steps that is to be taken to stop suicides of farmers is to have a real crop insurance scheme which should be operative in this country. There is a crop insurance scheme now, but there is nothing insurable under this scheme. It is only subsidy distribution by some banks. They are merely distributing the subsidy given by this Government. On what basis are they distributing this subsidy? Every block has been taken as a unit. It means, if the crops in an entire block are destroyed, then only the farmers are eligible to get some subsidy or some insurance amount.

Sir, you yourself are a leading farmer and you are leading the farmers' community. Do you believe that the crops in an entire block would be wiped out totally any time? Is it possible? Several times we have insisted with the hon. Minister and with the Government to treat the Gram Panchayat as a unit. If there is a crop loss in a Gram Panchayat, then the farmers should be eligible to get some crop insurance.

Now, the Government says that the revenue collection has gone up by 30 per cent. Every year it is going up by 20 per cent to 30 per cent. So, why do you not make more allocation for crop insurance. I would like to say with firm authority that if this crop insurance is applicable in real sense, farmers' suicides will stop in this country. I said several times that during the tenure of the NDA Government, the growth rate was only 4 per cent. We did not collect any revenue. That was the situation at that time. It was not because of any fault of ours but because we took some very stringent reform measures, you are enjoying the results of that. That is what we did.

SHRI J.M. AARON RASHID (PERIYAKULAM): Sir, this crop insurance scheme was introduced by the NDA Government. The hon. Finance Minister has given Rs. 2,25,000 crore for rural credit. He is misleading the House. ...(*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN: Please take your seat.

SHRI KHARABELA SWAIN: Sir, the Left Parties are not only controlling this Government, but they are also controlling the economy of this country and we saw an example of that this morning in the House.

SHRI J.M. AARON RASHID: Sir, let him speak about the Budget. ...(Interruptions)

SHRI KHARABELA SWAIN: If you say like this I will attack you more and more. [R37]

MR. CHAIRMAN: Mr. Swain, please address the Chair. [R38]

SHRI KHARABELA SWAIN: That is why, the Government is so scared of the Left. It is total capitulation in front of a Party which does not have any agenda and the Party which has brought West Bengal, where they have ruled for the last 30 years, to an abysmal state. Everybody knows that pretty well. But still, just to enjoy the power, just to enjoy the post of ministership, they are capitulating before the Left...(Interruptions)

SHRI J.M. AARON RASHID: They were with them also ... (Interruptions)

SHRI KHARABELA SWAIN: They themselves say that they were never with us. How can they just force us?...(Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Please address the Chair.

SHRI KHARABELA SWAIN: I will just make some points to the hon. Minister that Mr. M. Swaminathan, one of the greatest leading agriculture scientists of this country has made. How do we go for proper utilization of every drop of water and should we go for that? Have we done something? Have we indicated anything like that through this Budget? How to increase the productivity? Are the pilot projects taken up for restoring the water bodies sufficient?

I think, the hon. Minister mentioned about Orissa when he said that in Karnataka and Orissa, the World Bank is going to sign some agreement for the restoration of water bodies with us. I hope that very quickly, by the end of this month, as he said, it happens in Orissa. I shall be extremely happy. I agree that this is one of the good projects. I think, the Government will also take very strong steps in that regard so that not only in Orissa or Karnataka, but in other States of this country also, the hon. Minister will be able to say how the water availability increases and how the rain water is stored for the irrigation projects.

The hon. Finance Minister has spoken about reforms in Agriculture Extension Service. It is a good proposal. I thank him for that. He wanted to create the Agricultural Technological Management Agency. But he wanted that the District Magistrate or the District Collector would head it.

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI P. CHIDAMBARAM): It is already so. That is the present set up.

SHRI KHARABELA SWAIN: All right. Then, I would like to inform him that the District Collector or the District Magistrate heads about 60 other organizations. Does he have any time to go for agricultural upliftment. So, I would appeal to the hon. Minister not to go by that thing and kindly see that somebody else, some other specific officers, who will just deal with agriculture, heads this agency so that something happens to agriculture. It will never happen if you ask the Collector to head it because most of the time not a single meeting is held in one year.

Sir, I would like to say something about fertilizer subsidy. Does it require a change, Mr. Minister? I think, it requires a change. We must see to it that the fertilizer subsidy directly reaches the farmer. It should not go to the manufacturer of the fertilizer. It is only now that the manufacturer or the factory owner who gets it. It never goes to the farmer. So, I would appeal to the hon. Minister to see to it that it reaches the farmer and he should also see to it that the health of the soil improves.

As far as growth is concerned, I will come to the second point, which is with regard to the development of infrastructure. The high growth can be sustained if the problems of poor infrastructure and skilled manpower shortages are addressed. The Budget has failed to do so. The Economic Survey stated that there is a paucity of skilled manpower in this country. The Finance Minister says nothing about it. He is merely increasing the number of ITIs. He did not mention anything about how to deal this problem.

Now, there are several news items where we find that by 2010, if this condition prevails in India, rather we will have to import some of these skilled persons to deal with this problem. Shall we face this problem when India is supplying its skilled manpower to all over the world? Does the hon. Minister think that just by merely increasing the number of ITIs we are going to solve this problem?

What about the IITs? A country like India is having only seven IITs. Do you not want to have an IIT in an upcoming State like Orissa? It is because Orissa has attracted now Rs. 4 lakh crore of investment; so many industries are just now coming to Orissa. But we do not have skilled manpower because we do not have a single Central university; we do not have a single IIT. Do you not want to have one of them in Orissa? A country like India requires not only seven IITs but it requires about 500 IITs. You can have more than one in several States. Even in poorer and backward States like Orissa, Bihar, Jharkhand and Chhattisgarh you should have IITs. I would like to appeal to do that. A kitty of big power projects, a fund for airport upgradation, a time-bound plan for clearing investments would have enabled faster capacity creation, driving output supply and competition to keep the prices down. It would have happened if you have given more stress on infrastructure.

As far as the infrastructure of power sector is concerned, it is the power which is required for 8 per cent or 9 per cent growth. It is the power that is essential. Power is the engine of growth. With power cuts for six hours in most of the States, a peak power shortage of over 12,000 MW, there could have been big effort for generation. Mr. Minister, did you do anything with regard to the power generation through your Budget? Every year the Government suffers transmission and distribution loss of over Rs. 30,000 crore due to theft. But, you have merely increased the allocation for this power sector generation. You have enhanced it from Rs. 650 crore to Rs. 800 crore only. Only you have added Rs. 150 crore for the power generation. It is very surprising. You may say that it is the question of public-private participation or cooperation but I do not have much faith in this that the private sector will come in a very big way for power generation.

The hon. Finance Minister said that our country needs East Asian level of taxes. East Asian level of taxes is 8 per cent. But he reduced the level of Customs Duty up to 10 per cent only, not up to the ASEAN level. He did not do it. Through the Economic Survey he said that it should be done but he did not do it. Far from leading all items towards a uniform rate, the Budget tinkered with different rates for different items. So, it has increased the scope of mis-declaration. It is going to happen. Mr. Minister, have you done it? If you would have done it for a uniform rate, for most of these things this problem of mis-declaration would not have arisen. What the Finance Minister did is that he really introduced some cut which is in an elitist way. He reduced the import duty on pet food from 30 per cent to 20 per cent.

अंकक्ष- दर्श इंकक्ष- क्षाक्रक्ष- देखक्ष- क्षाक्ष- क्षाक

्रकाशकाबक ...करकर्पक अवस्थानक प्रकारकर्पक अवस्थानक प्रकारकर्पक अवस्थान वर्ष अवस्थान वर्य अवस्थान वर्य अवस्थान वर्ष अवस्थान वर्ष अवस

१९७६ - एकक्ष्मान एकक्ष्मान एक्ष्मान्त्र एक्ष्म प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्र

So, while there was no cut in Customs Duty to bring it to the ASEAN level, there was an elitist cut in the reduction in the import duty on pet fo[r40]od.

It has now become a *… Now, the import duty on pet food has been brought down. In one of the newspapers it has been written ...(Interruptions)

SHRI J.M. AARON RASHID: Sir, he has said â€!. How can he say that? Please expunge these words. â€! (Interruptions)

, स्व:कब:कबक: . बद्ध-द्रक: : अक्ष:बहर्भक्राक्त:बहर्भक्राक्त:बहर्भक्कः व्यवस्थकः व्यवस्थकः व्यवस्थाः ।

SHRI KHARABELA SWAIN: Sir, even in one of the leading newspapers it has been mentioned that pet food is being served by Shrimati Sonia Gandhi in the Congress Working Committee meeting, and that is why, the import duty on pet food has been reduced.

Take for example the National Rural Employment Guarantee Scheme. Many Members have mentioned about it. I also know that while you extended this service from 200 districts to 330 districts, you increased the allocation only by Rs. 700 crore. Why has this happened? The Scheme is faultering. I say that this Scheme is faultering because many of the States have failed to lift even half of the allocated amount. The hon. Finance Minister knows that the money is lying and it is not being spent, and that is why, he has not increased the allocation. So, I come to the point of delivery mechanism again. I will just appeal to the hon. Finance Minister to see what has happened to the delivery mechanism here.

With regard to forex reserve, the Government is proud and the hon. Finance Minister is proud that it has gone up to 185 billion dollars. This Government could have created a strategic food grain reserve by using this reserve just like akin to US Oil Reserve. It could be used for retail and that would have brought down investment to establish a supply chain. He could have done it. He could have funded the infrastructure, which needs a sum of Rs. 14,40,000 crore. That is what is required. He could have done that.

* Not recorded

Another point which has been mentioned by one of the colleauges from the ruling alliance, Md. Salim, who is now sitting beside the hon. Minister, is about the exemptions. It was required by the hon. Finance Minister to set the house of exemptions in order, and because of these exemptions, there is a loss of tax revenue in the Tax GDP ratio to the tune of Rs. 1,75,000 crore. Secondly, I will mention that this enables the corporate houses to pay as little as 19.5 per cent tax whereas the upper limit is 33 per cent. If the upper limit is 33 per cent and the actual tax paid by them is only 19.5 per cent, that is because of these exemptions. He has merely tinkered

with that, and he has gone on for more and more exemptions while he has mentioned several times that there are too many exemptions and these exemptions should have been done away with.

Then, I also told about reforms. …(Interruptions)

SHRIP. CHIDAMBARAM: Which exemptions? ...(Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Shri Swain, please conclude now.

SHRI KHARABELA SWAIN: Sir, please allow me five more minutes.

MR. CHAIRMAN: You can take only two more minutes.

SHRI KHARABELA SWAIN: Sir, if the hon. Finance Minister is very unhappy about hearing these unpleasant words, then it is better that we will not say anything. ...(Interruptions)

SHRIP. CHIDAMBARAM: I only asked you which exemptions. ...(Interruptions)

SHRI KHARABELA SWAIN: I will mention about those things at the time of discussing the Finance Bill and not now because that was the time matters relating to taxes will be discussed.

Why is it that the Pension Regulatory Fund Bill has not been piloted in this Parliament even though it has been cleared by the Standing Committee on Finance almost two years back? The Left Parties always say that they are concerned about the poor people and they say that you increase the capital gains tax and corporate tax. But I would like to know how much of money has been given by this country to the pension holders. There will be a time after some days the Government will have no money except giving pension to the retired employees. [R41]

That is why all the parties combined together, except the Left, agreed that the Pension Fund Regulatory Bill should be passed. It is just because of the Left that this Bill has not been brought. So, most of the time, in a way, they are running this Government. Most of the time, they successfully blackmail this Government...(Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Nothing will go on record except the speech of Shri Swain.

(Interruptions)* …

SHRI KHARABELA SWAIN: Sir, with regard to health, the hon. Finance Minister said that 22 per cent increase is there. I would not go into the details about it. But I would like to know from the hon. Minister as to what happened to the six of the AllMS-like institutions, which our NDA Government declared, and which our Prime Minister laid the foundation stones. Every year, when we appeal to the Health Minister, he says 'only the boundary walls have been constructed.' For how many years they would show us only the boundary walls? Mr. Finance Minister, is it your progress? What has happened in Patna where an AllMS-like institution was to be opened? Have you done anything about this? Is it the success, is it the growth that you are talking about?

Mr. Chairman, Sir, all the time, the hon. Finance Minister is talking about the pilot projects. When our Government was in power, the then Labour Minister Shri Sahib Singh Verma initiated something about the insurance for the unorganized sector. But now, the hon. Finance Minister says that Arjun Sengupta

* Not recorded

Committee is giving them the Report and as per that Report, they would act about the pilot projects. They are just talking about pilot projects after pilot projects after pilot projects. This is the only thing, which this Government knows. They just talk about only the introduction of the pilot projects. But what is the ultimate result, we do not know.

MR. CHAIRMAN: No cross talk please.

SHRIP. CHIDAMBARAM: What did he say?

SHRI KHARABELA SWAIN: One or two months before the dissolution of the Lok Sabha, Mr. Sahib Singh Verma, the then Labour Minister declared that he was chalking out some plan...(*Interruptions*) You can say that you did not do anything....(*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN: Mr. Aaron Rashid, please take your seat.

SHRI KHARABELA SWAIN: I am asking you Mr. Minister that when you are getting the credit for the NREGP and other things, why do you not get the credit for this also? It is because you are having the proletariats like the Left! You do something about this. Merely telling about the pilot projects will not suffice.

Last but not least, Mr. Finance Minister, I would like to bring it to your notice another very important point. Now, in the name of AIDS and HIV education, some books have come. I have got some literature, which have been provided to the teachers and they would teach it to the students of Class VI. I cannot show it to you because it is out and out pornography. One of the literature says that 'the sex education course helps to curb the teenage pregnancy'. 'No sex education please, we are Indians'. Will you simply go for that? The Muslim Clergies are opposing it; the Jains are opposing it; the Hindus are opposing it; and the Christians are also opposing it. So, I would appeal to you, Mr. Finance Minister to kindly tell the HRD Minister that he should not go in for this type of sex education to the Class VI students in the name of just dealing with HIV and AIDS.

४७७ ४७७ एक एक प्राप्तकाक (क्षानकाक प्राप्तकाक (क्षानकाक) : ३५५४ क्षानकाक विद्याल प्राप्तकाक विद्यालक विद्यालक

एकःककःककः . करकन्रकः ह क एक्किम् ज्वस्य ज्वर एक्किम् ज्वस्य विश्व एक्किम् ज्वराहरूक क्वान्य क्वान्

…(व्यक्कककक्कक

प्रकार प्रकारक प्रकारक प्रकारक (अकारक कर) : प्रकारक स्वाराध्या अवस्था (अकारक स्वाराध्या अवस्था प्रकारक स्वाराध्या अवस्था स्वाराध्या अवस्था स्वाराध्या अवस्था स्वाराध्या स

्रेक्सकर्ष, अक्सकर्ष के अक्सकर्प के अक्सकर्प अस्कर्प अस्कर्प अस्कर्प के अस्कर्प अस्वयाज्य अस्वर्प अस्वर्प अस्वर्प अस्वर्प अस्वर्प अस्वर्प

...(व्यक्षक्षक्षक्षक्ष

্কেন্দ্রক্রাক্তিক । ক্রেক্টের রাজ্যাক্তিক ক্রিয়াক্তিক ক্রিয়াক্তিক ক্রিয়াক্তিক। ক্রেক্টিরাক্তিক । ক্রেক্টের ক্রেক্টের ক্রেক্টের ক্রিয়াক্তিক ক্রিয়াক্তিক।

...(অন্তব্যবন্ধন

एका-कब-कब-क करकन्दकः चन्नहर व्यक्त व्यक्त अका-क व्यवस्था स्थान

...(অন্তন্ত্ৰান্তন্ত্ৰন

MR. CHAIRMAN: Nothing will go on record except the speech of Prof. Chander Kumar.

(Interruptions)* …

SHRI M. APPADURAI (TENKASI): Our Prime Minister while replying to the debate on the Hon'ble President's address told us in this august House, that river water, the life source of human beings unite as and not divide• us and requested political parties to treat water as a national asset. All leaders had given us this advice. I also welcome and endorse it. But our Finance Minister knows the need for proper utilisation of river water in our country. Our Hon'ble Finance Minister must be knowing the bitter political battles that are being fought in many States and between States in our country.

As there is no clear unambiguous policy to share the water resources and no adequate steps are being taken by our govt. to discuss and decide this issue, people see only flames in rivers. Please look at the allocation for irrigation purposes. He knows the sad stories about the sufferings of our farmers. Yet he has allotted only Rs. 11,000 crores for the whole of India which has 30 States and 105 crores of people.

In the same budge our Finance Minister has graciously allocated Rs. 96,000 crores to strengthen our defence. As it is a sensitive issue, I am not commenting on it. While this expenditure goes on rising year by year, will there be any end to it? It is time that our nation consider it seriously. Is it not a symptom to show that one too have been pushed into the arms race.

While irrigation has received a meager amount of Rs. 11,000 crores, the Finance Minister had told us that our Banks will lend a credit amount of 2 lacs to our agriculturists. It is only a recommendation. It is not allocation. You are only indicating the place where they could borrow. You are not lending or borrowing. Our bitter experience tells us that for the large number of small land holders this is just a fairy tale.

In India, our Finance Minister has at last accepted that the price rise is due to manipulation and speculative market and not due to dire scarcity.

*The speech was laid on the Table.

Online trade in food grains had been there and this govt. failed to curb it and hence we are forced to pay through our nose.

Even after the submission of the Budget, many more items of goods and primarily cement and other essential needs for construction went up and our Finance Minister had to plead for the mercy of the cement cartel. Our Finance Minister had been telling this notion that private trade and private investment is making our country into a terrestrial paradise, but now he is also lamenting over inflation and price rise.

Hon'ble Finance Minister I request and appeal to this govt. to introduce a new system of information, on monthly basis, if not daily.

Let me tell you, as a common man, I am thrilled to read and hear about the high rise in the share market every day. And our Prime Minister and Finance Minister regularly furnish details about ocean of foreign investment in our country. You are also announcing about the rise in the volume of foreign exchange reserve. Though these matters are beyond the comprehension of the common voters, yet this brings cheer to the demoralized people.

I only request on behalf of the youths in India, and as a citizen, our govt. to publish regularly every month as to how many India'n youths are employed in the newly established industries in India. As you declare that our country is growing the rate of 9% and so on, then there must be an increase in the employment also. Please indicate it regularly.

In this budget the Finance Minister has not mentioned anything about unorganized sector, unorganized labour and any welfare measures to them. In India around 10 crores peoples are engaged in small trade. Now, many big companies in India and many MNCs are entering into this small trades and due to their arrival in small trade, the 10 crores small traders are lost their job and business. So the Finance Minister should take any steps to safeguard these small traders.

In this budget, the Finance Minister has not announced any plan or steps to be taken to curb or abolish black money in the country. As well as he has not mentioned anything about to collect income tax arrears of around Rs. 1,40,0001- crores from the rich, businessmen, corporate.

The Finance Minister also has not allocated enough fund to Sarvashikhsha Abhiyan Scheme to provide basic facilities to the school and poor children in villages. The money allocated for youth programme is very meager and it is only".45% only. I request the Finance Minister to allot more fund. I also request the Finance Minister to allot more and enough fund to the welfare of Women, Children and for the development of backward classes.

In India still around 26 crores of people are living below poverty line and 65% of them are living in villages. What are the steps being taken by the government to eradicate poverty in India and what are the, steps being taken by the government to uplift them. Moreover, around 60 lacks people, mostly women are engaging and earning their livelihood in beedi industries and the

tax/customs duty in beedi has also increased from 7% to 11 % which will affect the beedi workers directly. So the finance Minister should take some relief measures to the affected beedi workers in the country.

I also request as our country is growing and developing the ban on recruitment to government jobs and public sector must be withdrawn immediately. As these measures are missing, this budget had not pleased any sector. That is the merit of this budget. Our Finance Minister's budget had apportioned equal.

SHRI C. KUPPUSAMI (MADRAS NORTH): Sir, I rise to participate, on behalf of my Party DMK, in the General Discussion on the General Budget presented by the hon. Finance Minister, Thiru P. Chidambaran in the House on 28 th February, 2007. It has got lot of salient features which would go a long way in benefiting the common man and therefore, the UP A Government headed by Dr. Manmohan Singh under the overall guidance of UP A Chairperson, Annai Sonia Gandhi. I heartily congratulate our hon'ble Finance Minister, Thiru P. Chidambaram for this. I welcome the Budget and its progressive measures, namely focusing on Agriculture Sector like more allocation of funds for agriculture, massive programme for repair, restoration and renovation of water bodies, the agreement for Tamil Nadu has already been signed, farm credit target increased for this financial year etc.

Writing off of agriculture loans:

There are various social welfare schemes which have been brought forward for the benefit of common masses by our leader Dr. Kalaignar, Hon'ble Chief Minister of Tamil Nadu. Dr. Kalaignar has brought forward Agriculture Loan writing off scheme under which. more than Rs.7000 crores have been written off by the cooperative banks in Tamil Nadu. That is the reason why the incident of farmer's suicide is not reported from the State of Tamil Nadu because it is a boon for the farmers who lose all their crops due to natural calamities and other disasters. would urge the Centre to bring a similar scheme throughout the country and to give compensation to the State of Tamil Nadu towards the revenue loss to the State Government due to writing off of agriculture loans to farmers.

Education Sector:

The former Chief Minister of Tamil Nadu, Thiru Kamarajar started the noon meal scheme for school children which has now been extended by our beloved leader, Dr. Kalaignar up to high school with nutritious meals and serving eggs also twice

a week. We welcome the Mid-day Meal scheme extended in this Budget to 3427 educationally backward blocks. Similarly, one lakh scholarships for class 9-12 students, interest-free loans for industrial training institutes, two lakh teachers to be appointed during this year and 5 lakh new class rooms are welcoming features in the Budget. With this Finance Minister effort Kamarajar dream will come true.

Strengthening of PDS system:

One more achievement of Dr. Kalaingar is that rice is being distributed to the people in BPL at Rs.2/- per kilo through Fair Price Shops. To control price rise, I would suggest to the Government to strengthen the Public Distribution System and to issue all essential commodities through Fair Price Shops. For example, in Tamil Nadu, the system of Public Distribution is very strong and streamlined and people are getting rice at the subsidized rates. The Government should also take measures that all essential commodities are distributed through the PDS System. NABARD should take care to procure the pulses and oilseeds from the farmers with minimum support price and distribute them to the public to maintain the price level and to reduce the handling and transport costs, and eliminating the middlemen.

Social Welfare Measures:

^{*} The speech was laid on the Table.

Keeping in view that a large number of workforce are in the informal and unorganised sector, the Government of Tamil Nadu under the leadership of Dr. Kalaingar have brought forward a progressive legislation for providing social security and welfare measures to those workers. They have listed out various categories of workers like cobblers, barbers, washermen, rag pickers, fishermen, agricultural workers, handloom workers, rural artisans, etc. who can register themselves with the Labour Welfare Board, on free of cost. The registered workers are given Rs.1 lakh against accidental death; Rs, 15,000 in case of natural death and Rs.2,000 for cremation expenses to the next kin of the workers. I would request the Hon. Finance Minister to adopt these schemes and implement them at the national level, as he has announced insurance cover for rural landless in this Budget.

For education of their children, the workmen are getting from Rs. 1000 to Rs.6,000 for the purpose of education from the level of l0th class to higher education. Rs. 2,000 for the marriage expenses and Rs.6,000 as maternity benefit to female members. Those workers who are registered with the labour welfare board for a minimum period of 5 years, on the completion of 60 years, they will get Rs.300/- p.m. as pension.

National Rural Employment Guarantee Scheme:

We welcome extension of National Rural Employment Guarantee Scheme from 200 districts to 330 districts. Sir, as the House is aware, Dr. Kalaingar has brought forward a scheme, with his visionary outlook and egalitarian approach, in Tamil Nadu under which unemployed youth who are registered in the employment exchange are given cash assistance as a relief and part of the welfare measure. The landless poor farmers are also being given two acres of agricultural, developed land so that they poor people can use the land for productive purpose and earning their livelihood. I would request that this should be taken as a model scheme and implemented throughout the country and the State of Tamil Nadu should be given grants for this purpose.

Interim Relief - 6th Central Pay Commission:

Sir I would urge upon the Hon. Finance Minister to announce interim relief for the employees of the Central Government since the final report to be submitted by the 6th Central Pay Commission would take more than one year from now, and thereafter its implementation.

Therefore, I would request that pending the final report, all employees of the Central Government should be given interim relief, since the cost of living index is going up and the hike in their salary is overdue.

Income-Tax Eemption Lmit:

Income tax exemption limit has been increased by Rs.I0,000, extending to Rs. 1,10,000 in the case of salaried people and to Rs. I,45,000 to women employees. At the same time, education cess on all taxes has been hiked from 2% to 3. I would therefore, request the Hon. Finance Minister to increase the IT exemption limit to at least 1,30,000 so that some relief will be given to most of the salaried class whose salary has increased only marginally.

Ned to bring Aendment to it act to exempt PSU employees allotted accommoda tion:

Sir, 1 would like to draw the attention of the Hon. Finance Minister to the news-item appeared in the Times of India, dated 9 th March, 2007, under the caption "Budget brings Higher tax for PSU employees - New Act, More Burden". It says that the proposed amendment of the IT Act, on the valuation of perquisite in terms of housing accommodation given to PSU employees, will increase their taxable income by 20%. But if the employee pays rent, the amount will be deducted from the taxable amount. The Hon. Finance Minister in his anxiety to tax perqs and benefits being extended to employees of multi national companies, even employees of State Government undertakings and Central Government undertakings who have been allotted quarters are being taxed, as if it is taken as house rent allowance. Most of the employees who have been allotted quarters by the Government Undertakings are staying there because of compulsion, as their services may be requisitioned at any time by the employer and during emergency. Moreover, the quarters that are allotted are only unfurnished and should be considered as a welfare measure. I would therefore strongly request the Hon. Finance Minister to bring forward amendment to section 17 of the Income-tax to exempt all PSU employees, as is given to the employees of Central Government and State Government, from the levy of income-tax, the value of accommodation given by the Central or State Government undertaking.

Need to hike interest rate on EPF:

Now the Hon'ble Finance Minister has made so many announcements for Senior Citizens like tax relief of Rs.2,000, Exclusive health insurance for them, Reverse mortgage scheme and we welcome and appreciate those progressive measures. Now that the joint family system has collapsed, senior citizens have to depend on their own savings and terminal benefits like EPF. Since the interest rate on EPF being paid to workers at the time of retirement is negligible, as a welfare measure, [would request the Government to create a separate fund to provide remunerative rate of interest on EPF to workers so that they are not subjected to market fluctuations.

Inter-linking of major rivers:

As I mentioned earlier, massive programme for repair, restoration and renovation of water bodies would go a long way in judicial and optimum use of water resources. Earmarking the fund of Rs. I,800 crores to NABARD for planning of 70 lakh structures as a new programme for ground water re-charge is a welcome measure. We would suggest to the Government to take the programme of Inter-linking of major rivers in the North with the Pen insular rivers in the South seriously and expedite all the ongoing projects. I would urge upon the Centre to expedite this project phase-wise so that all the riparian States get water for irrigation and other purposes without discrimination. As the Hon'ble Prime Minister has made a remark on the floor of the House recently, national water policy may be evolved to deal with the problems of water disputes between various States.

With these words, I support the General Budget with the hope that the Hon. Finance Minister will favourably consider all the suggestions which I have made.

SHRI D. NARBULA (DARJEELING): Sir, I must first of all congratulate the Hon'ble Finance Minister with whose efforts the rate of G.D.P. has improved from 7.5 % in 2004-05 to 9% in 2005-06 and expected to 9.20/0 in 2006-07.

In this year's budget the Govt. has given importance in the education and health sector. The allocation for education has been enhanced to Rs.32,353 crores and for health and family welfare to Rs.15,219 crores.

For Sarba Siksha Abhiyan the amount provided for this year is Rs.1 0,671 crores, and for strengthening the teachers' training institutions a provision of Rs.450 crores has been made.

This budget proposes to appoint 2,00,000 more teachers and construct 5 lakhs more class rooms. The amount provided under this scheme should be properly utilized.

For mid day meal schemes Rs.7,324 crores will be provided. In addition to the children in primary classes, the Govt. proposes to cover children in upper primary classes of 3427 educationally backward blocks. Here I would like to suggest that a monitoring committee should be constituted so that the amount provided under these schemes shall be properly utilized and the poor students get benefit.

The central govt. also proposes to introduce MEANS CUM MERIT Scholarship. Under this scheme selection will be made through a National test from among the students who have passed class VIII. The selected student will be given Rs.6,000/- per year for study in Class IX, X, XI and XII. The govt. proposes that 1 lakh scholarship may be awarded every year under this scheme.

This budget has allocated Rs.611 crores to provide Post Matric scholarship to Scheduled Caste/Tribe students and provision of Rs.91 crores has been made for similar scholarship to the students belonging to social and educationally

backward classes. But considering the percentage of the population of the OBC in the Country this allocation is not adequate so I propose that the amount should be enhanced.

Under Rajiv Gandhi Drinking Water Mission 34,000 schools have been provided drinking water supply till December, 2006, and for this scheme the allocation has been enhanced from *RsA*,680 crores to Rs.5,850 crores now for the year 2007-08 and for sanitation the Hon'ble Finance Minister proposes to increase the provision from Rs.720 crores this year to Rs.954 crores next year. I would like to bring it to the knowledge of the Hon'ble Finance Minister that several primary and secondary schools in the interiors of my

^{*} The speech was laid on the Table.

constituency have been deprived of drinking water and sanitation facilities. Several coÂeducation high schools and Higher Secondary schools have been facing great sanitation problems, so I hope that the problems of these schools will be redressed during this year.

The Finance Minister in this year's Budget has kept provision to encourage the farmers. In my constituency 'Darjeeling' though Tea is the main crop, a large number of farmers depend on agriculture. Cardamom (Big) and Ginger are the main crops. Besides these a large number of people also depend on other agriculture products vegetable and floriculture. But for the last few years the cultivation of Cardamom (Big) and ginger are effected and destroyed by some disease. I appeal to the Hon'ble Finance Minister to keep some provision for providing treatment so that the Cardamom (Bib), Ginger and other crops are protected and save these poor farmers from being ruined.

Tea is one of the important crops, which fetches a good amount of foreign exchange. The tea bushes which were planted more than 100-150 years ago really need replantation and re-juvenation for its survival. I am thankful to the Hon'ble Finance Minister for giving a special package of tea fund in this year's budget.

I congratulate the Hon'ble finance minister for introducing a new scheme called AAM ADMI BIMA YOZANA which will provide security to the unorganized workers under this scheme he has proposed to extend death and disability insurance cover through Life Insurance Corporation of India to the rural land less house holds.

Under Rajiv Gandhi Vidyutkaran Y ozana this year's budget has increased the allocation from Rs.3,000 crores to Rs.3,983 crores.

The UPAGovt. has made target to electrify the entire villages in the country by 2009 but several villages of different blocks in my Constituency have not been electrified yet. So I hope that special consideration will be given to the people living in the interior villages of my constituency.

Finally I thank the Hon'ble Finance Minister for giving additional benefits to the assesses by increasing the threshold limit in different categories.

I support this General Budget placed by the Hon'ble Finance Minister before this august house on 28th February, 2007.

DR. PRASANNA KUMAR PATASANI (BHUBANESWAR): Mr. Chidambaram was good at playing around with words, but over a period he sounds bogus and boring. It took some time for the merchant of dream budget to expose himself and attract all-round denunciation. Gone are the days when Chidambaram used to advise the Indian farmer to stop cultivating wheat and vegetables for the world market is already flooded with these items instead go for cut flower and cash crops. He also promoted prawn cultivation on hugely fertile land. To unearth black money he advocated voluntary disclosure scheme. He was the darling of the neo-rich, he promoted playing in the stock market and spending excessively on consumer durables and cosmetics. But that was the Finance Minister of the post-liberalisation nineties.

The new UP AFM is the latest middle-class tormentor. To say that the budget for 2007-08 is lacklustre is to repeat the obvious. The Finance Minister's new-found love for the farm and rural sector will not yield anything. At best it will fatten the pockets of politicians, bureaucrats and middlemen. In any case, the Economic Survey uncovers the banality of UP A claims on rural spending. Sarvasiksha Abhiyan, which the NDA government launched with great vision, is today in total disarray, thanks to a scheming, absentee minister at the helm. All allocations for education will go down the drain, under Arjun Singh, the Economic Survey has conceded that much that the total literacy cannot meet the target. But the increased cess will further pinch the common man.

Under a government, that came to power in the name of aam aadmi, according to a recent survey, almost 47 per cent of a salaried person's income is taken away as tax. The indirect tax is the biggest loot. In the name of service tax the middle. class is forced to eke out a wretched living. From telephone, ball pen to school notebooks, even a cup of tea in a decent hotel is taxed. When the FM talks of additional Rs. 1,00,000 crore tax mobilisation he is talking about further

taxing the common man, for most of it will come from direct and indirect taxes. The tragedy is a small or medium businessman is taxed heavier than big MNCs or desi tycoons.

Import duties have been cut. The Finance Minister proudly claims that hundreds oftonnes of food items are being imported to control the price rise. But the Indian farmer is still under rural indebtedness. His produce does not get better remuneration even though

^{*} The speech was laid on the Table.

we pay double the amount for the imported stuff. To tackle rural indebtedness, the FM has no idea,

The Congress has spiked India's dream. The NDAleft a booming economy. We were exporting wheat and other food items, stocks were overflowing, there was no scarcity for anything. Inflation was at the lowest at 3.5 per cent, interest rates low, infrastructure industry was peaking. For two years UPA reaped the harvest of this buoyant economy left by the NDA. Things have changed and the Chidambaram budget proves the party is over. Our experts analyse this in greater detail.

Nobody had ever accused Chidambaram of being a pet lover. But the irony is that he has made pet food cheaper, while he insists it will take two to three years for tackling food scarcity. Budget is no magic wand for price control, he says. It is not a matter for low joke as Lalu Yadav has made it out saying that the BJP people are fond of going for walk with their chained

pet dogs. The serious side is most pet food items are imported and the duty cut helps MNCs make a killing in the Indian market. This is poor man's budget, UPA brand.

The budget presented in Parliament shows that Congress refuses to learn any lesson. At a time when the common man feels deeply distressed about the high cost of his daily meals, it was astounding to hear the Finance Minister exult about the "good news for cat and dog lovers", and announce that the duty on pet foods had been reduced from 30 per cent to 20 per cent.

This government's mandate was: relief for the aam aadmi and kisan. But this budget is a total betrayal of this mandate.

Common man (Aam aadmi) is crushed by inflation and has shown his anger by turning UPA out of power in Punjab and Uttaranchal. Government concedes that in the current year that is 2006-2007 inflation rate is estimated at between 5.2 to 5.4 per cent, which is higher than last year.

But if we take a look at the prices of essential commodities, prices have soared by 50 to 100 per cent. Finance Minister says that he is concerned over inflation and has taken various steps in the past and has promised various other measures in the present budget. But, there is big gap between what the government says and what it does.

It is beyond doubt that one of the major reasons for prices of essential agricultural commodities to rise is forward (future) trading system introduced in 2004. Making a beginning with only a few commodities, today forward trading is allowed in 92 commodities. Experts have given ample proofs that prices of pulses and food grains have been rising in leaps and bounds due to forward trading in these commodities. Sometime back government had withdrawn two pulses namely tur and urad from forward trading list and now in this budget Finance Minister has proposed to withdraw rice and wheat from the list of forward trading. While the system of forward trading is causing havoc for the common man, the Finance Minister instead of imposing a blanket ban on forward trading has only promised that commission will look into this whole issue. This clearly shows government's unwillingness to bid farewell to this anti-people forward trading system.

In normal market, price of a product is determined on the basis of its demand and supply in the market and generally the limit of total business is determined by the total production. It is observed that on any single day the quantum of business in different commodities is 5 to 10 times more than its annual production. Once future market starts working, money plays its role. Big dealers and companies may keep on purchasing future deliveries and in absence of supplies prices continue to rise and an artificial scarcity is created in the market. This happens in other countries of the world as well.

Recently, companies have started making purchase of agricultural produce from the farmers directly or through mandis. Supported by deep pockets, these companies are even purchasing the future deliveries of these commodities, which mean these companies have purchased the present and are purchasing the future also. Anybody who dares to sell any commodity in future without really possessing the same, these companies take the price to a much higher level using their financial muscles, and thereby such people incur heavy losses. In this way stocks with these companies keeps on rising and also their power to enhance the prices of these commodities.

Price rise, especially in essential products, has been there in this country, but future trading in commodity market have made the problem of inflation even more acute. If we have a look at the data of future commodity market its worth noting that due to the future markets the prices of essential commodities have increased significantly and the same has affected the consumer badly. The more distressing is that the benefit of higher prices does not reach the farmers.

In the last season farmers could get price of wheat in the range of Rs. 700 to Rs. 800 per quintal whereas the same wheat attracted much higher prices in the future market. As such future market benefit hoarders, agents and various companies, both domestic and foreign, engaged in agricultural marketing. Sometime back an alarming case came to light where the government had made an agreement with Australian company regarding import of wheat, which made huge purchases from Indian farmers at a much lower price than what it was paid by our government. In fact, future market in commodities on the line of share market is an alarm bell for the people of this country. This kind of system will make the life difficult for the common man. We have to put limits on speculative activities. We cannot put the majority population's life at stake for speculators who are not even 0.1 per cent of the total population.

The UPA policies of the last 32 months, despite the sycophantic media hype, have completely undermined the healthy growth process and taken the nation to a path of rising inflation Acum-increasing interest rates spiral. If the present trends continue for another two years, then India will land straight into a financial crisis of the type East Asia and Latin America experienced in the 1990s, and from which these countries are yet to recover even today. These countries were booming economies, with growth rates of 10 per cent

per year for two decades running. East Asian countries were called "Economic tigers". The World Bank and the IMF eulogised them as models to follow because they "had got their basics right". They however obviously had not got their basics right, because three years after the eulogy these nations went into deep financial blowout in 1997 from which they have yet to come out. The same can happen to India and for the same reason.

Thus we need to temper and moderate our euphoria about the recent spurt in growth rates of GDP. There is however nothing in the track record of the UPA to indicate that they have the knowledge or guts to correct for the pitfalls that lie ahead, and by bold reforms to contain India's looming financial crisis.

In fact, the UPA government has tried to brave it out by bravado and easy media hype to discount the real malaise in the economy that threatens a growth slowdown in the coming years.

The Finance Minister Mr. Chidambaram is equally clueless about the sustain ability of the high-growth rates in GDP. He boasts that in no other Finance Minister's tenure has GDP grown so fast and for so long. But the sectors that have contributed to the growth have nothing to do with the Finance Ministry. The Economic Survey put out by his Ministry itself points out that nearly 70 per cent of the GDP growth is due to the service sector, and that too in private trade, transport, communication and IT which are growing in spite of the meddling by the 'other IT' - Income Tax Department-of his Ministry. In utilities-electricity, gas

and water supply-there has been a deceleration in growth. Who is responsible for that?

The Finance Minister can contribute to growth by encouraging investment by giving tax incentives, lowering interest rates, controlling money supply, and giving tax deductions for services provided by companies to their employees. But this Finance Minister has done the exact opposite by frequent IT raids, taxing perks irrationally, raising interest rates on loans, and printing money to accelerate money supply beyond the threshold of 14 per cent per year rate, suffocating the economy with high cost of capital and inflation. This is a sure prescription for stagnation.

And who else but the Finance Minister must bear the responsibility for inflation and rising interest rates? Inflation is entirely due to permitting forward trading in foodgrains, and the rise in money supply from the illegal foreign funds coming into the economy via the Participatory Note [PN] route. These two factors are entirely due to Mr. Chidambaram. He had been forewarned by the RBI and SEBI, besides by the Tarapore Committee. Only now when inflation has hit the economy, the Finance Minister has woken up to suspending the forward trading in foodgrains. But what about the PNs?

Moreover, if Mr. Chidambaram claims credit for nine per cent growth rate in GDP, will he also accept responsibility for the poor investment in agriculture and the rising unemployment in the country? By frequenting discotheques no Finance Minister can learn about the sustainability of the growth in GDP.

This is the first time since 1947 that fresh loans have fallen short of interest payments on past loans taken, and hence represents the feared debt trap into which the economy has fallen. This one single deterioration in the nation's finance should sound alarm bells loudly. It represents the monumental failure of the Finance Minister as well.

Agriculture has averaged a miserable 2.3 per cent in growth rate in the last three years, while the nationalised mining sector has undergone a decline. In the manufacturing sector, traditional industries which need to be modernised such as textiles and small industries, have been starved of bank funds and hence performing poorly. The Economic Survey points out [p.176] that investment in agriculture has been steadily declined over the last ten years, and is at present at an all time low of a mere 1.8 per cent of GDP. It is a settled fact that unless agriculture grows at a rate not less than four per cent, a high GDP growth rate in the economy cannot be sustained without inflation.

Moreover, given the low yield per acre and per farm hand, the productivity in agriculture cannot be improved without enabling 100 million youths in the rural areas find other jobs than in agriculture. There is nothing in the Budget of Mr. Chidambaram about this important concern.

Thus, the 2007-08 Budget is anti-developmental budget, a hotch-potch of financial allocations without any strategy, stated objectives, priorities or direction.

MR. CHAIRMAN: Except the speech of Prof. Chander Kumar, nothing is going on record.

(Interruptions)* …

. इक्ष्मक्रक्ष, क्षाक्षक्ष, के क्षाक्षक्ष, क्षाक्षक

...(व्यक्षक्षक्षक्ष

MR. CHAIRMAN: Mr. Aaron Rashid, please take your seat. Why are you agitated?

६+। इस्क्रकः क्रम्प्याः क्रम्प्याः क्रम्प्याः क्रम्प्याः क्रम्प्याः क्रम्प्याः क्रम्प्याः क्रम्प्याः क्रम्प्या त्रिकः क्रम्पः क्रम्

्**रहाहरूका**। **अरक्षन्तरकः । अरक्षन्तरकः अरक्षकः अ**

...(व्यक्षक्षक्षक्षक

प्रकार कर कर । इसका कर । इसका विकार कर । इसक

* Not recorded

्रम्बस्यक्षक्रक . स्वरूप्त प्रकृत ह . इ. १२००० व . इ. १२०० व . इ. १२०० व . १

्रक्षणकाक्षक व्यक्षक व्यक

्बहर्सक एक्स प्रकाशकाशकाशकाशकास्त्र कर । कार्यक प्रकाशकाशकाशकास्त्र प्रकाशकाशकाशकास्त्र प्रकाशका प्र

जन्नकः क्ष्मिक व्यक्ति व्यक्तिक व्यक्ति व

्कास्त्रकावाक . क्राक्षन् अवस्त भक्क कारकाव्यक्त कर कर कर कर कर कारकावाक कर कर कारकावक कर कर कारकावक कर कारकाव क्राक्षण्डित्वक कर कर कर कारकावक कर कारकावक कर कारकावक कर कारकावक कर कारकावक कर कर कारकावक कर कार कारकावक कर कर कारकावक कर कारक कर कारकावक कर कारक कर कारकावक कर कारक कर कारकावक कर कारकावक कर कारकावक कर कारक कर कारकावक कर कारकाव

17.00 hrs.[s43]

. केन्द्र इ.का. केन्द्र केन्द् ्क्र*एक* क्रिक् क्रि. क्रिक्स क्रि. क्रिक्स क्रि. क्रि. क्रि. क्रि. क्रि. क्रि. व्यक्त क्रि. इस्क स्ट. क्रि. क्र कः तरुकक्ष राज्य करुकक्षकः कर्न क्रक्षकः कर्न क्रक्षकः कर्मक क्रिक्कि क्रक्षकः क्रक्षक्षकः क्ष्मक्षकः क्ष्मक क्ष् ख्यक्रहरू खाळ *क विस्ता*क्षक प्रकारका प्रका प्रकारका प्रका हक्रद्रमुख्य भक्त हक्ष इंएक अक्क-ख्य क्रिकेक्ट स्टब्स्क्र ख्राक अक्क प्रहर्दन ख्राक्र क्रिक्स क्रिकेक्ट क्रिकेक्ट क्रिकेक्ट क्रिकेट क् न्नहः कस्वान्नहार 🗀 📙 सन्नवः कानुस्वानवायन स्वयन्न । सन्नवायन सन्वयन सन्नवायन सन कः त्राक्षः कः अक्षक्षकः एव्हाक्षकःह व्रक्षाः व्यव्यादाः विष्यादाः विष्यादाः विष्यादाः विषयः व . विकार ह तर्राक्षक र्रप्ट 🛪 . क्राइ क्रप्ट हक्ष्म्कर 'क प्रकार रक्षाका प्रकार क्रप्तका क्रप्तका क्रप्तका रक्षाका रक्षाका रक्षाका हक्षाका है। प्रकार क्रप्तका है। प्रकार क्रप्तका है। प्रकार हिम्मू क्रप्तका है। प्रकार क्रप्तका है। प्रकार क्रप्तका है। प्रकार क्रप्तका है। ह+। ह. इन्हरू, खहन्नहरू हर स्टब्ट स्क खन्नहरू के के कि हता है है । इन्हरू के कि हता है । इन्हरू . इंग्लिक पुरुष्ट प्रमाणक प्रवाद का पुरुष्ट प्रमाणक प्रवाद के प्रमाणक प्रवाद के प्रमाणक प्रमाणक कर का प्रमाणक प्रम स्क्र स्वस्कात का स्वरूप्यान्य सक्तान्य स ब्रह्म हे सक्से हा हा सक्से कर सक्से कर कर सिक्स है कर कर से सिक्स है कर से सिक्स है कर कर हो सिक्स है कर से सिक्स है कर है सिक्स है कर है सिक्स ह अन्नाकानक एकणकरू एकप्टर का निक्र एकानक एक्टर हकानक क्रान्नवहायक।

श्च क्रम्य, व्यक्तक्र क्रम्यक्र क्रम्यक्र क्रम्यक्र क्रम्यक्ष क्रम्यक्र क्रम्यक्रक्र क्रम्यक्रक्र क्रम्यक्रक्र क्रम्यक्रक्र क्रम्यक्रक्र क्रम्यक्र क्रम्यक्रक्र क्रम्यक्रक्र क्रम्यक्रक्र क्रम्यक्रक्र क्रम्यक्रक्र क्रम्यक्रक्र क्रम्यक्रक्र क्रम्यक्रक्र क्रम्यक्रक्र क्रम्यक्रक

देन्सक विका विकास के क्षिण के क्षिण के क्षिण के कि क्षिण के के क्षिण के क्षण के क्षिण के क्षिण के क्षण के

स्थानिका । अरुप्त निकास । अरुप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप अरुप्त प्राप्त । अरुप्त प्राप्त प्र

्क्रिंस्क्र देश्क ख्रिक्क्ष (ख्र व्यक्क हर्ष ख्रिस्क्र) अहल (श्राक्क्ष क्रिक्क्ष व्यक्क प्रक्र ख्रिक्क्ष व्यक्क प्रक्र ख्रिक्क्ष व्यक्क प्रक्र ख्रिक्क्ष व्यक्क प्रक्र ख्रिक्क व्यक्क प्रक्र ख्रिक्क्ष व्यक्क प्रक्र ख्रिक्क व्यक्क व्यक्क्ष व्यक्क व

..क्सकर्ज ..क्र.क्यक्किक ..क्स.क्कि पक्क प्रकार अक्क .क्स.ब्यक्किप्जान्या दशक प्रकार कार्कि हरात .क्याकि दक्कि प्रकार कार्कि प्रकार कार्कि प्रकार अपने हरात हरात .क्याकि दक्किप अपने प्रकार कार्कि कार्कि प्रकार अपने हरात हरात हरात हरात है। क्का स्कार हे स्वयंत्र हे स्वयंत्र के स्वयंत्य के स्वयंत्र के स्वयंत्र के स्वयंत्र के स्वयंत्र के स्वयंत्र लाहर हम्बाहरका हम्म स्वाप्त हम्म स्वाप्त हम्म स्वाप्त हम्म स्वाप्त हम्म स्वाप्त हम्म स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वाप ।। प्राच्यक्रक क्राक्क क्राक क्राक्क क्राक्क क्राक क्र अक्कान्त्र, जस्त्र विरक्षान्त्र, एक रक्क एकक ह+, क्राक्का अन्यस्कार के अन्यस्कान क्राक्क क्रान्यस्कान क्राक्क क्रकान्कर प्रकारक क्रान्तक क्रा क्रासका स्वास्त्रका है । स्वास्त्रका है अस्वास्त्रका है अस्वास्त्रका स्वास्त्रका स्वास्त्र . इस्हर्-एकः . इस्हर्-एकः . अप्रकारहाकः . अप्रकारकानः एकः , उपकारकः । उपकार प्रकार । उपकार । उपकार प्रकार । उपकार । उपकार प्रकार । उपकार । उपकार प्रकार । उपकार प्रकार । उपकार । জ্বল্জ - The destiny of India is being shaped in the classroom. ওল্লাজ র জ্বল্জ রেজ্জের ক্রেড্রেজ ক্রেড রজ্জার ক্রেজের জ্বলের ক্রেড্রেজ ক্রেড্রেজ र्राक्षकः इक्त्रांकः त्वाक प्रवाहक्किक्य विकार स्वाहकः विकार के विकार स्वाहकः स्वाहकः विकार स्वाहकः विकार स्वाहकः विकार स्वाहकः विकार स्वाहकः स्वाहक .इह. इन्हें अहुक्त र स्वस्त्रहाक्त्रक्र स्वन्त्रबह्ह स्वयान्त्र अहुन्द्रक्ष अहुन्द्रक्ष अहुन्द्रक्ष अहुन्द्रक अहुन्द्रक अहुन्द्रक स्वयान्त्र स्वयान्त्र अहुन्द्रक स्वयान्त्र स्वयान्त्र अहुन्द्रक स्वयान्त्र स्वयान्य अबक्का-्र र सक्काकः अबक्का:कः विकट् तक्कार् एका अक्कार्यः इति-प्रकारकाक्षाक्षाक्षाः (काकाकाकः स्ना अकारकः प्रकारकः विकारकः विकारक ्रेक्ट्रिक व्यक्ष्यप्रकार क्षेत्रकार (rep45)

्करकाकर जर्गक ज्वाकर जरक ज्वाक (रक्षण)क्षक ज्वाक ज्वा

 'खरानेकर एक है+। ' 'क्रिक 'क्रिक क्षेत्रकाक क्षित्रकाक कर क्षेत्रकाक क

्रम्थानका प्रकार प्रकार प्रकार । अरु इत्तर्वाः । अरु इत्तर्वाः प्रकारका प्रकार प्रका

SHRI HITEN BARMAN (COOCH BEHAR): Hon. Chairman Sir, I rise to speak on the Budget 2007-2008 presented by Hon. Finance Minister, on behalf of my party All India Forward Bloc.

Seventy percent of the population of the country live in villages. They are farmers and there is nothing worthwhile for them in this Budget. Funds have not been allocated for irrigation, checking of soil erosion etc. more funds should be allocated for development of agriculture.

The Government has failed to check inflation. Common people are unable to purchase foodgrains. Various indirect taxes have been imposed on people. Specific steps should be taken to check inflation.

Public Distribution System is at stake due to globalization policies. But the Government is duty bound to provide foodgrains at cheap rates to the common people. Thus more funds should be allocated to strengthen the Public Distribution System.

In different parts of the country SEZs are being set up but small industries are being overlooked. As a result the colonial powers are grabbing agricultural land for industrialization and small industries are being ruined. Thus the economic sovereignty of the country is adversely affected.

There is no specific scheme for the jute industry in this Budget. Jute growers are not getting remunerative prices and the industry as a whole is on the verge of destruction. Therefore adequate funds should be allocated for jute industry and to save the jute growers, Jute Board must be set up.

Though funds have been earmarked for the Scheduled Castes and Scheduled Tribe people, but it is still inadequate. To safeguard these people of the backward communities, a strong infrastructural set up is required and for that funds are needed.

As far as Sarba Siksha Abhiyan is concerned share of the Central Government has been brought down to fifty percent from seventy-five percent.

*English translation of the speech originally laid on the the Table in Bengali

Resultantly, most of the states will be compelled to disband the scheme and the target would not be achieved.

There is a proposal to increase the insurance premium of the senior citizen from Rs.15,000 to 25,000. This would not be beneficial to the senior people. So it should be reviewed

North Bengal includes six districts of Cooch Behar, Jalpaiguri, Malda, Darjiling, North Dinajpur and South Dinajpur. They may be declared as tax-free zones so that agro-based industries can be set up there. Besides, last year only five crores were allocated far six districts of North Bengal Development Council. This years Rs.100 crores should be allocated for the council.

lurge upon Hon. Finance Minister to keep these points in mind to respond in his reply.

नेक्क नेक्क नेक्क नेक्क स्टब्स हो। इंकि किकार स्टब्स स्टब

्रम्भकानकाक करम् । अञ्चलकाक करम् । अञ्चलकाक व्यवस्थान । अञ्चलकाक कर्म क्ष्या । अञ्चलकाक करम् । अञ्चलकाक । अञ्चलकाक

श्वाह है। अवस्था खुक्क एक : .. व्यक्ष एक : .. व्यक्ष एक । 1997 जा के जा क्षा का का अवस्था अव

ंकर 'सक्त 'सक्त कर 'तक कर 'सक्कर कर 'सक् सक्कर कर 'तक 'सक्कर कर 'सक्कर कर

्कान्यक अक्रम्पन अक्रम्पन अक्रम्पन अक्रम्पन अक्रम्पन अक्र इस्त ज्यान इस्त इस्त ज्यान अक्रम्पन अक्रम्पन अक्रम्पन अक्रम्पन अक्रमान अक्र

. कः प्रकृतका कार्यस्क व्यक्त प्रकृति व्यक्त "इसक दल्का कार्यक स्वक्रका कार्यक प्रकृति व्यक्त स्वति व्यक्त स्व
ख़िक के कि के कि के कि के कि कि के कि
हिं। व्यक्तिकार इस्त्राक व्यक्तिक व्यक्ति विषय विषय विषय विषय विषय विषय विषय विष
्रक्षाक्षक कर अवस्था का अवस्था के अवस्था के अवस्था है के अवस्था के
रक्क विकार प्रकार के
स्वस्य कावका अक्रकाहराहरू, स्वस्थ त्राव्यक्रमाहरू, स्वकावक्रकाहरू स्वस्थाहरू, स्वस्थाहरू, कावकाहरू, स्वस्थाहरू, स्
.काञ्चक व्यक्त । व्यक्त व्यक्त व्यक्त व्यक्त व्यक्त । व्यक्त व्यक
. ज्याकार विकास स्थापक स्यापक स्थापक
ह+।
क्टब्स्ट्र, क्टब्स्ट्र, क्टब्स्ट्र, क्टब्स्ट्र, क्टब्स्ट्र, क्टब्स्ट्र, क्टब्स्ट्र, क्टब्स्ट्र, कट्टब्स्ट्र, कट्टब्स्ट्
. अर्थका विकास के अर्थका के
. का. कट्ट : क. एक्सक्का : का. प्राप्त : का. प्राप
. विश्वक एकक कि विश्वक
इस्क्रक कुछ कुछ कुछ कुछ कुछ कुछ कुछ कुछ कुछ कु
के के कि के में कि प्रकार के के के कि के कि के कि
.इ. इ.
्रहि हम होक के हक हो के हक हो के हक हो हो है
THE RESIDENCE OF THE PROPERTY
्रम्बर्ग्वक्षक्षर नक गुक्कस्त्रम् व्यवस्त्रम् विकारम्
स्कारणाण्यः ००० व. क्ल. स्कारणाण्यः कल. त्रकारणाण्यः कल. त्रकारणाण्यः कल. त्रकारणाण्यः अस्ति हात्रकारणाण्यः कल. ————————————————————————————————————
कस्त्रस्य स्रा, ह. इ बस्त्रः । वस्त्रस्य ह्या प्रस्त्रः । एत्यस्त्रस्य स्वत्यस्य स्वत्यस्यस्य स्
हम् इक्का अन्नर्स्कास हम्मास अस्त्राम् प्रकारम्भा इर्ग्स क्षान्तर । उस्त क
, स्वरूप , क्वान्स्य , क्वान्य , क्वान्स्य
हकानक हम। तकानक प्रकारक प्रकार
, प्रकारका सकार कार्या
. जिल्हाक के
्त्रहरू विद्वा । क्रिप्ट क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्रिक क्र
. इ.स.च्या हे से सामानी के सामानी के सामानी के से समानी के से सामानी के से सामानी के से समानी के सामानी के
वक्षत्रक अवस्थित प्राप्तक कार्यक विश्वतिक हर्ति वक्षत्र हिम्बाहरूक या विश्वतिक विष्ठतिक विश्वतिक विष्यतिक विषयतिक विष्यतिक विष्यतिक विष्यतिक विष्यतिक विष्यतिक विष्यतिक विष्यत

व्यक्तिकार का उपस्था सामित स हल्ह्र (बह इंस्क्र इंस्क्रिक क्राक्र क्रिस्क्रिक्क हम, व्यक्तिकार प्रकार क्रिक्क क्रिक्किस प्रतास क्रिक क्रिक्किक क्रिक्क क्रिक्किक क्रिक्क क्रिक्किक क्रिक्कि क्रिक्किक क्रिक्कि हरहा । उन्हर इक्सर्क उक्कर एक एक एक उक्कर्क इस्टब्क इस्टब्क उक्कर्क उक्कर उक्कर इस्टब्क्क इस्टब्क्क है। ५४ व्यक्तिक स्वाधिक . किस्त्राक्षः, केस्त्र एक्सक्स्वर र्गन्यकः वक्षः, व्यक्ति स्वर स्वर विकार प्रकार प्रक प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार क्षा बनाविकार ने बनाविकार का बनाविकार का बनाविकार के बनाविक कस्कर्धः कालः वकायका प्रवासक । कालः वकायका स्वाप्तास्य स्वापतास्य स कर्नकायक्रकायक्रका नक्काल नक्का तरम्बाल क्राक्काय्वक क्राक्कार्यक्र में क्राक्र । कार्यका । ने व्यक्ता क्राक्का व्यक्काल नक्का क्राक्का क्राक्काल नक्का व्यक्ताव्यक्त । क्राक्काल व्यक्ताव्यक व ७,५४३६ के.पक्षा के.प्रकार हा. १,५३ के.प्रकार ्रक्का जिल्ला सक वेन्नक्रक क्र वेन्नक्रक क्रिक्कि प्रतासक क्रिकेट के विकास प्रतासक क्रिकेट के विकास कर विकास कर विकास कर विकास प्रतासक क्रिकेट के विकास कर वितास कर विकास कर व कः अञ्चलकः क्राक्रान । प्रचायकः व्यवकार व नक्षावर । ज्यान प्रकारक हम ज्यान हम ज्य क्राज्यक्रिका के , प्रकार के , क्राज्यक्रिका के , प्रकार के , प्रकार कि , प्रक अवस्थाकः। एकरा प्रकार . इन्हान क्षा स्वाहित हो। उन्हान क्षा प्रकार क्षा प्रकार के स्वाहित है। उन्हान क्षा स्वाहित के स्वाहित के स्वाहित है। उन्हान स्वाहित के स्वाहित के स्वाहित है। उन्हान स्वाहित के स्वाहित के

इक्कासकारकः . उक्क प्रस्तुरस्क अवस्य प्रस्त । अक्क प्रस्तुरस्क प्रस्तुरस्क प्रस्तुरस्क हत्। अस्य प्रस्तुरस्क प्रस्तुरस्

त्याः प्रकार तरः प्रवास्थितः वर्षः प्रवास्थितः वर्षः प्रकार वर्षः प्रवास्थितः तरः प्रवास्थितः तरः प्रवास्थितः वर्षः वर्षः प्रवास्थितः वर्षः वर्षः प्रवास्थितः वर्षः प्रवास्थितः वर्षः प्रवास्थितः वर्षः वर्षः प्रवास्थितः वर्षः वर्षः प्रवास्थितः वर्षः प्रवास्थितः वर्षः वर्षः प्रवास्थितः वर्षः वर्षः प्रवास्थितः वर्षः वर्षः प्रवास्थितः वर्षः वर

्करकात्व .कः कर्ष्यक्षक्षक्षक कर , कर्ष्यक्षक विकादक वितादक विकादक वित

्रक्षह् ्ब्बक्षस्त्रः . क्रम्रकः रुकः क्षद्रकः . क्षम् न्वस्वयः अक्षकः रहकः ह+।

एकरके इन्कर के किन्द्र के प्रकार के १कक्षा (सक्षरकाक इत्ककः :क्रकः ज्वकः ज्वकः ज्वकः वस्कः हर: व्यक्कः एक एक एक दिन व्यक्तः व्यकः प्रकार विवास प्र प्रकारक प्रकार करावा का प्रकार का प्रकार का प्रकार का अवसान का अवसान का अवसान का प्रकार का प्रका ्रेन्हरुक्रह खाक. क्षेनदक्षक प्रकृषक ... क्राक खाककाए। ह .क्ष्रारू एक्सकह 400 एन्क्रमक व्यक्षक व्यक्षक हम इन्क प्रक एन्क्रस्कर प्रकृषक एनक दणकानक दणकानक विकास हम अस्त्रक्षक अस्तर् अस्त्रक एक न्क्रक्क व्करप्कर एटट ्क्रक्क एट हम ्क्रक्किक एक न्क्रक्कि व्कर्किक अस्त्रक अस्त्रक अस्त्रक उपलब्ध हम । अस्त्रक अरू काकर) करा ।+३ व्यक्तव्यक वकाव्यक वकाव्यक विकास करा काव्यक काव्यक वर्ष करा अर्थ कर करा ।+३ व्यक्तव्यक वर्ष कर कर कर कर कर कर कर कर कर । ्राक्सः, कार्यकः, कार्यक्रामकः, कार्यकारमक्राकः, कार्यकारमक्रायकः, मेराकः, मेराकः, सक्रकः मेराकः, कार्यकः, कार्यकः, सक्राव्यकः, सक्राववयकः, सक्राव्यकः, सक् क्षान्वकः, ब्रह्मकः, प्राव्यक्कः काबक्काकः व्यक्कः । स्व व्यक्तः । अर्थवकः, ब्रह्मकः, व्यवकः, ्कारकार । अवस्था , अव व्यक्तकः कालकासकः कः तरकातात्रकः कालावात्रकः कालावात्रकः कालावात्रकः कालावात्रकः कालावात्रकः कालावात्रकः कालाव ुक, क्रक्र-क प्र्या प्रका क्रबार्यक ह+। दक एकप्क एकप्क प्रमुक्त प्रकारक प्रकारक प्रकार प्रका ्क्रम् सक्कर नक्करब 🗆 हम । स्वक्रम्क स्वत्करक स्वतक, व्यत्यक स्वयन्यक स्वयन्यक हम ? । स्वक्रम्क स्वतन्यक स्वयन्यक स्वयनक स्वयन्यक ক্ষেম্বর্জন है।, পুন্তক্ষ ত্রাম্বর্জন ক্রমেন্টর त्क्षकः अक्षक्षकः व्यक्तम्य एक्स्तान्कान्कः व्यकः व्यक्तान्तरः व्यक्तरः नक्षस्य हरः।∨४९।

्का सक्का है। अवस्था अवस्था सक्का सक्का

्रेक्कान् 'क्का-क्काक कर 'क्काक्कक क्षात्र' क्षात्रक क्षात्र क्षात

एक्-कक-कक्क- करकन्दक : अक्क अक्कक जा-कक्क-काल जाक-क्रान्या।

*श्वर अञ्चलक व्यक्त विकार प्रश्ने विकार प्रश्ने विकार विका

, स्व:कक:कक्कक ... करकन्द्रक : अवस्य अवस्य , स्व: वस्य क्या क्या क्या वस्य वस्य स्वा

१६६ - इक्कान्ड्र-इ व्हर्कण्ड : इन व्हर्ण्याच व्हरान्ड इक्कान्ड अन्तर अन्तर्भर विकास व्हरान्ड

दल्क अवक्रकाकाक हत वक्रकाका एक्क्रिकाक ऋर्ग्यक. ऋर्पका ऋग्पका ह+, दल्क अवक्रकाकाक एक्क्रकाका लक्क्षिका. वक्रकाकक ह+, वक्क्षक द्वार वक्रिका क्रिकाका करूर स्वर्माख्यः प्रकार कार्यः प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार स्वारं स्वराधः स्वराधः प्रकार स्वराधः स ्रहरूकक प्रतः प्रकासक १क। दलस त्वास प्राप्तस अस्वस्य स प्रकासक्य ह+ स्वास अस्यस्य अस्यप्त अस्य प्रस्य विस्तर हम। अस्यस्य अस्यासक अस्यासक अस्यासक अस्यासक अस्यासक अस्यासक अस्यासक अस्यासक क्कान्स्यान्त्रकार क्वान्त्रकार हा कार्यान्त्रका हा कार्यान्त्रका हा होते हा कार्यान्त्रका हा कार्यान्त खार व्यक्ति , क्याकाहर ..कः हः व्यक्तहः व्यक्तहत्व्यहः व्यक्ति व्यप्पकः। व्यक्तव्यकः व्यक्तव्यक्तिकः व्याव्यक्तिकः व्यप्तव्यकः व्यक्तव्यकः छल्ट इंडा क्रेक ख्रिक ख्रेक क्रिक क्र क्यायकः उत्पान कारतः त्रकार, क्यायकः, क्याव्यक्रकारकः वकः, ।वकः नार क्रायवकः, क्यायकः, व्यवक्रकः, क्यायकः क्यायकः क्यायकः व्यवक्रायकः व्यवक्रायकः व्यवक्रायकः व्यक्षकार्वेक विकास है। इस्तर्भ के स्वर्धक स्वर्धक के स्वरंभ के स्व प्रक्रः स्वक्रः क्रान्तः स्वत्वकः प्रक्रम् प्रक्रम् प्रक्रम् प्रक्रम् स्वत्वकः स्वत्ववनः स्वत्वकः स्वत्ववनः स्वत्वनः स्व ह+? अक्कान्त्र , कक्कान्त्र क क्यान्त्रक क्यान्त्रक क क्यान्त्रक क्यान्त् प्रकारका कराने । हमाने स्थापन कार्यका , क्रम् स्वाक्र अक्र , क्रम् . व्यक्तंत्रस्य हेर्यक्राक्ष्य व्यक्तंत्रक्ष्यः स्वत्यकः स्वत्यकः स्वत्यकः स्वत्यक्ष्यः स्वत्यक्ष्यः स्वत्यस्

स्क्रक्ष अक्रम, क्रिक्क क्षण्य प्रक्रिक क्षण्य क्षण्य देखा क्षण्यक क

एकःकञःकञ्चलः . करकन्एकः । अञ्चलः अवज्ञानः अवानानकः । विव्यतानः एकः विवारिकः।

…(<u>व्यक्षक्षकक्ष</u>क

्रकास्त्रक्रक्षक्रक्षक्रक स्कृष्ट : इस्क क ब्रह्मक त्रक्षक्र सक्काक स्कृष्ट : इसक क ब्रह्मक स्कृष्ट : इसक क्रिक स्कृष्ट : इसक क्रिक स्कृष्ट : इसक क्रिक स्कृष्ट : इसक क्रिक स्वर्ध : इसक क्रिक स्कृष्ट : इसक क्रिक स्वर्ध : इसक क्रिक स

्कार अञ्चासकार एक हो।(<u>व्यक्तकार</u>) ... के दक्ष-दक्ष-त्र का अक्रासकार के दक्ष-त्रकार का दक

स्थानिक स्थानिक है के प्रकार के स्थान प्रकार के प्रकार

দর্ভারত রুক্তর্ভর । করেন্ড্রের : ওক্তর ওক্তরার ওরাকারত দুরুত্বাত্ত দর্ভ করারে কোর্ড্রান্ডের।

१वकः अध्यकान्द्रकः एकः एकः अक्षाकः व्यक्तकः व्यक्तकः व्यक्तकः व्यक्तकः व्यक्तकः व्यकः प्रकारकः व्यकः प्रकः प्रकारकः व्यकः प्रकारकः व्यकः प्रकारकः विषयः विषयः

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI S.S. PALANIMANICKAM): Are you supporting the Budget? ...(Interruptions)

१कड कक्षकाकुक व्यक्तपक : ..क १कक्षक .. कर १क इस इस व्यक्त व्यव स्व अवस्व क व्यक्तक व्यक्त स्व ... (व्यक्तकाव

. करमप्ता विराक्त कामा . क प्रशासक व्यासक व्यास एकाक प्रकार एकाक व्यास व्यासक स्थासक स्थासक है। विराक्त व्यासक व्यसक व्यासक व्यसक व्यासक व्यसक व्यासक व्या

17.43 hrs.

(Shri Varakala Radhakrishnan in the Chair)

र्शकाः विकास क्षित्र क्षित

ंकर क्षित्र क्षित्रक क

ख्यान प्रशासक विश्व अस्ति विश्व अस्ति विश्व अस्ति विश्व अस्ति प्रशासक अस्ति प्रशासक अस्ति विश्व अस्ति अस्ति विश्व अस्ति अस्ति अस्ति विश्व अस्ति अस्त अस्ति अस्ति

. क्रांक्कर हक्क विकास (क्रांक्क विकास के क्रांक्कर के क्रांकर के क

्रक्षक्षकः क्षत्रक्षकः क्षत्रकः क्षत्रकः क्षत्रकः क्षत्रकः क्षत्रकः क्षत्रकः क्षत्रकः क्षत्रकः क्षत्रकः क्षत्रक क्षत्रकः कष्ट्रकः कष्ट्रकः

[R54]

[r55]

्क्रिक्शक्ति इसकार्यक अक्षिक्शक (क्ष्रक्राक्रक का कार्यक्रिंप्यक्र एक्स एक एक्स का अक्षर्य एक्स का कार्यक्र एक्स का कार्यक्र एक्स का कार्यक्र एक्स कार्यक्र प्रकार कार्यक्र एक्स कार्यक्र प्रकार कार्यक्र कार्यक्र प्रकार कार्यक्र कार्य कार्यक्र कार कार्यक्र क

. अहक्षन्त्व . . अह , स्कादल्र अवक्षवाह्त्वकार्यक इत्वक्षकाक त्वार , व्यवहार . . अह , त्वार त्वार त्वार त्वार हत्वा त्वार त्वार हत्वा त्वार हत्वार हत्वा त्वार हत्वार हत्वा

प्रकार करा सक्ता सक्ता सक्ता सक्ता सक्ता हिस्सा हिस्सा । एक्टरास्का सक्ता सक
रक्षकान्त्राहरू नक्षकान्तर । क्षत्रका । क्षत्र क्षत्र-एक अस्कर्णक । क्षर अस्कर्णक । क्षर क्षत्रकार । क्षत्रकार
. कि. प्रकार के. विकार के. विकार के.
्रकारकाका अवका-र एकारकाका प्रकारकाका जाक जाका जाका जाका जाका कारका प्रकारका जाका प्रकार प्रकारका जाका प्रकार प्रक प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार
अन्नक्षान्त्र प्रकारक दक्षकः का अन्नक्षान्त्र का अन्नक्षान्त्र का अन्नक्षान्त्र अन्नक्षान्त्र प्रकारक स्थापन हा अन्यक्षान्त्र प्रकारक स्थापन स्यापन स्थापन स्थापन स्थापन
इक्काएक्कड ,रकाएक .क 18 क्वाकाक जाकाकक प्रकारकाक क्वाकाक क्वाकाक हा। इ.स. क्वाकाकक .क ,रक्काक क्वाकाक का , एकाकक , दक्क एकाकक , इहए काकार असकार
कक्षककक्षकट एकव्याव्यक्त . क्रक्ष, एकक रहि हम इक्क्षरक्षहर . क्र उन्हरक्कर ,क्षरक क्षक . क्षर्यक क्षक्रएक ,क्क्षक्रणक क्षरक्रक ह+, व्यक्षकक्क ह+, व्यक्षक्रक व्यक्षकरक्षक क्षरक्रक्क
हम, भुक्का के का

स्क्रिमस्क स्कृत रहे रहे रहे स्वरूप स्कृत स्कृत स्कृत स्वरूप स्यूप स्वरूप स्वरूप स्वरूप स्वरूप स्वरूप स्वरूप स्वरूप स्वरूप स्वरू

MR. CHAIRMAN: You have taken more than 15 minutes. Please conclude.

१९६६ - हः अध्यक्षकः अस् अस्त : . अस्तर्थकः १९६६, १९६६ । अस्तर्थकः १९६६ । अस्तर्यकः १९६६ ।

MR. CHAIRMAN: Please conclude now. You can place the remaining part of your speech on the Table of the House.

'ऋक्षरक्षक्ष क्राहर् क्षेत्र 'क्षरक्षक्षक्षक क्राहर् क्षरक 'क्षरक्षक्षक क्षरक 'क्षरक्षक क्षरक क

श्रिक हैं क्रिकांक कि कि कि : (वेक्स 2004) का 119, (वेक्स 2005) कि 153 वेक्सर 2006) कि 157 (वेक्सक्ष कि कि) कि विकास कि वेक्सर कि

्क्रम ज्यापक्ष हत्त्व। १ इन्हर्स ज्यापक्ष हत्त्व।

श्वकः क्रमकः स्वस्क्रकः क्रमकः अस्क्रकः (इन्पक्षर्थः अस्वस्वाद्धः अस्वत्वः अस्वस्वाद्धः अस्वस्वादः अस्वस्वय विद्यस्याद्यस्याद्यस्यादः अस्वस्वतः अस्वस्वतः अस्वस्वतः अस्वस्वतः अस्वस्वतः अस्वस्वतः अस्वस्वतः अस्वस्वतः अस्व

ह. अ जा हा अप अप के क्षित्र के क्षत्र क

MR. CHAIRMAN: We have a very long list of speakers. If the House agrees, we can extend the time by two hours, that is, up to 8 o'clock.

SEVERAL HON. MEMBERS: Yes.

MR. CHAIRMAN: The time is extended up to 8 o'clock.

Shrimati Sumitra Mahajan, you can continue now.[r57]

18.00 hrs

DR. K.S. MANOJ (ALLEPPEY): Sir, please take 'Zero Hour' first...(Interruptions)

SHRI KHARABELA SWAIN: Sir, let us have the discussion first and then 'Zero Hour'...(Interruptions)

१क कर्क स्थाप करका करका कर अपने कर प्राथम कर अपने कर अपने ्रव्यक्षास्वकः हमा 🐯 व्यवस्थान व्यवस्थान व्यवस्थान व्यवस्थान हमा व्यवस्थान हमा व्यवस्थान हमा व्यवस्थान विषयस्थान व्यवस्थान विषयस्थान विषयस्यस्थान उपस्याप्त का स्वास्त के स्वास्त हैं। साम का स्वास्त हैं। साम का का साम क प्रशासक स्थापन स क्रान्डककालकः । । न कालकः स्वयन्त्र स्वयन्त्रकालकालकः वर्षः । व्यवन्त्रकालकालकः वर्षाः वर्षाः स्वयन्त्र स् ब्रह्मका कार्यक प्रकार केरिक केरिक विकास कार्यका है केरिक के ्रव्यक्त व्यवस्थानिक एरक के एक्किसक एरक्किस व्यवस्थान व्यवस्थान के कि प्रवास के प्यास के प्रवास के प्रवस्थ के प्रवास के प्रवा . अकर एक हा अपने प्राप्त के प्रतिकार के प !कारका कर पुरुष (प्रक्राच प्रकार प्र . इ.स. १५८१ च्या १५५१ च्या १५५१

अहार कर सामान के लिए सामान ्रक एन्ड इक ए. व्यक्त पुरुष्याका का ह क्राक्क कारक प्रकारका प्रकारका व्यक्तकाहत व्यक्त । अवाका पुरु प्रकारका व्यक्त प्रकार व्यक्त व्यक्त व्यक्त व्यक्त व्यक्त व्यक्त व्यक्त व्यक्त व्यक्त ्बहर्दहास्वकारकः, उक्क रक्काकारक हक रक्काकारक हा। इरकार स्वकार स्वाचित्रकार स्वकारक हत्। स्वत्व स्वकारक स्वाचित्रकार स्वाच क्षास्त्रकः ।व्यक्तास्त्रकः कार्यकाः वर्षाः क्लाकः, कार्यक्रस्यकः, स्वकृत्र, कार्यक्रस्यकः, व्यवस्थानः, स्वकृत्यकः, व्यवस्थानः, एत्राव्यक्षम्, व्यवस्थानः, एत्राव्यक्षम्, व्यवस्थानः, एत्राव्यक्षम्, व्यवस्थानः, प्रत्यक्षम्, व्यवस्थानः, व इंग्रेस के साम जिल्ला के समस्य के साम का का का का कि साम का का का का का का का क एक, सह अपने सहस्या हुन स्वरूप के स्वरूप के स्वरूप सहस्य स्वरूप सहस्य सहस्य सहस्य स्वरूप स्वरूप सहस्य स्वरूप सहस्य स्वरूप सहस्य स्वरूप सहस्य सहस्य स्वरूप सहस्य सहस्य स्वरूप सहस्य सम्बद्ध स्वतः सहस्य सम्बद्ध सम्बद्ध सम्बद्ध सम्य सम्बद्ध सम्व । नह तरहाह करान्यस्य सस्य सस्य स्थाप्त क्षात्रस्य स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्यापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्था ्राकुल क्ष्मान्त क ब्रह्मान्त कारका कारका कारका कारका विकास कारका कारका कारका कारका है। व्यवसायक इस्कारका इसका एक्सानिकारका विकास कारका है। ह्म। यह व्यान्त्र व्यान्त्र व्यान्त्र प्राप्ति प्राप्ति प्राप्ति प्राप्ति विकास विका हल्ह इन्हरूक प्रकृष इन्हरूक दक्षक्क एक एव्हाकाककरह एक एक्टाकाककरह एक एक्टाकाककरह इक्का एक एक्टाकाककरह हर्स्स्क ह+[MSOffice58] I

ाईश्विक प्रकृत , क्राह्म अस्ति । अस्ति क्रि. अस्ति । अस्ति क्रि. अस्ति । अस्ति क्रि. अस्ति । अस्ति । अस्ति । अस्ति । अस्ति अस्ति । अस्ति अस्ति । अस्ति । अस्ति अस्ति । अस्ति अस्ति । अस्ति

्क्रक्षण्य खाक्क्रक्ष्यः प्रक्षाक्षण्यः अवस्प कार्यकर्ष्यः कार्यक्षः कार्यक

ंख्राहरके हर्र 'त्रक्र 'त्रक्रात्रका विश्वास्त्र प्रक्र 'त्रक्र 'त्रक्र 'त्रक्र 'त्रक्र 'त्रक्र 'त्रक्र 'त्रक्र 'त्रक्र 'त्रक्र 'त्रक

्रम्थान्यक्रकात्र प्रस्तः, अस्ति क्रा व्यवस्त्र क्र व्यवस्त्र क्रा व्यवस्त्

न्त्रहरू विकास स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स . क्रिक्षकार्थक क्रिक्सरक्र एक्सक्रिक है। जिस , क्रिस क्रिक्सिक्य के जिस क्रिक्सिक्क्रिक 99 क्रिक्सिक्सिक क्रिक्सिक्सिक है। उन्हें जिस पुरुष्किक जिसके जिसके क्रिक्सिक क्रिक्स क्रिक्सिक क्रिक्सिक क्रिक्सिक क अक्कास्त्रक रूपकार्यक प्रकारक ब्लाक्कह ह है। एरसका ब्लाक्क AIDS व्याहरहकारक क्वाकारक प्रकारक व्याक रूप कार्यकार है। प्रकार व्याकारकार व्याहर राज्यकारकार व्याहरकार व्य . ज्याकारकः , क्राप्ताकः , क्रा . इंकर प्रकार के प्रक्त के प्रकार के प्रकार के प्रकार के प्रकार के प्रकार के प्रकार क . इसकार सक्ता सामक सम्मान सम न्यानी स्थापनी . व्हरूर वहार प्रकार प्रकार क्षा हो के कि जिल्ला हो के कि जिल्ला के कि जिल्ला हो के कि जिल्ला हो के कि जिल्ला के कि जिल्ल ्रह्मान्द्रमार प्रकार हरू प्रकार हरू प्रकार हरू प्रकार हरू प्रकार हरू प्रकार प ्यक्क व्यक्त रक्त रहाक स्वरूप अक्कार प्रकासक स्वरूप व्यक्त व्यक्त व्यक्त व्यक्त व्यक्त स्वरूप स्वरू

्रक्षस्काक्षण्यकः , कार्कप्तः , कार्काकः , कार्काकः एककः , कार्क्षकः , विकारका , विक

्रास्ट्रक्ट प्रक्रः प्रकारक करा हुन्सा काला स्वर काला प्रकारक प्रक ्रक्का न क्रिक व्यक्त हेरह व्यक्ति क्रिका क अञ्चाक , रवकान्त्र , रह हो। , यह अञ्चाक अञ्चाक अञ्चाक व्यापक अञ्चाक अञ्चाक , रवकान्त्र , रह हो। - इक्कान्त्र अञ्चाक अञ्चाक अञ्चाक अञ्चाक अञ्चाक । ्चिक पुरवहप्तके काक ज़िका का के पुरवह के कि एक कि कि एक पुरवह है। इस का का कि एक पुरवहप्तक के एक पुरवहप्तक है। इस के एक पुरवहप्तक है। इन्दक्कन्क नक्का एकहाएकहानकह नक कहानका तकहानक कार्यक कार्यक हा। जहानक नक्का एकहान प्रकार हार प्रकार हा। जहानक प्रकार हार प्रकार प्रकार हा। जहानक प्रकार हा। जहानक प्रकार हा। जहानक प्रकार हा। क्का ब्याया स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्था ७५४४४५ स्व 🗆 🗟 हे बस्त स्वरूपक हे स्वरूपक हे बस्त कर साम स्वरूपक स्व इन्हरूक प्रक्रक ,ब्बरूरक ,ब्बरू ्रक्कन्डकन्द्रम् प्रकारकप्रकार प्रकार प्रकार का 1907 . का प्रकार प्रक्र प्रकार क्षा 🖯 इत कर विकास है। के उन्हें के उन्होंक प्रक्रक प्रक्रक के उन्होंक प्रकार के उन्हों के उन्होंक प्रकार के उन्हों के उन्होंक प्रकार के उन्हों के उन .ब्र \Box एकक्कक प्रभाव के प् . इसह 🗆 हका करू. व्यक्काव्यक्त ह , के एकट्क-एकट्क-एकट्क ,व्यक्क प्राप्त । वस्तु प्रकार हक प्रकार हो। पुरत ,व्यक्काव्यक्त प्राप्त ,व्यक ,व्यक्काव्यक्त ,व्यक ,व्यक्काव्यक्त ,व्यक ,व्यक्काव्यक्त ।

.. करकन् प्राचित्र .. क्रिक्ट एक , प्राचित्रका अकर् र हे- क्रिक्ट .. क्रिक्ट .. क्रिक्ट क्रिक्ट .. क्रिक .. क्रिक्ट .. क्रिक्ट .. क्रिक्ट .. क्रिक्ट .. क्रिक्ट .. क्रिक .. क्रिक्ट .. क्रिक्ट .. क्रिक्ट .. क्रिक्ट .. क्रिक्ट .. क्रिक .. क्रिक्ट .. क्रिक्ट .. क्रिक्ट .. क्रिक्ट .. क्रिक्ट .. क्रिक .. क्रिक्ट .. क्रिक्ट .. क्रिक्ट .. क्रिक्ट .. क्रिक्ट .. क्रिक .. क्रिक्ट .. क्रिक .. क्रिक्ट .. क्रिक्ट .. क्रिक्ट .. क्रिक .. क्रिक्ट .. क्रिक ... क्रिक .. क्रिक .. क्रिक .. क्रिक .. क्र

्करकारकारकार । करकारकार (प्रकारकार प्रकारकार कार्का कार्

्कान्य । क्रिक्न प्रकार । क्रि. व्यक्त प्रकार व्यक्त व्यक्त प्रकार व्यक्त व्यक व्यक्त व्यक्त

SHRI S.S. PALANIMANICKAM: Shrimati Maneka Gandhi may be angry with you, Madam.

MR. CHAIRMAN: Thank you for your speech. You were highlighting all the major issues of the women. It is a good speech.

SHRI S.S. PALANIMANICKAM: It is a good speech.

MR. CHAIRMAN: Now, I request Mr. Nikhil Kumar to speak.

१८८६ (१८११-१८८५) । १९८५ (१८८६८) । १९८५ १८८६८ १८८५ । १८८५ १८८५८ १८८५८ १८८५८ १८८५८ १८८५८ १८८५८ १८८५८ १८८५८ १८८५८ इसके इसक्टर-१८८५ (१८८५८ १८८५८ १८८५८ १८८५८ १८८५८ १८८५८ १८८५८ १८८५८ १८८५८ १८८५८ १८८५८ १८८५८ १८८५८ १८८५८ १८८५८ १

SHRI A. KRISHNASWAMY (SRIPERUMBUDUR): Sir, what about 'Zero Hour'?

MR. CHAIRMAN: We will consider that later but I cannot give you an assurance.

Now, Mr. Nikhil Kumar, you can speak.

SHRI KHARABELA SWAIN: Please hear me. Let the Members who are there for raising matters in 'Zero Hour' give an assurance that after their speech, they will sit here and listen to others. Otherwise, after speaking if they are running away, there will be nobody for this Budget debate. This is not acceptable. Or, there should be Budget discussion first and then we will take up the 'Zero Hour'.

MR. CHAIRMAN: At the moment, there will be no 'Zero Hour'. We will consider it only after eight o' clock.

Yes, you can speak.

18.24 hrs. (Shrimati Sumitra Mahajan in the Chair)

Madam, I rise to speak on the Budget for the year 2007-08. But before anything, let us see the economic environment of the country in which this Budget has been presented. There has been a steady increase in the manufacturing growth rate so that over the past three years, it has increased to a present rate of 11.2 per cent.[MSOffice65]

Even in the services sector, the growth rate has been steadily climbing and today it is over 11 per cent. These have, together, led to an average growth rate of 8.5 per cent. This is a signal achievement of the UPA Government because, Madam, you will realize that the situation in 2002-2003, as was pointed out by our hon. Minister of Finance was not very encouraging. If, in spite of that, the country has maintained a steady growth rate and when 31st of March comes this year to signal the end of the Tenth Plan period, we will have achieved nearly the target set for us of eight per cent in the Tenth Plan.

It is this context that we have to see the Budget. Yes, the country does need to be taken care of in some areas which have been left out and these areas which have been targeted by the hon. Minister of Finance. I find this is a good Budget. It will encourage production, it will generate employment and above all, I find it an excellently crafted strategy for bringing out the prices and counter inflation.

There are some very important steps, some classical steps to counter inflation in this Budget. I do hope that these classical steps do not prove counterproductive in due course. But, nevertheless, it is a good Budget and I compliment the hon. Minister of Finance for it.

The hon. Minister of Finance has also, as I said, paid attention to some areas which were left out and, therefore, he has crafted this all-inclusive Budget. He did mention that he had spent 15 minutes on agriculture. Madam, those 15 minutes were meaningful because they contained some good suggestions to help develop the agriculture sector and increase its growth rate.

For some time now, our agriculture sector has not been showing good results. It has barely registered a growth of 2.3 per cent against a target of four per cent. The hon. Finance Minister has decided that he will pay special attention to agriculture. An important statistic is that whereas in India nearly 70 per cent of our people are dependent on agriculture, only two point, seven per cent, of the Americans are dependent on agriculture. Still the United States produces food not only for itself but it feeds almost half the world. So, we need to see what is wrong with us that such a huge country, bigger than the United States, where 65 to 70 per cent of the people are dependent on agriculture, are unable to produce food for ourselves. It is in this context that we have to see the proposals made in the budget in respect of agriculture.

But I shall first take up education. I compliment the hon. Minister of Finance for paying special attention to the education of minorities' children. He has provisioned for increasing the share capital of the NMDSC by Rs. 63 crore and providing Rs. 108 crore for development plans in districts with minority concentration of population and above all provided nearly Rs. 210 crore in different scholarships for different courses. These are all extremely well-considered steps and he deserves to be complimented.

There are two things, however, which I would like to submit for his consideration. [MSOffice66]

There is no mention about improving the quality of education of madarasas. Madarasas are cash-strapped because of which they are unable to produce the requisite good quality education, I repeat this is entirely because of lack of finances. So, my appeal to the hon. Finance Minister is that he should set apart a bigger portion of the kitty in the next year's Budget for Madarasa education.

My other appeal is to include more madarasas in the list of those approved by the Government for funding. Not only madarasas, there are other educational institutions also which do not get financial aid from the Government. In my State of Bihar, it is called in Hindi 褒素 褒素 褒素 和 this 聚素素 褒素素 和 this 聚素素 聚素素 和 led to almost disastrous consequences in the State. I am well aware of it that this is a policy that needs to be brought to an end almost instantaneously. I remember that way back in 1989, the then Congress Government had taken a decision to end it from 1st February, 1990. But it has not been done and the effects have not at all been happy for our younger brigade, our youth. It is in this context that I say that if the madarasas are cash-strapped, then we are not doing justice to our minorities because they will not be able to get proper education and when they do leave the madarasas, the level of their education will be so unsatisfactory that they will not be able to be good citizens of this country. I repeat that they must be included in the scheme for financing of educational institutions in a larger number.

The second thing is and we note with satisfaction that nearly 1,400 ITIs have been included in the Finance Minister's list to be made into Centres of Excellence, but I regret to say that not one of them belongs to Bihar. I would appeal through the hon. Finance Minister and the Government of India to my State Government to please pay attention to this so that there is in Bihar at least one, if not many more, Centre of Excellence in the ITIs. The ITIs are extremely useful for preparing people for vocation and employment. If these are to be made into Centres of Excellence, it will be for the overall good of our younger generation.

The hon. Finance Minister has also dwelt on the power sector. I have not much to comment on that provisions he has made for this sector. But there is one significant feature that I wish to bring to the notice of this hon. House and to the Government of India. The Integrated Energy Policy document that has been brought out has worked out its requirements of power in times to come, for the next 25 years or so, assuming the targeted growth rate of eight per cent in the Eleventh Five Year Plan. This is not correct. The target of our growth rate in the Eleventh Five Year Plan period is to be ten per cent and therefore, the calculations in the Integrated Energy Policy document, should be corrected because they flow from a wrong assumption. An important factor in these calculations is that this year, which is the last year of the Tenth Plan period, we were supposed to or were expected to generate 41,000 megawatts of power. Unfortunately, there has been a big shortfall and only 23,000 odd megawatts of power may be generated by this year end.[s67]

There is extreme importance today to be given to power generation. In this context, I go back to my State. Recently, the Union Cabinet's Committee on Economic Affairs, has approved the setting up of a 1000 MW Super Thermal Power Project in Nabi Nagar in my constituency in Aurangabad. I thank the Government for it. It has been a long-standing project. We have waited for it for the past 18 years and it will now see the light of the day and so we thank the Government of India for it. However, it was originally conceived of as a 2200 MW Power Project. Its capacity has been reduced to 1000 MW. I have a two-fold request. One is, that as of now, it may be okay, and the work on construction will begin. It will be taken up by NTPC in collaboration as a Joint Venture with the Railways, and there will be four units of 250 MW each. That is fair enough. However, even now a decision could be taken that in time to come, this Project will be upgraded to 2200 MW as was originally conceived of. If it is done, it will not be doing any favour to Bihar because Bihar is, at present, extremely power deficient. As far as installed capacity goes, there is today a total of only 653 MW. Again this, there are two major Super Thermal Power Projects which are not functional – Barauni and Kati. I would appeal to thee Government of India that it should do all it can to see that both these are made to be functional.

Bihar needs power, and this Nabi Nagar Super Thermal Power Project, should be expanded to its original 2200 MW capacity. If it means setting up of another Plant there, then that should be done. This should be possible since the feasibility study has already been conducted, and it has been found feasible to put up a 1000 MW Power Project. Then, why can the second one not be set up there? I would request the Government of India to kindly pay attention to this.

I come now to the question of agriculture. There are some thoughtful steps that the hon. Finance Minister has suggested. He suggests increase in the farm credit. He has also thought of several plans for the distressed districts, he has thought of water-related schemes. Let us take up farm credit. There is a big increase of 28 per cent from last year, which is very good. But whatever the statistics may say for thew last year, the fact is that the farmers access this credit with great trouble. They are put to extreme inconvenience, Government must do whatever it can to reduce this inconvenience. The basis on which such credit is given is the Kisan Credit Card. First, the farmer finds it extremely difficult to get a Kisan Credit Card issued. Then, when he finally gets it issued, he finds it even more difficult to get credit on that. A part of this inconvenience can be done away with, if Kisan Credit Cards are made an item of general issue, just like PAN and Identity Cards. These should be issued by the Office of the District Collector, who has all the revenue records and knows exactly who is a farmer and who is not. The Kisan Credit Card should be made an item of general issue. I appeal to the Finance Minister that he may do this.

MADAM CHAIRMAN: Please conclude.

SHRI NIKHIL KUMAR: I am only half through, Madam.

MADAM CHAIRMAN: You have taken more than ten minutes on that Bihar project itself.

SHRI NIKHIL KUMAR: My friends from the other side were saying that the agriculture sector has not been given enough importance. On the basis of the *Aam Admi Bima Yojana* alone I would say that the Finance Minister should be complimented. This is an excellent concept, the Centre will meet 50 per cent of the premium amount. [68] But I hope that all the State Governments would meet their part and pay the second half, meaning the other 50 per cent of the premium. If the Finance Minister finds any obstruction, he should to it see that such States fall in line. This is because the people who are lendless will be benefited by this are really landless. They are living below the poverty line and they need this kind of assistance.

Talking of below poverty line, there have been a great deal of irregularities in the drawing up of BPL lists. This is perhaps because the mode of action adopted by the States is not quite okay. The work has been allotted to people who are not concerned with the District Administration and come under the influence of this or that consideration and as a consequence, the overall result is not satisfactory. In my own State, especially in my District, the BPL list is a bit of a scam. It needs to be rejected. It needs to be drawn up afresh. In drawing the list afresh, if it becomes necessary then we should review the parameters. I, therefore, suggest that the Government of India should pay special attention to the drawing up of parameters afresh, if only for the benefit of those who live below the poverty line.

I now come to the issue of providing social security. The Government of India has come up with some excellent programmes for alleviation of poverty, like the Indira Awas Yojna or the Sampoorna Gramin Rozgar Yojna. But, I am unhappy that the funds given to the States for these are not being utilized. I would like to submit very politely to my friend Kharabela that it is not the question of delivery there. The money has been received and it is there in the District Magistrate's Office. Though received, it has not been spent. This needs to be looked into and reviewed. About 38 per cent of the funds given to my District, and overall in Bihar 42 per cent of Rs.953 crore allocated for the Rozgar Guarantee Yojna only have been utilized. Similarly, for Indira Awas Yojna a total of only 36 per cent has been spent. For the Gramin Rozgar Yojna once again the total amount of expenditure done so far is well below 40 per cent. With this kind of implementation poverty alleviation programmes of the Government of India can not be successful.

An important point about Bihar is that every year North Bihar is ravaged by floods. An interesting statistic is that 46 per cent of Bihar today is flood prone and this means that it is 17.2 per cent of the total flood prone area of the country. I would request the Government of India, that even though this happens to be a State subject, it should take the initiative to draw up flood control programmes, in consulation with the State Government, if North Bihar is to be saved from this annual misery and annual ravages of floods. I do not agree with the argument that this will not be possible because these rivers come from Nepal. It is possible in the 21st century with modern technology available to us to construct dams which will prevent back flow into Nepal which is what Nepal objects to. With utter seriousness, I urge the Government to take this seriously and take steps about this. We must see that North Bihar is saved from the annual ravages of flood.

I now come to the definition of a senior citizen. There are Ministries in the Government of India where a senior citizen is defined as someone who is of 60 years of age or above. But the hon. Finance Minister has pegged this age at 65 years. This is unfair. There should be a uniform age for determining senior citizens and I would appeal to the Finance Minister to bring it down from 65 years to 60 years.

Since I am also the Chairman of the Standing Committee on Information Technology, there is one important point which I would like to mention on that subject. [KMR69]

The MAT has been applied to the IT industry from 2007 to 2010. It is fair enough. Let it be applied. But what happens after 2010, has to be clarified because these companies which earn for us 31.5 billion dollars in foreign exchange, have to enter into long-term agreements with their partners abroad. They must know as to what is going to happen. That is why I feel that this is an important matter.

DR. C. KRISHNAN (POLLACHI): Thank you, Madam, for giving me the opportunity speak on the General Budget presented by the hon. Finance Minister, Shri P. Chidambaram.

I am speaking on behalf of Thiru Vaiko, leader of the Tamils. Madam, in this General Budget for 2007-08 – being the beginning of the 11th Five Year Plan – the slogan being that the country would be put on a sustained growth path during the 11th Five Year Plan and at the end of the Plan, the growth rate is expected at 10 per cent. This gives us very good encouragement and hopes.

This Budget also aimed at agricultural growth by four per cent; full of employment opportunities; rural infrastructure development; and also preference for health and education to all the sections of the society.

Regarding the allocation of funds, there is an increase of 31.6 per cent in the allocation for Bharat Nirman programme; increase of 34.2 per cent for the education sector; there is an increase by 29.9 per cent for health and family welfare; Sarva Shiksha Abhiyan and Mid-Day Meal Scheme get an increase of 35 per cent.

Mid-Day Meal Scheme is to be extended not only for the primary classes but for the upper primary classes in 3,427 educationally backward blocks in the country. This needs to be extended throughout the country.

Rural drinking water and sanitation is to be taken care of. As such, the proposals in this regard are most welcomed by the public at large. But we pray that the benefits of the above schemes shall reach the poor, who are very much to be cared of, and very much in need in the remote villages and for the poor farming sector.

Giving scholarships to Scheduled Castes and Scheduled Tribes should be very much streamlined and proper care should be taken so that each and every student in the category gets the benefit to continue with their education.

Certain aspects which are also welcomed are increasing the economic viability of the agricultural sector wherein 50 lakh new farmers will be brought into the banking system next year with a target of Rs.2,25,000 crore. This is no doubt a marvelous programme that would help the farmers at large. But I would like to urge the Government that beneficiaries should be from all over the country.

Duties on most chemicals and plastics have been reduced and customs duty on polyester fibers and yarn has also been reduced from 10 per cent to 7.5 per cent. I hope this would bring down the prices of the textile goods. Farmers should be protected with easy procedures while getting farm loans from the banks. There has been no mention about the education loan. Loan of Rs.15,000 per acre for farmers is very meager. [r70] That should be increased at least to Rs.20,000 because of the increased daily wages for the coolies as well as increased fertilizer rates, etc.

Further, there is no mention about water resources management by which linking of the inter-State rivers for the betterment of drought-ridden areas can be made. Our hon. Finance Minister has been very kind enough. He has taken 15 minutes to promote agriculture in the country; I wish, on behalf of Shri Vaiko who is my leader, that he could have taken two more minutes to say something about linking of waters between different States so that the future of the country is not at stake and also the farmers are protected. As was told by the hon. Member who spoke earlier to me, Bihar is flood-ridden and there are areas which need water. Drought-ridden areas will welcome water from the flood-ridden areas. So, linking of the rivers for the welfare of farmers throughout the country has not been mentioned. That needs to be thought of. In the whole of the Five Year Plan, this project has been neglected. This needs to be taken care of and some amount should be earmarked, say about Rs. 1,000 crore and it should be given to the bank saying that if any State is interested in taking up the river linking programme, it could utilize that amount, it will go a long way in linking the rivers. This is the theme of my leader, Shri Vaiko.

I thank you for the opportunity given.

SHRI M. SHIVANNA (CHAMARAJNAGAR): Thank you Madam Chairperson. I am grateful to you for giving me an opportunity to participate in the discussion on the General Budget for the year 2007-08 presented by the Hon. Finance Minister Shri P.Chidambaram. I would have preferred to congratulate Shri P.Chidambaram, because it is his 10 th Budget as Finance Minister of this country. But I am not doing so as my expectation that he would render justice to the people all sections of the society has not been fulfilled. The Hon. Finance Minister's colleague Shri Palani Manickam is also present here in this August House.

People belonging to various sections of the society like farmers, employees, and business people would have expected a visionary Budget from the Hon. Finance Minister. But this Budget is not able to fulfill the expectations of the people at large. So it is a very disappointing Budget. Though this Budget has allocated more funds to agriculture and other sectors compare to previous Budget it is still insufficient. In our country people depending upon agriculture remain as high as 70%. But budgetary provisions are not enough to meet the demands of the agricultural sector.

I do not want to speak on national issues. I want to confine my speech to Karnataka and my parliamentary constituency only. Large number of farmers have been committing suicide in states like Karnataka, Tamil Nadu, Andhra pradesh, Kerala and Maharastra. But the Hon. Finance Minister has not even mentioned the suicide cases of farmers in his Budget. It is very unfortunate. Since the Government is not serious on this issue they have not expressed any concern about why the farmers are committing suicide? And how to address this problem? Farmers have been facing hardship everywhere in the country.

I would suggest that the Government should provide seeds to the farmers at 50% subsidy and loan at zero percent interest rate. It is

* English translation of the speech originally delivered in Kannada.

agreement today that our farmers have not been getting subsidy, quality seeds and pesticides. I would like to point out that there is no marketing strategy with the Government and every one exploits the farmer whether it is, the middleman or the retailer. But the consumer always pays more than 200% compared to the price received by the farmer. It is a matter of regret that the profit on agricultural produce is being pocketed by the middlemen instead of the farmers.

Despite heavy rains in some parts of Karnataka many parts of the state are reeling under severe drought conditions. 160 out of 175 taluks are facing this problem. Because of the drought people of Karnataka are selling their cattle at throwaway prices to slaughter houses. There is no fodder for the cattle. It is high time that the Government should look into this serious problem, come forward and set up 'Go Shala's in Karnataka and provide good MSP for their crops. Another thing I would like to say is that this Budget provides concessions on the food for cats and dogs. But it does not ensure the food security of the common man. There is no tax concession or subsidy on the food used by the common people.

The Government of India has launched several programmes like Indira Avaas Yojana, Ambedkar (Housing) Scheme, Rajiv Gandhi Rural Electrification Scheme, Rural Drinking Water Scheme, Rural Telephone, National Rural Health Mission, National Rural Employment Guarantee Act etc. But sufficient funds have not been allocated for all these Schemes. I would like to cite an example. Rs.20,000/- is provided to a beneficiary to build a house under Indira Avaas Yojana. This amount was fixed when Smt. Indira Gandhi was the Prime Minister of India. But the same amount is being provided even today. It is really funny Sir, today due to price hike, high inflation is there in the country. Cost of one bag of cement is more than Rs.300/-. One has to pay atleast Rs.200/- per day to a worker/coolie. In such a condition how is it possible to build a house with a meager sum of Rs.20,000/- Sir, this amount should therefore be increased to Rs.1 lakh. It is not only my opinion. My colleagues and other Hon. Members are also supporting this point. It is very much essential to provide 1 lakh rupees to build a permanent house. If you do not do so there would be no use providing a meagre amount of Rs.20,000/-. If a person builds a house by using this meagre amount the house will need to get repaired every now and then. It leads the common man to get into a debt trap. So, it helps neither the beneficiary nor the Government.

As far as Information Technology and Bio Technology are concerned, Karnataka stands 1 st in software industry. Bangalore is a brand name in the world. The capital of Karnataka Bangalore is also known as the I.T. hub, and it is also known as the garden city. People all over the world have been attracted by the software industries of Bangalore. It has all the potential to become world no. 1 in software industry. But it is very unfortunate that the blooming Bangalore is suffering from lack of infrastructure problem.

Lakhs of employees work in software companies in Bangalore. These software companies are paying Rs.1,250 crore income tax per month. It will become Rs.20,000 crore per year. But I am sorry to say the lack of infrastructure like quality power supply, drinking water road etc affects the IT sector adversely. Due to these infrastructure problem software companies are going away from Bangalore. For example, Apple Software Company has already left Bangalore. That is why it is the need of the day to provide necessary infrastructure to software industries in Bangalore. The Hon. Chief Minister of Karnataka Shri H.D. Kumara Swamy had approached the Hon'ble Prime Minister of India several times and also the Hon'ble Finance Minister and submitted proposals for financial assistance for this purpose. But no financial assistance has been provided so far. Therefore I urge upon the Government of India to provide at least Rs.1,000 crore for the development of infrastructure in Bangalore. Otherwise we will lose the status of Bangalore as IT city in the world.

It is very unfortunate that Karnataka is always getting step-motherly treatment. Because of political differences Karnataka is not getting adequate financial funds for its development.

White revolution has taken place in our country and the entire credit should go to the farmers who are the backbone of our economy. But what is the farmer getting for this. He is getting just 9.25 paise per litre for milk when the people are prepared to pay Rs.20/- litre for mineral water. Unfortunately the farmer is not getting the same Rs. 20/- per litre for milk. He has to look after his cattles, he has to do their service for 24 hours, he has to purchase fodder for cattles, which is Rs.15/- per kg. But he is getting Rs.9.25 paise per litre for his milk. What an irony it is Madam? A person fills water from a tap into a bottle and he is gets Rs. 20/-. It is very painful for me. Therefore my suggestion is that the remunerative price of milk should be fixed at least at Rs.20/- per litre. Otherwise living condition of the farmers cannot improve. It is meaningless if the farmers do not get remunerative price for their produce.

I would like to appreciate the mid-day meal scheme launched by the Government. I wish to suggest that along with mid-day meal a

glass of milk should be provided to all students. So that it would inspire our farmers to increase the production of milk. And it helps our children, the future of our nation, to get nutritional food.

My parliamentary constituency Chamarajnagar is an hilly region. It is a most backward district not only in Karnataka but also in the country. 36 percent of people are living below the poverty Line in my constituency. Human Development Index report says that the Chamarajnagar ranks 25th place out of 28 district in Karnataka. Our district has been carved out of the Mysore district 8 years back but still there is no development in Chamarajnagar. It is dominated by the people who belong to Scheduled Castes, and Scheduled Tribes. I was born and brought up in such a hilly and backward area. There is no college, there is no hospital, no good school, no power project, no university, no medical and engineering college. My people have been getting education in educational institutions run by an NGO, that is Vivekanand Girijan Sangh. Therefore it is my humble request to the Finance Minister to provide sufficient funds to build infrastructure and ensure family welfare measures under special provisions in my constituency. Therefore the Government should consider it under special budgetary provision and allocate adequate funds to set up educational institutions, hospitals, stadium for promoting sports and games. And initiate all the necessary steps to provide housing to the weaker sections and the Tribals.

Malai Mahadeswhera Hill in Karnatka is one of the famous piligrim centre. Every day thousands of piligrims are visiting the Malai Mahadeswhera Swamy Temple. But there is no adequate infrastructure facilities like road, drinking water, guest house, lodging and boarding for piligrims. Famous Hogenekal falls is also nearer to Malai Mahadeshwara Hills. That is why Centre should provide adequate funds and take steps to connect Hogenakal fall with M.M.Hills. That's why I request the Government to come forward to improve the infrastructure in Malai Mahadeswara Hill So that it becomes a major pilgrim centre.

Sir, in this Budget the Hon. Finance Minister has increased the income tax exemption limit by only Rs.10,000/-. There is inflation and price hike sir. I would like to request Hon. Finance Minister to increase this exemption by Rs.50,000/-. And as far as physically challenged persons are concerned the exemption of 75,000/- should be increased by 1,50,000/-. Sir. I would like to point out that developed countries like America have given cent percent exemption to physically challenged persons. But in our country we are imposing tax on the physically challenged. Therefore I urge upon the Government to give complete exemption to the physically challenged.

Sir, I would like say about Bangalore Metro Project. In this Budget only Rs.164 crore has been allotted to the Metro Rail Project. It is like giving small amount of buttermilk worth of only 10 paise, to an elephant. How is it possible to take up such a big project of Rs.50,000 crore with this meagre fund? Therefore I want to impress upon the Government to provide at least Rs.1,000 crore for this project.

Sir, there is no mention anywhere in this Budget about inter linking the rivers. There must be a National Water Policy. Sir I would like to suggest that interlinking of rivers is the only way to solve water disputes. It will help us to improve the standard of living of the people and our nation will progress and prosper. But this has not been mentioned and funds have not been allocated. We have already completed 10th five year plan and we are entering into 11th five year plan, but nowhere interlinking of rivers has been mentioned. I am of the opinion that if the Government delays interlinking of rivers it would affect the federal structure of the country. Therefore this should be included in the Budget.

Apart from this I would like to suggest to the Government to reduce the rate of interest on the loan, provided to farmers. The Government has been providing loan to buy a car at 6% interest whereas a farmer who is the back-bone of Indian economy has been paying more than 9% interest on agricultural loan. Is it not an irony Madam? I have raised this issue several times but there is no response from the Government. Therefore I urge upon the centre to take necessary steps to provide agricultural loans to farmers at 4% interest and to fix Minimum Support Price for all agro-produce including onions, tomato, wheat, rice, potato, pulses.

As far as Anganwadi workers are concerned they are working for the whole day. But they are getting only Rs.200/- Rs.300/- per month. That's why I request the Hon. Finance Minister to take steps to regularize their service and increase monetary benefits.

I would like to draw the attention of the Union Government towards the conditions of tanks and lakes in the country. Almost 90% of lakes have been accumulating silt. As a result the storage capacity of these lakes have been decreasing gradually. We are exploiting ground water. Level of ground water has also been declining. Therefore I urge upon the Government to provide adequate funds as a special budgetary allocation to desilt lakes.

Narayana Hridyalaya in Bangalore is famous. It is doing a good job giving good treatment for cancer patients. People from all over the world are getting treatment here in the hospital. Therefore I urge upon the Government to accord deemed university status to Narayan Hridyalaya.

With this I conclude my speech.

SHRI PRAHLAD JOSHI (DHARWAD NORTH): Madam, thank you very much for giving me this opportunity to speak on the discussion on general Budget, 2007-08. For at least about a month now, from the time people knew about the Budget Session of Parliament, there were expectation amongst people that the Government would deal seriously favourably with two aspects in the Budget, namely price rise and agricultural issues. The graph of the second species are the graph of the second species and agricultural issues. The entire country, the media and every segment of the society has largely been disappointed on this score. The two major problems of the economy have not been addressed in this Budget. It has been said from the very beginning that global commodity prices have exerted pressure on the domestic prices. But nothing has been said about how the Government is going to deal with that. There are certain figures given by the Government. These are not my figures. The Consumer Price Index has registered a hike and I have talked about it while making my submissions the Motion of Thanks on the President's Address and I would not refer to it here again. I will also not quote the entire chart, but would only quote certain figures as examples. [R71]

With regard to onion, the hike is 186 per cent. I want to remind you that our Party lost Delhi elections because of onion. ...(*Interruptions*) You please wait and see. MCD elections are coming. There is no need to comment now. Shri Madhusudan Mistry, you are a very senior Member. You are going to hear the results very soon. The reality will dawn on you. With regard to moong dal, the hike is 118 per cent; with regard to urad dal, the hike is 82 per cent. I am talking of January and February, 2007 figures. Shri Mistry, you are a very senior Member. I have come here for the first time. I have never been an MLA. This is the first time I contested the election and won. I do not know how to cross talk. I have directly contested the Lok Sabha elections and have come here.

With regard to wheat, the hike is 60 per cent; with regard to atta, the hike is 44 per cent. Red chilly is grown in my constituency. Red chilly is exported from my constituency. The entire northern part, which is called Bombay-Karnataka, red chilly is one of the major products. Farmers are fighting for the MSP because the market prices have come down when they went to sell it. As far as red chilly is concerned, compared to 2004, the hike is 60 per cent. These are figures given by the RBI. With regard to cement, the hike is 39 per cent. Shri Suresh Angadi, who is sitting here, is one of the big cement dealers in Karnataka. He is the supplier of cement. ...(Interruptions) With regard to steel, the hike is 29 per cent.

Madam, when this is the state of affairs, it is so unfortunate that these problems have not been addressed. Shri Palanimanickam is sitting here and taking notes of what we say. I would like to tell him that Governments will come and Governments will go and parties will come to power and they will go out of power. But you have to address the problems of the people. People are really suffering. That is why I would request you to take some serious measures about these issues.

Second issue is agriculture. The hon. Finance Minister stated that in the last year the GDP target was three per cent, which was not achieved. The achievement was only 2.3 or 2.4 per cent. This year the target is four per cent. If you look at the entire speech of the Finance Minister, there is absolutely no constructive proposal or blue print. Without that, how can you achieve four per cent results? How can you achieve that without giving proper proposals and without making agriculture economically viable?

The Tata Institute of Social Sciences conducted a study. It said:

"The farm sector does not get redeemed from all its problems just by lending the farmers more and more. This only leads to enlargement of the debt trap. One debt is affected to redeem from another debt and culminating in extreme steps by the farmers taking recourse to suicide."

This thinking has in its credence in the fact that last year Prime Minister visited Vidarbha. He talked of doubling the agricultural credit. This does not help. Hon. Prime Minister, for whom I have the highest regard as an economist and as a person, went to Vidarbha and announced a big package. But what is the position today? Before the hon. Prime Minister went to Vidarbha, the average suicide rate in Vidarbha was one suicide in every eight hours.[MSOffice72]

After the hon. Prime Minister declared the package, it has been reduced to four hours. There is a suicide case in every four hours. So I would like to tell the hon. Minister of Finance that just by announcing the credit facility, the problem cannot be solved. He has to be given remunerative price and to give the remunerative price, please avoid the middle man. To avoid the middle man, distress sale should be avoided. How can the distress sale be avoided? It is not only by giving the crop loan, but you should also give the agricultural product loan. After the agricultural product is ready, the cold storages should be arranged in the entire country. He should have sustaining capacity to keep it in the cold storage. If he does not have the sustaining capacity, naturally he will go for distress sale. So to make him sustainable, you have to give him the agricultural product loan, and after he receives the product, he should be given agricultural product loan by which he can have sustaining capacity and he can store it in the cold storage and he can sell it when he gets the remunerative price.

Along with that, I also urge the Government to bring the interest rate at four per cent. It is also mentioned in the *Economic Survey*. The Swaminathan Committee had also recommended it and the State Government like the Karnataka Government is giving the interest at four per cent from the cooperative sector. This demand was made well before the presentation of the Budget. I had made the demand during the discussion on the Motion of Thanks and now I also urge that before you could reply, please talk to the hon. Minster of Finance, talk to the hon. Prime Minister and see that interest rate is reduced.

There is one more thing which you can do and that is the crop insurance. When Shri Kharabela Swain was speaking, somebody told that it was your baby. Yes, I agree that it was our baby. I agree with him and I am not disagreeing with that. But when the crop insurance scheme was introduced by the NDA Government, it was the beginning. Now after that four or five years are over. What is the position? It has added more problems than the solutions. It is a very cumbersome process. Can the Government not make it farmer friendly? For example, I am telling you that five years average is taken. For example, in my own district, in my own State, four years there was drought. If you take the five years average, the lowest ever will be treated as average productivity and he will not get the insurance benefit. ...(Interruptions)

MADAM CHAIRMAN: Please conclude.

SHRI PRAHLAD JOSHI: What is the position? I am also telling you about the relief in my own constituency. In my constituency, 2003 kharif crop insurance the claims have not been settled. A number of 742 farmers are supposed to receive their insurance claims and from 2003 to 2007, four years have passed. Many a time personally I have gone to the regional office of Agricultural Insurance Corporation at Bangalore and a number of farmers have also visited there. So I am again bringing it to the kind attention of the hon. Minister of Finance. Do you know if you go to the regional office of the Agricultural Insurance Corporation at Bangalore, farmers will be treated like beggars? It is not this Government or that Government, it is the bureaucratic approach that has to be changed and you have to tell them that they are our masters. They have to be treated well. They have not got their claims for the last four years. If they go, they are using force and they are sending them out. So with all these things, I am requesting the hon. Minister to improve the Crop Insurance Scheme.

You can bring it to the Gram Panchayat level. Previously, it was up to the Taluka level. Subsequently, in our Government's period, it was brought up to the hubli level. Now, you can bring it to the Gram Panchayat level which will definitely yield results. So, one is remunerative price. Another is about crop insurance and the third is about power generation. If quality power is given to the farmers, they will not ask you anything more. It is not only many areas but also the entire country, with the exception of a few States, where more than six-hour electricity is never given in the villages. It is given just for six hours. In some of the States, it is given in midnight. They are giving electricity during midnight. How can the farmers utilize electricity for drawing water even though they are having bore-wells and wells? They are not able to utilize it. In such a case, power generation has to be given utmost priority. It is unfortunate that nothing is properly mentioned about power generation.

Then, transmission loss is around Rs.30,000 crore. Every year, we are losing about Rs.30,000 crore as far as transmission loss is concerned. We have kept only Rs.800 crore to control the distribution and transmission loss. It has to be looked into. As far as power

generation is concerned, for a period of 50 years, you are in power. Out of the total 60 years of Indian Independence, for 50 years, you are in power. But till date, you are not able to supply quality power.

Coming back to Education, I do not want to go into the entire details of education. But I can only put two or three questions. If you can kindly note and give me replies to them, I will be happy. You have increased the cess by three per cent. I have got one question about it. All the three per cent which you have increased as cess, will it be used for education? This is the first question.

Second, the Tapas Majumdar Committee, which was constituted by this Government, has very clearly recommended that six per cent of GDP should be spent on education. Are you going to do that? My third question is this. Though, in totality, you have allocated more to education including Sarva Shiksha Abhiyan, yet, in other way, you have reduced the allocation. Why is it so?

About foreign universities, the CNR Rao Committee, which was appointed, has cautioned the Government to be cautious before giving them entry into the Indian education system. What are you going to do with the CNR Rao Committee's recommendation? This Committee was appointed to study the investment thing as far as foreign universities are concerned.

These are my question about education. The hon. Minister Shri Palanimanickam and the hon. Finance Minister both are from Tamil Nadu. You have given Rs. 50 crore to the Coimbatore Agriculture University and the Gobind Ballabh Pant Agriculture University.

SHRI S.S. PALANIMANICKAM: It is one for the South and one for the North.

SHRI PRAHLAD JOSHI: My constituency of Dharwad is an educational hub. There, we have two Universities. One is the Dharwad Agriculture University. It is doing yeomen's service. It is doing a very good service. There one is the DCH Cotton – Dharwad Cotton Hybrid. That product has been discovered by the Dharwad University. It is giving good service. In the name of excellence, you are giving that money to the Coimbatore Agriculture University. Kindly extend it to the Dharwad University also. I would request you to do this. Further, you are planning in the Eleventh Plan, some IITs in the country. Hubli-Dharwad, the northern part of Karnataka, is a neglected area. It is the educational hub. There are two Universities, two Medical Colleges and three Engineering Colleges. They are having a lot of connectivity nowadays. The IT sector is also developing there. So, I would urge upon the hon. Minister to sanction an IIT for the Hubli-Dharwad area. I have touched upon agriculture and price rise.

I would once again urge upon the hon. Minister to give serious thought to it and do something which can help the countrymen. [K74][K75]

SHRI N.S.V. CHITTHAN (DINDIGUL): Madam Chairperson, I thank you for giving me an opportunity to participate in the discussion on the Union Budget for the year 2007-08.

At the outset, I would like to compliment and congratulate our able Finance Minister for presenting his sixth Budget from the year 1996-97. I would also like to hail our Finance Minister for his efforts to usher in growth in Indian economy and the steps he has taken to control fiscal deficit. People in urban areas who are the dominant sections expected a dream Budget from him. Shri Chidambaram has done a lot for them in the year 1996 when he presented his first Budget. This time, his target was to improve the lot of agriculture and the millions of farmers who underwent untold sufferings. The unfortunate part is that farmers do not have a such a strong lobby as the urban middle class. This explains why the media which gave him bouquets in 1996 is not happy with him this time, but I am confident that the steps he has taken in the Budget to promote agriculture and farming will go a long way in assisting millions of farmers in the country.

The UPA Government under the guidance of Madam Sonia Gandhi and under the able leadership of Dr. Manmohan Singh have taken Indian economy to great heights. We are proud to note that our foreign exchange reserves have touched an all time high of Rs. One lakh crore. Manufacturing and service industries have attained growth rate of over 11 per cent. The agriculture sector, as has been stated by hon. Members from the Opposition, has, however, suffered a setback with growth rate occurring around 2.3 per cent. Inflation is a cause for serious concern.

The Budget has addressed both these concerns. By reducing customs duty, the Finance Minister has ensured availability of cheap imports which will help augment supplies. Our Government should keep a close vigil on the price front. It has already taken several measures and they have already brought down inflation rate by one per cent.

Our Government is implementing two flagship programmes to build rural infrastructure. 'Bharat Nirman' will get nearly 32 per cent of the total Budget outlay, that is, Rs. 24,603 crore and the Rural Employment Guarantee Scheme will get initially Rs. 11,000 crore. More funds need to be deployed on both these programmes in the coming years.

The Government has also substantially increased its outlay on primary education and health sectors. For the first time, a sum of over Rs. 32,000 crore have been allocated to education, accounting for nearly 32 per cent of the total Budget outlay. This large outlay will help to wipe out illiteracy to a great extent in the country and help the students to continue their studies appreciably. Extension of Mid-

Day Meals Scheme, once introduced by our tall leader of the nation Shri Kamaraj, has now been extended to other areas also. Hon. Shri Chidambaram's Budget is focused on bringing about prosperity in rural areas which have been totally neglected in the past.

Now, I have one suggestion to make. The Government should take concrete steps to link rivers of the country to tackle the problem of recurring droughts and floods. The political parties who have a large presence in North India should give up their opposition to this project which will promote genuine national integration. The President of India and the Supreme Court have given directions to the Central Government to implement the project. The political parties in North India should give a helping hand to this national cause. In the name of river linking projects, the previous Government finalized a plan to link Ken and Betwa rivers. This project, being implemented at a cost of Rs. 30,000 crore will benefit Gwalior Region. This project will not address the problems in Southern India. Our Government should not delay the implementation of the project to link Peninsular rivers. If any State is opposing this project, the Centre should nationalize all the rivers. [R76]

Madam, I also demand that the Rural Employment Guarantee Programme should be expanded to include Madurai, Ramanathapuram, Pudukottai and Dharmapuri districts of Tamil Nadu this year itself. Our hon. Finance Minister hails from Tamil Nadu and he knows well about the backwardness of these districts. I hope, he will support my earnest demand. The above mentioned districts are perennially drought prone and the RLEGP will not have any meaning in Tamil Nadu if these districts are not included in this Scheme. I would request our hon. Finance Minister to personally intervene and ensure that these districts benefit from this Scheme.

Madam, the income tax limit for the salaried class should be raised from Rs.1.10 lakh to Rs.1.50 lakh as expected. The salaried class complies with tax regulations with utmost honesty. They should not be burdened and I would request our hon. Finance Minister to show some consideration to the salaried class. The Service Tax is, at present, collected at the rate of 12.5 per cent, which is quite high. The tax is being collected easily from the users and hence there is need for decreasing the rate and widening the net.

I demand a blanket ban on on line trading in all essential commodities especially on farm products. This speculative trading has played a major role in increasing the prices of essential commodities. If the Government is keen on moderating inflation, the on line trading on these commodities should go without further delay.

Madam, generally, the age of 60 is considered to be the age for extending any consideration to senior citizens. This age limit is taken for consideration in the Railways and Airlines and for house tax concession also...(*Interruptions*) Madam, it seems you also come in this category. But I am at a loss to understand why the Finance Ministry is still sticking to the age of 65. If the age limit is reduced to 60 the senior citizens who are in the age group of 60 to 65 will be very happy and will be benefited towards tax liberalization and exemption. So, I would appeal to the hon. Finance Minister to show his consideration to senior citizens of this age group.

Madam, our Government has been encouraging institutions of excellence. It has given a grant of Rs.50 crore each to prestigious institutions in the past. Madam, Gandhigram, in the Dindigul parliamentary constituency started during the year of Independence by Dr.(Mrs.) T.S. Soundaram, disciple of Mahatma Gandhi, is engaged in the integrated rural developmental activities. It focuses its attention in various sphere like health, education, social welfare activities like running orphanages for the destitute women and orphans. It also generates employment through khadi and village industries besides running training centres in micro enterprises. As this is a unique rural and Gandhian Institution, I would appeal to the hon. Finance Minister to extend a grant of Rs.50 crore to this Institution so that it may grow and serve further to rural community.

Madam, the nationalized banks are charging seven per cent interest against the advances made by them to agriculturists. Umpteen number of times, we have raised our voice and concern to reduce the rate of interest to four per cent as the motor car companies are advertising zero per cent interest for the buyers on the loans raised for the new vehicles. If that is so, the farming community, which is feeding the entire country, should be charged at least lower ate of interest.

Madam, there is a toll free number in Aerodromes to get information regarding the flight services and accommodations. The hon. Railway Minister has announced, in his Budget Speech, that the toll free number will be available to get the timings of trains and accommodation of seats. Similarly, I urge the hon. Finance Minister to introduce a toll free number in nationalized banks to be informed about the status of loans and other information.

Madam, the prices of building materials such as cement, steel, etc. are increased to a very high level. With the result the middle class and the lower middle class people are finding it beyond their reach either to construct a new house or even to carry out repairs in their ho<u>[r77]</u> uses. <u>[r78]</u>This is the right time for the Government to intervene and see that the prices are brought down to a reasonable level.

Madam, Madurai is the second biggest city in Tamil Nadu. It is considered to be the Athens of South and gateway for South Tamil Nadu. It has got ancient and cultural background. This temple city is attracting lakhs and lakhs of floating population and tourists every day. Madurai is having ten flights per day to Chennai. Both IT Park and tidel park are to be started soon. At present there are super specialty hospitals in private sectors to treat richer and affordable patients. I urge upon the Government of India to start a Research Institute Hospital like AllMS in Madurai.

With these words, I conclude and I support the Budget.

श्का अक्रमकारण्यक स्थान एक विकार स्थान है। जो कि से स्थान के स्थान स्य

. क्रम् इ. ह्याक्षर . क्र दर्शक्षक , क्ष्म क्षाक , क्षाक , क्ष्म क्षाक , क

. क्रम्पं क्र इस्त एक्क्य 11 (वर्क्य विकास क्रिक्य क

प्रश्निक , व्यक्ति , व्य

. सक्षान्त्रम् स्था . स्थ अस्थानस्थाम् ज्यानस्था ज्यानस्य ज्यानस्था ज्यानस्

ंक्ष्यक्षकः .क्षाइकः व्यक्तःकाः व्यकः व्यकः व्यकः व्यकः व्यक्तः व्यक्षः व्यक्तः व्यक्ति व प्रश्नकः व्यक्ति व प्रश्नकः व्यक्ति व प्रश्नकः व व्यक्ति व

दश्च दश्च क्रिक्त हम्म हम्म क्रिक्त हम्म हम्म क्रिक्त हम्म हम्म हम्म हम्म हम्म हम्म

इस्क दलक ज़्राक स्थानकार ज़्या के ज़्या के ज़्या क्या ज़्या ज़्या के ज़्य के ज़्या के ज़्या के ज़्या के ज़्य के ज़्या के ज़्य के ज़्य के ज़्य के ज़्य के ज़्या के ज़्या के ज़्य के ज़्य

* The speech was laid on the Table.

्यह ब्लाग्वर अववहत्त्वर्थक व्यवह व्यवहार्यक विश्व विश्व है। अववहर इसकार विश्व विश्व

्कान्सकर एक्शिकार के अवस्थानक एक क्षान्यक के क्षान्यक क्षान्यक के क्षान्यक क

.. कक्ष्मित के ज़ब्क ज़ब्क ज़िल्क ज़िल्क ज़िल्क ज़िल्क ज़िल्क ज़िल्क अक्षक्क अक्षक ज़िल्क ज़िल ज़िल्क ज़िल्क ज़िल्क ज़िल्क ज़िल्क ज़िल्क ज़िल्क ज़िल्क ज़िलक ज़िलक ज़िल्क ज़िल्क ज़िलक ज़ि

उपस्थारक खाक इएक जा कि जाक जाएक जाएक खाएक खाएक खाक उपस्थार जाक एक एक एक एक एक एक एक उपस्था जाक प्राप्त जाक प्र अवस्थारक है। 'अवस्थाक के अवस्थारक जाक प्रकार जाक एक जाक एक जाक एक जाक एक जाक प्रकारक जाक प्रकारक प

्रेक्स्वाकाक प्रमाद प

्क्षक्रम् अञ्चल , स्क्रात्क्रक्ष त्क्रक्ष त्क्रम् तक्षक्ष तक्ष

्रक्षान्वक्षान्वकार्यकः, वहस्वन्दान्वः अवक्षान्वकः, व्यवस्थान्वः व्यवस्थान्वः, व्यवस्थान्यः, व्यवस्थान्वः, व्यवस्थान्वः, व्यवस्थान्वः, व्यवस्थान्वः, व्यवस्थान्वः, व्यवस्थान्यः, व्यवस्थान्यः, व्यवस्थान्यः, व्यवस्थान्यः, व्यवस्थान्यः, व्यवस्थान्यः, व्यवस्थानः, व्यवस्यतः, व्यवस्थानः, व्यवस्थानः, व्यवस्यस्यः, व्यवस्यस्यः, व्यवस्य

্ষেক্ত ক্রিক্ত বিজ্ঞান্ত বিজ্ঞান বিজ

"How Open is Our Budget?

India ranks 17 among 59 countries in terms of openness of its budget documents. (ह ক্ষুক্ত ক্রুক্ত ক্রক্ত ক্রুক্ত ক্রুক্ত ক্রুক্ত ক্রুক্ত ক্রুক্ত ক্রুক্ত ক্রুক্ত ক্রক্ত ক্রুক্ত ক্রুক্ত ক্রুক্ত ক্রুক্ত ক্রুক্ত ক্রুক্ত ক্রুক্ত ক্রক্ত ক

19.47 hrs. [Shri Varkala Radhakrishnan in the Chair]

He further says:

"Thirty-three per cent countries did not audit their budgets and in the budgets of more than 50 per cent countries, including India, information on conditions associated with external debt was not detailed."

"Even after enacting the 'Right to Information', common people spend money to obtain financial information. It is worth noting that in the year 2004,(ত্ৰুক্ত ব্ৰুক্ত ব্ৰুক্

ब्काब्बक ३२ १क्कम ३२००४ ... के ब्काबट ब्काब्बक्का ... के रण्ट्रस्काट ... के एव्ह्रस्कार ... के एव्ह्रस्कार बकर प्रकारक ... विकास के प्रकार के नहस्र ... विकास के विकास के प्रकार के विकास के विकास के विकास के प्रकार के विकास के वि ब्झण्डट अङ्गङ्गङ न्झहङ्घ 🗆 ब्झन्डङ रहब् हम्। , इह्युकप्रभक्त , प्रकृत , वक्त , वक्त कर प्रकृत , ह , वक्त कर 11 प्रकृति प्रकृतकारकार प्रकृतकार प्रकृतकार प्रकृत प्रकृति प्रकृति । नक्षकाका पक्ष प्रकारका करणकाए करा व्यवस्था के कार्यकालक कार्यकालक कार्यकालक कार्यकार कार्यका कार्यका कार्यका प्रकारक कार्यकार कार्यका कार्यका कार्यका प्रकारक कार्यका कार्यका कार्यका कार्यका प्रकारक कार्यका कार्य न्बहरू 🗌 हक प्रबहरू । वह एक ब्रह्म के व्यवस्था के प्रवास के व्यवस्था के व्यवस ७५४३०० सकस्य स्थाप्त साम्बार्यक सम्भाप्त साम्बार्यकार १३ साम्बार्यकार साम्बर्यकार साम्बर्यकार साम्बर्यकार साम्बर्यकार साम्बर्यकार साम्बर्यकार सामबर्थकार सामबर्थकार सामबर्थकार सामबर्थकार सामबर्थकार सामबर्यकार सामबर्थकार सामबर्यकार सामबर्थकार सामबर्थकार सामबर्थकार सामबर्य सामबर्यकार सामबर्थकार सामबर्यकार सामबर्थकार सामबर्यकार सामबर्थकार सामबर्थकार सामबर्थकार सामबर्यकार सामबर्थकार सामबर्यकार सामबर्यकार सामबर्यकार सामबर्थकार सामबर्यकार सामबर्यकार सामबर्थकार सामबर्यकार सामबर्यकार सामबर्यकार सामबर्यकार सामबर्यकार सामबर्यकार सामबर्यकार सामबर्यकार सामबर्यका දින්දෙන්, අන යන්නෙන්, අනුගත් දෙන් යන් දැන්නෙන් සම යන්නෙන් සම දැන්නේ දැන්නෙන් දැන්නෙන්න දැන්නෙන්නෙන් ह क्षक काकर क्षक्कावक हो। भक्कावक क दह क्षका एकका विकास एकका कार एक . कि क्रिकेक्षक है । क्रिके पुरू क्रिके क्रिकेट के क्रिकेट के पुरु के क्रिकेट के पुरु के क्रिकेट के क्र अवसम्बन्धक क व्यवसारक त्वरह ज्वरक प्रवाद्य चित्रकारक व्यवसारक है । (R81) "Embroiled in myriad criticisms and divergent opinions, finalization of the Approach Paper to the Eleventh Plan is likely to be delayed further as Plan Panel Deputy Chief, Montek Singh Ahluwalia has taken a decision to give a fresh look to the entire document." ्कर्ज है।, है क्रिक अवस्थानक ल्वानक न्वानक प्रकार क्रिक एक जिए के प्रकार क्रिक एक एक एक प्रकार प्रकार प्रकार प्रकार क्रिक प्रकार क्रिक क्र पुक्क भक्क न्क्राक्करपक अकारहाक स्वक्राक्क स्वक्राक्क स्वक्राक स्वक्र पक अक्रपण नक्क विकास क्रिकेट्ट स्करकाकर कारकाक है। कारका 9.2 किरकाकरकाक स्कारक रूट है। कार कार्र कार्र कार्य का दक्षकः, तक्षकः उरक्षकः वक्षकः अक्षक्षकः हकः एवा रक्षरभवः एन्प्रएकः, व्यवस्थाः हम वक्षकः हम वक्षकः इत्यवस्थाः वक्षकः । इक्षाक्रक व्यक्तकारक है। प्रकृत प्रकृत पर व्यक्तकार है। व्यक्त प्रकृतकार प्र क कार ब्रह्म एवस क्रम्म हम स्वर्ध हम हम हम हम हम हम ब्रह्म का राज्य का राज्य का स्वर्ध का स्वर्य का स्वर्ध का स्वर्ध का स्वर्ध का स्वर्ध का स्वर्य का स्वर्ध का स्वर्य का स्वर्य ्कार प्रकारक एट ४ प्रवादाकारकार प्रकारका एक प्रकारका का 2.3 प्रवादाकारकार हरू प्रकारक प्रकारक जाव प्रकारक का प्रकारक हर वहन । उन्हारकारका प्रकारकारक प्रकारकारका प्रकारकारका प्रकारकारका प्रकारकारका प्रकारकारका प्रकारकारका प्रकारकारका प्रकारकारका प्रकारकारकारका प्रकारकारका प्रकारकारका प्रकारकारका प्रकारकारका प्रकारकारका प्रकारकारका प्रकारकारका प्रकारकारका प्रकारकारका प्रकारका प्रकारकारका प्रकारकारका प्रकारकारका प्रकारका प्रकारकारका प्रकारकारका प्रकारकारका प्रकारका प्रक्ष प्रकारका प्रकारक व्यक्तस्था विकार के व इएक 2.3 क्रिक्क्यक्रिक्क ब्लक्क एक हो। .क्र प्रकारक्क ब्लक्क्यक हरत क्राक्क एलक्क ब्लक्क हे :? अक्क्यक इएकक्क इएकक्क ब्लक्क क्षप्रकाकाकाक दर प्रकारक है। एका क्षप्रकाकाकाक है के प्रकारक है। उत्कावक प्रकार का है। उत्कावक प्रकार है। उत्कावक प्रकार है। उत्कावक है। उत्काव दक्षक नक स्कानक हो। क्रिक्काक्रकह दक्षक दक्कार विकास विकास एक है कि कि प्रकास का का कि प्रकास के कि प्रकास का कि प्रकास के कि प्रक्ष के कि प्रकास के कि कि प्रकास के कि प्रका . पुक्क क्रिक्काकाकाक काक पर जारहकाक च्याकाकाहए, जाह जाहा 🖛 जाहार एहक हु। ब्राह्म प्रकार प्रकार अक्रास्ट प्रकार अक्रास अ प्रकार कारका इस्ता का व्यवस्था प्रकार कारका प्रकारक वालका है। वालका वालका है। वालका ए:कडकर , स्करककर :क :कारक प्रकारक क्रकारक , ब्लाकक्रक :बक्क अका+र प्रकारक :सक्का व्यक्त व्यक्त अकारकारका अकारकारका विकास । अक्रबहाहरू^०रकार, क्राञ्चवहाह नक इएक एक्क्रब्रहाक, क्र*ेक्सब्वक क्राप्ट्रिकार है* । इएक्रक, ब्रह्मा क्राप्ट्रकार, क्राप्ट्रकार, ब्रह्मा क्राप्ट्रकार क्राप्ट्रकार, ब्रह्मा क्राप्ट्रकार क्राप्ट्रकार, ब्रह्मा क्राप्ट ९क्कम् एकक्कास हकः मुक्कः म्हान्या । कार्यकः स्वार्थकः स्वर्धकः स्वर्धकः स्वरूकः स्वरूकः स्वरूकः स्वरूकः स्वरू ब्राह्म स्टाहर स्टाहर सहस्य सहस्य सहस्य सहस्य सहस्य स्टाहर स्पारम सहस्य सहस्य स्टाहर स्टाहर सहस्य सम्पत्त सम्बद्ध सम्पत्त सम्बद्ध सम्पत्त सम्बद्ध सम्पत्त सम्बद्ध ्काक प्रकार का प्रकार के प्रकार प्रकार के प्र प्रक्रका इस्क एकक एकक एकक एकक एकक एकक प्रक्रक उर्ज के भ्रमानिक का के अक एक एक प्रक्रा प्रक्रक रक रक्का प्रक्रक

पंचलकाः व्यक्तकाः व्यक्तवाः व्यव्यव्यवः व्यक्तवाः व्यव्यव्यवः व्यव्यवः व्यव्यवः व्यव्यवः व्यव्यवः व्यव्यवः व्यव्यवः व्यव्यवः व्यव्यवः व्यवः व्यव्यवः व्यवः व्यव्यवः व्यवः व्यव्यवः व्यवः व्यव्यवः व्यवः व्यवः व्यव्यवः व्यवः वय

हण्डकाङः । क्षान्त्रकाः । क्षान्त्रकाः । क्षान्त्रकाः हम। इत्यक्षः हम। इत्यक्षः । इत्यक्षः । इत्यक्षः । इत्यक एक्षान्त्रकः । क्षान्त्रकः । क्षान्त्रकः । क्षान्त्रकः । इत्यकः । इत्यकः । इत्यकः । इत्यकः । इत्यकः । इत्यकः । श्वकासक अवस्त्रक ्कांकर . क काहत ह+ विकास काह्महा १ श्वकास हन्याह्न १ विकास विकासका विकास

श्वकाक सकत्त कर प्रकार है का के प्रकार के का के प्रकार के है। इसकाक सकत्व 415 का कार्य कर कर कर कर असका के सि का का कार्य है। इसकाक सकत्व 415 का कार्य है। इसकाक है। इसकाक सकत्व देश इसका है। इसकाक सकत्व देश इसका है। इसकाक सकत्व देश इसका है। इसकाक सकत्व सकत्व है। इसकाक सकत्व है। इसकाक

प्रकार क्षिक इनकाश्वर क्षित . अर्गश्वर प्रकार निकार क्षित क्षित्र निकार क्षित क्षित्र निकार क्षित क्षित्र निकार क्षित्र क्षत्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षत्र क्

MR. CHAIRMAN: Please conclude now.

SHRI LAKSHMAN SINGH: Sir, I have some more points to make. I cannot finish in one minute. I will sit down and I will speak tomorrow.

MR. CHAIRMAN: Please try to conclude today.

१७४६ - १४१ - इंग्इ. इन्एकः : न्वस्थान्यः हर्न्दान्यः इन्एकान्यः इन्ट प्रकान्यः इन्ट प्रकान्यः इन - 16 विद्यान्यः इन्ट २००६ विद विद्यान्यः अवस्थान्यः इन् -

"With almost half of the fiscal year ending in a fortnight, the National Highways Authority of India (NHAI) has not been able to award a single kilometer of highway project so far under the public-private-partnership (PPP) model."

"As per the CCEA decision, the NHAI will have to route the BOT projects being implemented under the PPP model to the Public-Private-Partnership Appraisal Committee."

This Committee is headed by the Secretary, Department of Economic Affairs in the Ministry of finance and its Members are Secretary, Department of Expenditure, Secretary, Planning Commission, Secretary, Department of Legal Affairs and the Secretary, Ministry of Road Transport and Highways. [N83]

्स्झ्।्रङ्गब्टह्रङ्	द् ष ण हड्क्ष्ट्रहरू.	. इङ दब इङ्क्ष्यूरङ्ख	, खुःखुद्ध। , युद्धहुद्ध	- व्यव्यक्ष्य	ক্রিপ্তর	अ द्यद्य ाप्त्रः स्ट्यद्याप्त्रः द	, क्लाक्ट् र क्लाइट्रक	्रस्कृष्ट्राज्यान्यः.	व्यक्तकाराहरू	द् या क्ष,क्ष हक्षण्ड	शब्द्यक्रक्रम् स
থম্বন্ধ বন্ধান্ধ	ह न्छह्छ्च हर	इह रहक्ष ह+I									

MR. CHAIRMAN: You can continue tomorrow.

SHRI LAKSHMAN SINGH: Thank you. I will continue tomorrow.

MR. CHAIRMAN: Now I will take 'Zero Hour' mentions. Please be brief so that a number of Members can get chance to speak. There are so many Members who had left the House and they have come back for making mentions in the 'Zero Hour'. Though they were not present when the discussion was going on, they were required to come back for 'Zero Hour'. Very good.